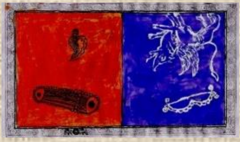
ISSN 2229-547X VIDEHA

# विदेह ३६८ म अंक १५ अप्रैल २०२३ (वर्ष १६ मास १८४ अंक ३६८)

[विदेह (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) www.videha.co.in ]



## विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्



## विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

# सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।






Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve

Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

**Font/ Keyboard Source**: https://fonts.google.com/ , https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts , https://keyman.com/

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.



Videha e-Journal: Issue No. 368 at www.videha.co.in

समानान्तर परम्पराक विद्यापति- *चित्र विदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलाल मण्डल द्वारा*

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनूमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

**अक्खर खम्भा (आखर खाम्ह)**

तिहुअन खेत्तहि काञि तसु कित्तिवल्लि पसरेइ। अक्खर खम्भारम्भ जउ मञ्चो बन्धि न देइ॥ *(कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा।)*

मात्र आखर रूपी खाम्ह निर्माण कए उत्थापन (*गद्य-पद्य रूपी*) मंच जँ नै बान्हल जाय तँ त्रिभुवनरूपी क्षेत्रम ठाकुर कीर्तिरूपी लत्ती कोना पसरत।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. -Robert Louis Stevenson

...

Videha: Maithili Literature Movement

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः

: :

## अनुक्रम

ऐ अंकमे अछि:-

२.२.सानी नीलु झा- आधुनिकताक परिभाषा आ आधुनिक चित्रकला

२.३.संजय दास- कलाकृति आ अश्लीलता

२.४.गौरीनाथ- कुमार पवनक प्रसिद्ध कथा '[illegible]' क संग प्रकाशित संजय दासक कलाकृतिक सम्बन्धमे

२.५.मैथिलीक "उसन कहा था" मान कुमार पवनक दीर्घकथा "[illegible]" (चित्रांकन संजय दास)

२.६.मुन्नी कामत- समकालीन चित्रकार संजय दास

२.७.मुकेश दत्त- अपन शैली आ तकनीकक बलेँ आधुनिक कला मे अलग पहचान बना रहलाह संजय दास

२.८.गोविन्द चन्द्र दास- कामसूत्र क बिना कोनो चित्र शैली नहि छैक- लोककला क साक्षात विश्वविद्यालय गुमनाम नायक कृष्ण कुमार कश्यप (आ शशिबाला)*

२.९.रवीन्द्र कुमार दास- परिवारक सहयोग सबसँ जरूरी

२.१०.संजय दासक किछु बौद्ध कलाकृति

२.११.गजेन्द्र ठाकुर- कृष्ण कुमार कश्यप आ शशिबाला- एकटा परिचय

२.१२.जितेन्द्र झा, जनकपुर- मिथिला चित्रकला- नेपाल प्रसंग

२.१३.गजेन्द्र ठाकुर- श्वेता झा चौधरी- एकटा परिचय

## ३ अंकक अन्यान्य रचना

## ३.गद्य खण्ड

३.१.डॉ. उदयनाथ झा 'अशोक'-गामक नामकरणः एक परिशीलन

३.२.संतोष कुमार राय 'बटोही'-मंगनीना (एगारहम खेप)

३.३.संतोष कुमार राय 'बटोही'-समीक्षा- जिनगी जान बनि गेल

३.४.नवीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- २७ म खेप

३.ग.कुमान मनाज कथ्यप-ठा दधीचि

३.६.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खप-११)

३.७.प्रधान सा- कनमन८

३.८.आचार्य नामानन्द मण्डल-मिथिला क लाल: उपन्यास सम्राट रुदीश्वननाथ नग्र् आ यात्रा

३.९.ठाॅ. किशन कारीगन-लांगी ठेंस(हास्य कटाउ)

३.१०.लाल दन कामन-मिथिलाम मां(गेन खनाश छऊ! (आगाँ)/ नर्शिग नस/ चारु यारवना'क अर्थ जानि (गलहुँ (लघूकथा)/ लघूकथा- यनवाक निर्दिार्थ/ चलला मूनानी छकवय (लघू कथा)/ लघू कथा- दुलहीन/ मैथिली विहेन कथा- -सायनयिद्या/ दाग जागल- विहेन कथा/ सूनैना वटी - मैथिली सामाजिक उपन्यास/ लिख यटायेट मानय दयरु (लघूकथा)/ लघूकथा- ऊ्री गु७ खनै कान छदोन/ अम्बादि यानि उ०ल-लघूकथा (मैथिली)/ नाज सनुत लिवी (लघूकथा)/ लघूकथा -नानी कँ नँय छै नाजा

**४.पद्य खण्ड**

४.१.राज किशोर मिश्र-अंगस्-राम

४.२.निर्मला कर्ण- ह्रद शीतल

४.३.किशन कारीगर- आ रे सुग्गा आ आ (बाल कविता)

४.४.कल्पना झा- व्यथा

४.५.डा सुमंगला झा- मैथिल



ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्ति वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म

: : : : :

ब्रह्मदेवसँ प्रार्थना जे द्युलोकम्, अन्तरिक्षम्, पृथ्वीयम्, जलम्, औषधम्, वनस्पतिम्, विश्वम्, सभ देवतागणम् आ ब्रह्मम् शान्ति करथि।

ॐ-ब्रह्मदेव, द्यौ-सूर्य-नक्षत्रगण, अन्तरिक्ष- पृथ्वी आ द्युलोकक बीच, आप:-जल, विश्वेदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

, , , , , , , ।

-, --, - , :-, - , - ।

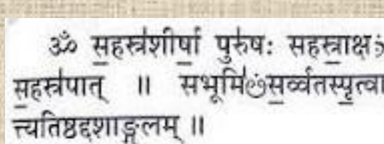
ॐ, सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्।

, ↓↑↓ ↑। ↓↓↓ ↓↑।

स भूमिं सर्वं विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम्॥

↑ ↓↑ ↓। ↑ ↓॥

हजार माथ, हजार आँखि, हजार पएर संग विश्वकेँ आच्छादित कएने अछि, दस आंगुरक गहीँक बाहर सेहो अछि ओ।


ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ सभूमिꣳसर्व्वतस्पृत्वा त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥

यद्याग् शुद्ध अजायत॥

↓◌↑ ↓ ↑॥

यञनसँ शुद्धक उयाफि स्ल॥

यद्यां सुमिर्दिशः (प्रात्रा□त्।

↓ ↓↓ ↑↑।

मृदा यञनसँ सुमियाक उयाफि।

❀ (White Florette- innocence and purity)

☸ (Wheel of Dharma)

卐(Swastik)

□ (सिद्धिनम्ह, सिद्धम , Devanagari Anji)

(Gwang ग्वंग- two small circles connected by u and a dot placed over it, used in reference of Vedic texts)

(Tirhuta Anji, Ankush of Ganeshji, placed at the beginning of something)



## १.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

## १.२.अंक ३६७ पर टिप्पणी

## १.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

१

## दिल्ली साहित्य अकादमीक प्रस्तावित मैथिली विभाग परामर्शदात्री समिति (२०२३-२०२८)

१० मे ६ ब्राह्मण + १ नन-ब्राह्मणवादी आ समानान्तर धाराक एकोटा गैर-सवर्ण लेखक नहि छथि, जे गत १२ वर्ष सँ सीमित आर्थिक संसाधनक अछैत मैथिली लेल जान-प्राण अरायल छथि। नचिकेता जीक ई परामर्शदात्री समिति घोषित अछि, आ ई अगता-पिछता दुनूक घोषित लेल काज करत, साहित्यमे जे घोषित छथि से कनिआयल रहता, राजदेव मण्डल जीक रचना डरी बाजैत छथि से बाजैत रहता। समानान्तर धाराक साहित्यकार लोकनि लेल ई खतराक अलार्म अछि आ से हुनका दूना काज करय पड़तनि।
लिस्टः
उषाकिरण खान, सुभाषचन्द्र यादव, प्रमोद कुमार झा, देवशंकर नवीन, तारानन्द वियोगी, विद्यानन्द झा, रमण कुमार सिंह, अजय झा, वीणा ठाकुर, नचिकेता।

२

## कला आस्वादन आ कला समीक्षा- सैद्धांतिक पक्ष

१

## दिल्ली साहित्य अकादमीक प्रख्यात मैथिली विभाग परामर्शदात्री समिति (२०२३-२०२८)

१० मे ६ ब्राह्मण + १ नन-ब्राह्मणवादी आ समानान्तर धाराक एक्कोटा गएर-सवर्ण लेखक नै छथि, ई गत १७ वर्खसँ सीमित आर्थिक संसाधनक अछैत मैथिली लेल ज्ञान-प्राप्त अनायन छथि। नचिकेता जीक ई परामर्शदात्री समिति एलिट अछि, आ ई अगता-पिछता दुनूक एलिट लेल काज करत, साहित्यमे ई एलिट छथि से कतिआयल रहता, राजदेव मण्डल जीक रचना ज्ञानी बाहर छथि से बाहर रहता। समानान्तर धाराक साहित्यकार लोकनि लेल ई खतराक अलार्म अछि आ से हुनका दुन्ना गतिसँ काज करय पड़तनि।

लिस्टः

उषाकिरण खान, सुरेशचन्द्र यादव, प्रमोद कुमार झा, देवशंकर नवीन, तारानन्द वियोगी, विद्यानन्द झा, रमण कुमार सिंह, अजय झा, वीणा ठाकुर, नचिकेता।

२

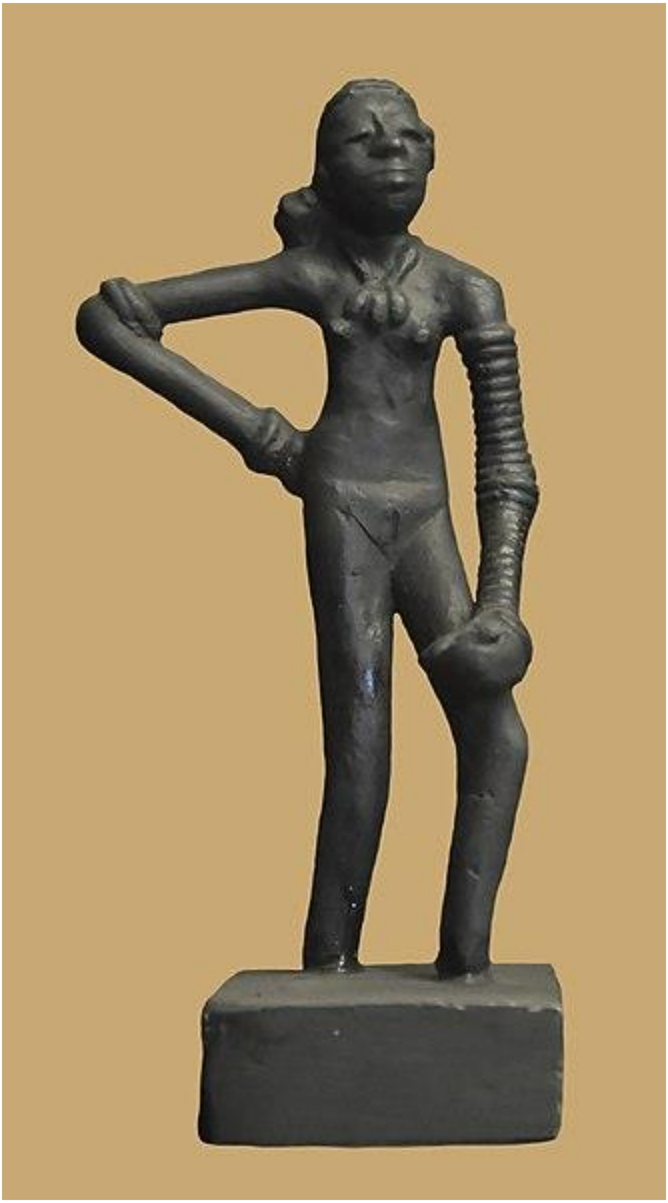
## कला आस्वादन आ कला समीक्षा- सैद्धांतिक पक्ष

१

### नर्तकी (!) वा महिलाक मूर्ति (२७०० बी.सी.ई.)

ज्ञाततम प्राचीनतम कलाकृति सिन्धु घाटी सभ्यतासँ प्राप्त सामग्री सभ अछि।

नर्तकी (!) वा महिलाक मूर्ति जे धातु (कांस्य) क अछि से मोहनजोदाड़ोसँ भेटल। कलाकारक नाम अज्ञात अछि मुदा उत्कृष्टतम ई मोहनजोदाड़ोक कलाक प्रतिनिधि अछि। मोटामोटी चारि इंची ऊँच, दू इंची चाकर आ एक इंची मोट ई कलाकृति आइ-काल्हि राष्ट्रीय संग्रहालय दिल्लीक सिन्धु घाटी सभ्यता गैलरीमे राखल अछि।



(साभार जो रवि, विकी CC-BY-SA-3.0)

कला आस्वादनक लेल आब देखी जे प्रेम की अछि जे एकरा उत्कृष्ट बनबैत अछि।

१.ई एकटा यागन दुब्बन महिलाक अनुकृति अछि।

२.महिला ठाढ़ अछि, वाम हाथ वाम जांघ आ दहिन हाथ ताँनयन पाछू दिश छै।

३.आँखि येघ-येघ छै।

४.केश डाँढ़िया छै।

५.नाक थायल छै।

६.महिला नग्न अछि मात्र गहना कंठहार आ हाथमे चूड़ी देखा पड़ि रहल छै। वाम हाथमे २४ टा चूड़ी मुदा दहिन हाथमे मात्र ४ टा।

७.ककवा कएल केश पाछाँमे झूरी बान्हल छै।

८.माथ पाछाँ दिश उठल छै।

९.हाथ सापेक्ष नुयँ नम्हर बुझि पड़ै छै।

ई महिलाक अनुकृति अछि, एकरा नर्तकी किए कहल गेल? की अहाँकेँ प्रेम महिला नर्तकीक काना टा लक्षण देखा पड़ैए? राष्ट्रीय संग्रहालय आ इतिहासक पोथी सभमे ई नर्तकीक नुयमे वर्णित रहल जे पूरुष मानसिकताक परिणाम अछि जाहिमे महिला

लेखिका रोमिला थापर ने मात्र इतिहासकार छथि, संगहि अपनाकेँ उपमा लेल छथि। कला-इतिहास आ पुरातात्विक अध्ययन अहोनि ते पाठकक प्रेम उत्पन्न करैत अछि।

२

## अजन्ताक पकिया रंगक राजकुमारी (२०० बी.सी.ई. सँ ४८० सी.ई.)

अजन्ताक एकटा गुफायन भित्तिचित्र (सरसँ यूनान चित्रकला) एकटा पकिया रंगक अतिसुन्दर राजकुमारीक चित्रण, ई घटना पहिनेन अछि आ करुणा सेहो घटना छै।

३

## खजुराहो (९५० सी.ई. सँ १०५० सी.ई.)

[खर्जुर (विच्छू- वृश्चिकक संस्कृत)- एकटा अप्सरा अपन जांघ उघारि कऽ देखा रहल अछि जइपर वृश्चिक चित्रित छै, तहीसँ खजुराहो नाम]।

रोमिला थापर एहुना कलाकृतिकेँ पलायनक कला कहैत छथि। बारहम शताब्दीक जयदेवक गीतगोविन्द सेहो रोमिलाकेँ नव लगैत छन्हि। कलाक इतिहासकार आ पुरातत्वविद रोमिलाक पक्षसँ असहमत छथि। कला इतिहासकार देवांगना देसाइ कहैत छथि जे जाति आ लिंग आधारित सत्ताक्रम विद्यमान छल, वात्स्यायनक काम सूत्र आ कालिदासक कुमारसम्भव खजुराहो आ गीतगोविन्दसँ बहुत

पहिनहियसँ अछि। ओ कहै छथि जे वृश्चिकक तुलना काम लोलुपता रूपी विषसँ कएल जाइत अछि आ सएह संकल्पना अप्सराक जांघपर चित्रित अछि।

- Gajendra Thakur, editor, Videha (Be part of Videha www.videha.co.in -send your WhatsApp no to +919560960721 so that it can be ad.Oded to the Videha WhatsApp Broadcast list.)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

## १.२.अंक ३६१ पर टिप्पणी

### आशीष अनचिन्हार

संतोष राय बटोही जीक डायरी नीक जा रहल अछि। मुदा हुनकर उपन्यास मंगरौना कर पाछू चलि रहल अछि। आशा अछि जे ओ अपन उपन्यासकेँ शीघ्र पूरा करता।

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

**𑒏𑒪𑒰 𑒫𑒱𑒧𑒩𑓂𑒬 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏**

𑓒.𑓑.𑒁𑒙𑒢-𑒣𑒙𑒢, 𑒢𑒰𑒞𑒙-𑒅𑒠𑓂𑒨𑒰𑒢... 𑒬𑒱𑒫-𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱𑒏 𑒣𑒴𑒖𑒰 𑒪𑒱𑒓𑓂𑒑-𑒨𑒼𑒢𑒱𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹

𑓒.𑓒.𑒮𑒰𑒏𑓂𑒭𑒲 𑒢𑒲𑒪𑒴 𑒧𑒰- 𑒂𑒡𑒳𑒢𑒱𑒏𑒞𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒥𑒱𑒧𑓂𑒥 𑒌 𑒂𑒡𑒳𑒢𑒱𑒏 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒏𑒪𑒰

२.३.संज्ञ दास- कलाकृि म अश्लीलता

२.४.गोनीनाथ- कुमान यननक प्रसिद्ध कथा 'य००0' क संग प्रकाशित संज्ञ दासक कलाकृतिक सम्बन्ध

२.५.मैथिलीक "उसन कहा था" मान कुमान यननक दीर्घकथा "य००0" (चित्रांकन संज्ञ दास)

२.६.मूनी कामत- समकालीन चित्रकान संज्ञ दास

२.७.मूकेश दत्त- अयन शैली आ तकनीकक वलँ आधुनिक कला म अलग यहचान वना नहलीह संज्ञ दास

२.८.गोविन्द चन्द्र दास- कामसूत्र क विना काना चित्र शैली नहि ठीक- लाककला क साआत विश्वविद्यालय गुमनाम नायक कृष्ण कुमान कश्यय (आ शशिवाला)*

२.९.नवीन्द्र कुमान दास- यनिवानक सहयाग सवस्ऽ जनूनी

२.१०.संज्ञ दासक किछु वीछल कलाकृति

२.११.गजेन्द्र 0ाकुन- कृष्ण कुमान कश्यय आ शशिवाला- एकटा

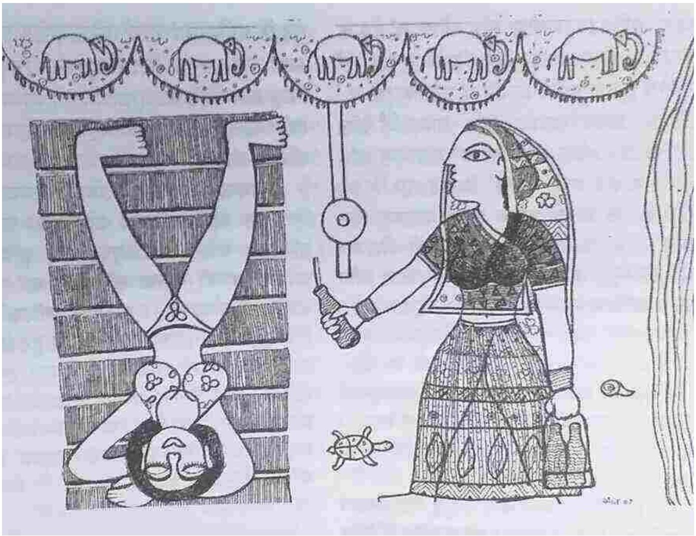
# परिचय

२.१२.जितेन्द्र झा, जनकपुर- मिथिला चित्रकला- नेपाल प्रसंग

२.१३.गजेन्द्र ठाकुर- श्वेता झा चौधरी- एकटा परिचय

## २.१.अरन-परन, नाढट-उघान... शिव-शक्तिक पूजा लिढ-यानिक रूपमे

## अरन-परन, नाढट-उघान... शिव-शक्तिक पूजा लिढ-यानिक रूपमे



**यनमश्वन कार्यो**

ई अरन-परन, नाढट-उघान, गंनि-मूतिया कलाकृति नहि, परम्परागत मिथिला आर्टक उत्तरआधुनिकता आ वैश्विक कृति अछि, जकना सव्हाज आ गनव्हाज कनौ सांस्कृतिक आयाम दव'म परहेज कनहि यता !
(चित्र 'अंगिका' स' साभार )

**नाजह्न विमल**

यनम्थनासँ खलवात!

**यनमश्चन कायर्ि-** नाजञ्ज विमल -ञ्धनम !

**नंञ्च मिश्र**

मनमौजी ए गेल छै सव।

**यनमश्चन कायर्ि-** नंञ्च मिश्र- वयर्द

**नागन चौधनी**

गनि-मृनिया।

**वृषण चंद्र लाल**

एमना लगैत अछि कलाकान किछु दखवऽ चाहैत छथि। ञतऽ कदाचित् सम्यन्नताक दृष्टिम आधुनिकता की थीक आ काना डाकन सनाम डाकन इच्छा अनुसानक माँग समाजकेँ यूनञ्क वाख्या वनि गेल छैक स दखवक प्रयन्न एल अछि। हँ किछु आडान स्पष्टता नहिँ त नीक छलैक।

**यनमश्चन कायर्ि-** वृषण चञ्च लाल- वलधौसीक कनक लवा लगञ्वै मीना !

**वृषण चंद्र लाल**

मीत, नव-नव काम्ञ आवऽ दिऔक न। आडान स्यष्ट आ निकसित

देखैक चाहैत सएह करबा प्रयास करी । केहन अर्थ छी नहि जे अपन-परत, नाढरि, उद्यान देखैक । हँ, छी जे मिथिला आर्ट पत्रकारिता विज्ञापनीय ढा म सिमित नहि रहए । समय सापेक्ष अभिव्यक्तिक सशक्त माध्यम सेहो बनए ।

**श्रीशनाथ झा**

के शिरोमणि छथि एकर संपादक ?(अम्बिकाक)

**मिथिलेश कुमार झा**

निंदनीय

**कुणाल**

एहि चित्र क ल क ' पनपना रंजन ' एवं अधर्म प्रवृत्ति करैत एहि ठाम एवं अन्य पनपना नओ लोकनि द्वारा बस बात रहल। चित्रकार एवं संपादक क नाम किनको नहि बूझल छैक। अथवा नाम लेला पर जिह्वा अशुद्ध होवाक खतरा छैक। एहि चित्र क अंतिका छपल अछि। संपादक - गौरीनाथ। चित्रकार - संजू दास। आउटलुक पत्रिका म संजू दास क साक्षात्कार छपल छैक। ओना अन्य चित्र क संग छैहा चित्र छैक। चित्रकार कृष्ण कुमार कश्यप क कतिपय चित्र सब गीत गोविंद ( जयदेव,) क पद सब पर आधारित छैक। कश्यप जी ओकरा कहिया सार्वजनिक नहि कलैन। कारण छैक छैहे पांडुलिपि पत्रिका नओ लोकैन जे

स्वयं यनम्पना क स्थान स नहि छैक्थ।

**विजयदेव झा**

कुणाल-कृष्ण कुमार कथ्य आप ओहि धनी यन नहि छथि गें हुनक नाम यन किछुडा मु0 चला दियौ। वामपंथ सदैव डायन सङ्क चारित्रिक उच्छृंखलताक यक्षधर नहल अछि। कलाक नाम यन सङ्क आ अश्लीलता यसारब वामपंथक चरित्र नहल अछि।

**कुणाल**- विजयदेव झा- मु0 दक्षिणपंथ क विशेषता छी ।वामपंथ हुनदम सत्य क यक्षधर अछि आ नहत ।
कथ्य जी क चित्र हमर देखल अछि।
सत्य ओसगर नछि, यूना प्रातक्षान टीम छल।

**कुमार यक्षनाह**

ओहि चित्र म रामनीय यनिधान म कालिदासक वर्णन स्त्री वर्ती अश्लील अछि. नग्नता सव0ाम स्वनाय नहि रहल छैक. विकनी स्लीमिंग यूल आकि बीच यन काना खनाय नहि लागैत छैक. समस्या अछि जे नग्नता आधुनिकताक स्थानक किएक? जखन कि आधुनिकता अस्मानीक वटीक आ लक्ष्मी मिश्लक वटाक विनाह म वानीक वर्णन छैक आ अस्मानी आ मिश्लक यनिवानक घाघ गानन स्त्रीगण कँ खाना खुआवैत छैक.

## सुनील कुमार मल्लिक

मिथिला चित्रक नव आयाम करैत जा सकैछ। ओहिमे अखिलेश देखनिहारक चश्मा बदलबाक चाही।

## नामचंद्र झा

सुनील कुमार मालिक-सँ, ओक्कवन ओना नहि कहियौ

**पनमश्वन कार्यौ-** नामचंद्र झा- यौ की कहू! छगुनाइत ओहि दुआर छी जे ओ बाकटौनलि मूरवाथौनलिम नश्ना मातृन आ बनढनयन सहीम अर्थनता आ दृष्टि-दर्शन नहि यौलक अछि । हमनासब कालीमाइ, सहस्रवाहु संहारनी सीता नश्न हाइत (बनढन नइ छैथ) पूजा छथि! शिव-शक्तिक पूजा लिढ-यानिक रूपम; तान्त्रिक उा शक्ति उपासक यानी महाशक्तिक दर्शन करैत छथि ! सबक अनाधिया/शिशु बहिन बटी बयर्द नहैछ ।तब ओ घाल घाढहाउज !? 0ाम गुप्त करन, कु0ाम गुप्त करिखा ! जाहि0ाम नस्र आ लिढक कीटल मायन/यदीक सामाजिक सांस्कृतिक व्यवहार छै उागत ओ ओहन सक्क नश्नाक गय्य उ(0छ त' ओम बदम छद नइ हुअत चाही । वियोहनी करिआक घाघट(लाज-लहाज) यतेत जे छहि, स चर्म-चक्षुत नहि मनसा निचानक आननद/ बर्जन सहा नहैछ !! ओ नगनता दृष्टि-दर्शन सायउ अइ ।

## सुनील कुमार मल्लिक- परमेश्वर कापड़ि- सही कहल सर

### रामचंद्र झा

अहाँक निरूपण विश्लेषणक समाधान सँ ठाम गुणे करैत रहलौं---! समरथ कहुँ नहिं दोष गोसाईं। रवि पावक सुरसरि की नाईं।। ई विधिसम्मत राष्ट्रक परिधि लंघवाक उपक्रम नहि हुअए सएह नीक।

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

## २.२.सानी नीलू झा- आधुनिकताक परिवेश आ आधुनिक चित्रकला



**सानी नीलू झा**

**आधुनिकताक परिवेश आ आधुनिक चित्रकला**

मिथिलाक अनुपम चित्रकार छथि नरेन्द्र दास जी आ संजू दास जी। जनिक मधुबनी पेंटिंग चारू कात पसरल जाइत रचना अछैक, ओतए हिनकर आधुनिक चित्रकला ओकरा रचनाक शैली मे पसरल मुदा बहुत कम देखल जाइत, से नहि छल सभ।

ई कला कोना नव थिक से नहि अपना ठाम लोक लेल नव भ' सकैछ।
ओना जतय स्त्रीक मूक रहबाक परम्परा छल, ओहि समक ओहि परम्परा कें सपना बूझनाइ लेल ई चित्र सभ अवश्य खटकतनि मुदा तखन, जखन ओ अर्थ बूझथिन।
आ जा धरि ओ लोकनि बूझताह/ बूझतीह ता धरि ई आधुनिक चित्रकला बहुत आगू ल' गेल रहतीह संग जी, से विश्वास अछि।

एहि बीच, बिहार सरकार द्वारा आयोजित "बिहार म्यूजियम पटना" मे "हम महिला कुछ खास" प्रदर्शनी सेहो चलि रहल छैक।
जतय दर्शक लेल एकटा अद्भुत प्रदर्शनीक कक्ष बनल छनि हिनक चित्र सभ।

बिहार संस्कृति विभाग पटना सहित आन आन-आन क्षेत्र सँ हिनक कला कें पुरस्कृत कएल गेल अछि।
प्रत्येक क्षेत्र मे दर्जन सँ बेसी प्रदर्शनी मे हिनक सहभागिता छनि आ एकल प्रदर्शनी सेहो।
दर्जन भरि सँ बेसी मैथिली, हिन्दी पोथी,पत्रिकाक कवर पर हिनक बनाओल चित्र अपन स्थान सुनिश्चित कएने अछि।

कला कें कलाकार जँ अपन जीवनक अध्याय बना लैत अछि तँ ओकर चित्र बजैत अछि,अपन परिचय दैत अछि।
हँ ई सभ गप ज ओहि लेल हमरा सभकेँ ओकर भाषा बूझबाक क्षमता हेबाक चाही।

ओना गँ हिनका लोकनिक यनिचय देवाक वगनगा नहि, प्रख्यात कलाकान छथि लेकिन गेया हमना लगेत अछि ज मिथिलाक लोक कँ, कलाप्रेमी कँ, हिनकन चित्रकला कँ कनक अयन दृष्टि कँ निष्पान क' देखवाक वगनगा अछि। "साहित्य,कला" कखना अश्लील नहि होऽऽग छैक अश्लील होऽऽग छैक, नजनि आ साच।

कोका अनाते यूनस्कान सँ यूनस्कृत आ सम्मान कएल गेल छनि संजजी आ ननिष्ठ दास जीकँ। हमना गर्व होऽऽग अछि हम हिनका आस-यास नहैत छी हमन अयन मिथिलाक छथि, हम एकदासनकँ चिह्नैत छी।

संज जीक चित्र म गामक यनिवेश म ग्रामीन स्त्रीक जीवन शैली स्टैत अछि, हिनक कलाक माध्यम सँ दूनका लोकनिक विचान वूझैत छी। हिनक वनाओल वहुत नास एहन चित्र अछि जाहि चित्र कँ हम सद वैठक हॉल म, सयनकक्ष म,लगा सकैत छी।

सदसँ खुशीक गय ज एहि शैलीक चित्रक सूत्रधिजिग छथि एहि शैली म चित्र वनाएव यूनुष प्रधान समाज म ठीक एकटा चुनौती थिक। जाय सिखवैत हो सयगा म, सांय-गाय आ अयन ऽऽष्ठा कँ दवा देवाक लेल, ओहन समाज म ओहि ठाम हिनकन चित्र अनघाल कनैत अछि, वहुत नास गय कहैत अछि।

हमरा मोन अछि हम सभ एकटा
पुरस्कार प्रदान समारोह मे बैसल रही, हमरा बगल मे चित्रकला आदरणीय नरेन्द्र दास जी आ संजय दास जी बैसल रहथि आ सामने मंचपर गंभीर विमर्श चलैत छल जाहि, आदरणीय रमण लाल दास जी संग आन रो बहुत गणमान्य व्यक्ति सभ उपस्थित रहथि। हमरा प्रसन्नता भेल जखन सौ - दु सौ दर्शक आ श्रोता सँ भरल समारोह मे, आदरणीय गंगेश गुंजन जीक वक्तव्य चलि रहल छल सभ सुनि रहल छलथि, ओही समय काका गोटकेँ विश्वास हेतनि से नहि कहि सकब। गंगेश गुंजन जीक कहब रहनि जे जखन कोनो कलाकार आ साहित्यकारकेँ अभिनय कला व लेखन लेल पुरस्कृत कएल जाइत छैक तँ अधिक खुशी यदि संजय दास आ नरेन्द्र दास जी सम्मानित करैत छी।
संकेत कएलथिन जे हमरा सभमे प्रसिद्ध चित्रकार बैसल छथि हुनका लोकनिक चित्र सँ सेहो पुरस्कृत कएल जा सकैछ। ओही समय हुनकर ठीक बहुत दुनक आ गहीर गप छल। ओही बात मैथिल लोककेँ मोन रखबाक चाही।

एत' हम हुनक दुनू गोटाक गप करय चाहब, नरेन्द्र जी आ संजय जी,मिथिला मे एकटा नव चीज सिखबाक प्रयास करैत छथि।

हमरा सभकेँ दासन पेंटिंग सभ जकाँ आधुनिक चित्रकला सेहो सिखबाक, बुझबाक चाही।
दर्शक केँ सेहो कला, चित्रकला बुझब, सिखब चाही,हम सभ एखन आलोचना आ समीक्षा करबाक योग्य बनब।

आलोचना आ समीक्षा सेहो आवश्यक मुदा तखन ने जखन बूझब,गुनब।

रचना लगैत अछि मैथिली मिडिया लोकनिकेँ हिनका सभ
सँ साक्षात्कार करबाक चाहियैन। एहि सभ विषय पर
खेल सँ विमर्श होबाक चाहियै।

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

## २.३.संध्या दास- कलाकृति मे अश्लीलता



**संध्या दास**

**कलाकृति मे अश्लीलता**

सबस पहिने त हम ई बात स्पष्ट करी जे हमरा विचार अछि की कला,साहित्य आ फिल्म मे रचनाकार क किछु स्वतंत्रता देल जबाक चाही नहि त नव विचार आ नव कला परंपरा क विकास

समाय् ज्य
जायत। सव कलाप्रमी लाकनि सां हमन आग्रह ज काना कलाकृति म अश्लीलता अछि की नहि एकना उहि कलाकृति क विषय क मांग, आकृति क रान रंगिमा आ कलाभककता दखलाक वाद तय कनु। एकटा आधुनिक कलाकान हला क कानथ हमन विचान स अश्लीलता मात्र एकटा विचान छियैक। जना एकटा गनीव क फाटल नुआ म उाकन गनीवी दखाइ दैत छैक मुदा किछु लाक क उहि म अश्लीलता सेहो दखाइ छनि। रानत आ रानतीयता यन गर्व कर्नैवला लाक नाजकयून सन फिल्मकान यन गर्व कर्नैत छथि मुदा हुनक फिल्म नाम तनी गंगा मैली म मन्दाकिनी क अयन वच्चा क दुध पियावै काल म किछु लाक क उाकन ववसी दखाइ यडलैत किछु क अश्लीलता सेहो दखाइ दलकनि। एखन धनि हम ज कला समाज स सिखलहुँ ज कला म अश्लीलता नाम क काना विचान या कलाकृति नहि हाइत छैक। जना साहित्य म याठक तय कर्नैत छथिन की कान कलाकृति नीक छै आ की वजाय तहिना कला म दर्शक, कला समीक्षक आ वाजान। आव हमन प्रनथा अमृता शेनगिल छथि स स्वयं अयन न्यूड चित्रथ कनने छलीह। आधुनिक कला क इतिहास म काका नग्न चित्रथ हएत। वहुत नास रानतीय स्त्री कलाकान नग्न चित्रथ कर्नैत छथिन जना अनुयम सुद अर्पिता सिंह ,मिथु सन , अंजलि इला मनन।

आव अहाँ लाकनि सां एकटा सवाल
कि गीत गोविन्द क अश्लील करव ,विद्यायति क सव
नचना क अश्लील करव ,कारुवन क अश्लील करव ,तंत्र कला क अश्लील करव ,खजुनाहो क अश्लील करव एतव नहि काक शैन सनातनी लाक त भि

त लिंग क सङ्ग अश्लील कहैत छथि। सनातन धर्म क स्थापित करय बला शंकराचार्य सेहो कहि क ई अत्यन्त विषय अश्लील अछि मंडन मिश्र क स्त्री उभय भारती सँ सभा मे हारि गेलथिन काम शास्त्र संवाद करय लेल ।
कृष्ण क विवाह त रुक्मिणी स भेल रहैन मुदा राधा कृष्ण नाम जपैत काल कोना मैथिल लोक क मैथिल संस्कारक याद नहि अबैत छनि। चर्चित साहित्य खट्टर काका क तरंग म सबस बसी परंपरा क विध्वंस कयल गेल छैक त कि ई नीक साहित्य नहि।

हमर देश क चर्चित पत्रिका आउटलुक म छपल किछु रेखांकन आ पेंटिंग म मैथिल लोक क अश्लीलता देखाई देत छनि मुदा उकर विषय, भाव भंगिमा नहि, उकर कलात्मकता नहि। आय सबस पहिल हम अपन उहि चित्र क चर्चा करय चाहब जकरा एकटा साहित्यकार पत्रकार जी कला म अश्लीलता कहि क सम्बोधित कलनि। आब नहि उकरा ई रंग लगी घर स सहा जाति क धार्मिक भावना भड़काबै क कोशिश कलनि। हम त चिंता मात्र सेहो अछि जे ई बसी पढल लिखल विदेश म नौकरी करय बला लोक छथि देश विदेश म कतेक कलाकृति देखने होयत। उहि चित्र म गोआ तट पर विदेशी पर्यटक क बोल्ड बैट एकटा स्त्री छैक। सत बाथ लेल बिकनी म सुतल विदेशी स्त्री आ अपन आजीविकाक लेल बोल्ड बैट मैथिल स्त्री। आश्चर्य धनि बसी
लोक मिथिला पेंटिंग क मात्र देवी देवता क चित्रण बला परंपरागत शिल्प बुझैत छथिन एकटा कला नहि। जखन कि आब मिथिला पेंटिंग विश्व प्रसिद्ध कला थिक जाहि म आठ टा स्त्री क पद्मश्री सहा भेटल छनि । कोना कला त साहित्य जा धनि समकालीनता क समावेश नहि करैत छैक त धनि उक

ना म जीवंगा नहि आवि सकैत छै। यूष्पा दनी ,संतोष दास ,अविनाश क र्ण ,अमृता सा आन कागका नव कलाकान सव ओहि वाग क नीक जकाँ वूसैत छथि। हुनका जानकानी लल हम वग दी ज सवस यहिन यद्मश्री गंगा द नी (गेन यानम्यनिक निषय सव क मिथिला कला म जगह दलनि नालन का स्नन ,हॉस्पिटल क दृश्य ,ट्रेन क दृश्य ऒ्ही सव हुनक (गेन यानम्यनिक निषय छलनि । यद्मश्री (गोदावनी दत्त ज जीवन हनि यानम्यनिक निषय वनवैत नहलीह ओकरा अयन कलाप्रेमी ग्राहक लल वृत्रा कार्निवाल सहो वनौलनि ।

कागक मैथिल लाक कहैत छथि ओकरा मैथिल हय क अहाँ मिथिला यँटिंग कियैक नहि कनैत छी। हम मैथिल छी त की मात्र मिथिल यँटिंग कनी , मॉडर्न यँटिंग नहि कय सकैत छी। हमहू शुरुआत म यानम्यनिक मिथिला यँटिंग कनैत छलहुँ मुदा विवाह क वाद आधुनिक यँटिंग कनय लगलहुँ। आव हमन यँटिंग म आधुनिक कला आ समकालीन कला क निषयनक आ तकनिकी सहो दखाऒ्ही दत।

किछु (गोट कहैत छथि आऒ्ही धनि काना आन स्थापित प्राप्त कलाकान मिथि ला यँटिंग म विकनी यहिनल स्त्रीक चित्र नहि वनाउलनि. मिथिला यँटिंग म अहाँ जिनकन नाम सुनन छी ओ सव वृद्ध पुनान लोक सव छथिन यहिन मिथिला यँटिंग मात्र यानम्यनिक वनैत छलै मुदा आव किछु यनिवर्तन हय नहल छैक जना यूष्पा दनी ,अविनाश कर्ण ,संतोष दास। हमहू अयन न खांकन म काना मैथिल महिला क विकनी म नहीं दखाउन छी हमन चित्र जाहि म अश्लीलता क आभाय लगाउल (गेल अछि ताहि म .(गोआ समुद्र तट क दृश्य छै काना विदशी यर्यटक क ओकरा मिथिल

स्त्री कान्तिभिक्षु वर्चा नरहल छथिन। यलायन क शिकान मैथिल ललना मानसि क नर्जना क गाति क अयन नाजगान म लागल छथि।

अहीं सव जवाव दिय ज निदशी यर्यटक की कम्बल उाढिक सनवाथ लगीह ? असल म लाक यन म्यना क गावीज जकाँ गर्दैन म टांग नन छथि यनम्यना वनैग विगनैग नरहलै या उदाहनघ क लल जयमाल अयन सवहक यनंयना नहि छल मूदा आ व समाज अयना ललक ।

अयन समाज म आज्ञी ज नकली संस्थाननान लाक छथि उा सव छद्म लवादा उाढन छथि। साहित्य, कला आ संस्कृति क नाम यन यूनाघयंथी दूकान चला नरहल छथि सवक कलज्ञी खुजि नरहल छनि ।

सासल साज्ञीट यन निनाध क हम सामान्य नूय म ललहुँ कियैक ग काना नव नाकान क ज्ञी सव सहय क उामगा जनून हवाक चाही। गीग (गानिह ,कालिदास आ निद्यायगि क सौन्दर्य नर्शन यन वहून लाक निनाध कनैग छथिन । नाजकमल चौधनी आ खडुन कका क सहा निनाध हलै।

-संद्य दास मा 9899242017

**अयन मंगव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

## २.४.गोपीनाथ- कुमार पवनक प्रसिद्ध कथा 'प[illegible]' क संग प्रकाशित संजय दासक कलाकृतिक सम्बन्धम



**गोपीनाथ**

### कुमार पवनक प्रसिद्ध कथा 'प[illegible]' क संग प्रकाशित संजय दासक कलाकृतिक सम्बन्धम

पछुलका साल पत्रिका 'अंगिका'क अप्रैल-जून 2008 अंक म कुमार पवन क प्रसिद्ध कथा 'प[illegible]' क संग प्रकाशित संजय दास क कलाकृति पर जे टिप्पणी कयल जा रहल अछि ताहि संदर्भ म किछु बात मिथिला

संस्कृतिक तथाकथित रक्षक ओ चित्र क लऽ कऽ कऽ रहल छथि जे अत्यंत अफसोसजनक आ निन्दनीय अछि।

संजय दास हमरा लोकनिक समयक एकटा महत्वपूर्ण कलाकार छथि। संजय जी मस्त आ गतिशील परंपराक प्रति जागरूक आ समृद्ध हेबाक अलाव आजुक बदलैत समय आ समाज के देखय आ परखय मे निपूण आधुनिक चित्रकारक नजरि छन्हि। हुनक चित्रक पाँति बजैत अछि, स्वस्थ मनूक्खक मोन केँ चिंतनशील बना दैत अछि। निश्चित रूपसँ जे स्वशिक्षित चित्रकार छथि, मुदा जे एकटा कुशल कलाकार छथि, जिनकर कलाक राष्ट्रीय स्तरक कएकटा चित्रकार आ कला समीक्षक सराहना कर छथि। बहुत रास महत्वपूर्ण सम्मानसँ सम्मानित संजय जी क पेंटिंग प्रतिष्ठित राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घा मे संग्रहित भेटत।

दरभंगा जिलाक कमतौली गाममे जनमल संजय जी स्नातक छथि। हुनक पेंटिंग के छअ टा एकल आ दर्जन भरि समूह प्रदर्शनी कएल गेल अछि। राष्ट्रीय स्तरक पत्रिका, अखबार आ किताबमे ओ सब पर चर्चा भेल अछि। नारीवादी दृष्टिक समर्थक संजयक मानब अछि जे आइयो महिलाकेँ समाजमे उचित सम्मान नै मिलल छै आर जाबति धरि सहज नै भऽ जेतै, ताबति महिला अपन अस्मिताक अभिव्यक्तिक तरीका ताकैत रहतै। आजुक नारीक संघर्षक संग-संग हुनक अस्मिताक अभिव्यक्ति हुनक चित्रकला मे भेटैत अछि ।

संजय जीक विचारें आधुनिक चित्रकार रविन्द्र कुमार दाससँ भेल अछि। दूनू गोटे बड्ड विचारशील कलाकार छथि जिनका पर सारा समाज गर्व महसूस कऽ सकैत अछि। एहन चित्रकारक कलाक बिना बूझने हुनकर चित्र पर उल्टा टिप्पणी करय बाला लोक अपनाकेँ लेखक-कवि-चित्रकार, मिथिलाक संस्कृतिक रक्षक कहि सकैत छथि, मुदा संवेदनशील स्तर पर हुनका सब पर मनुष्य होयबाक बात पर संदेह भऽ सकैत अछि।

'अन्तिका' क संपादकक रूपमे हम एकर निंदा करैत छी जे एहन टिप्पणी करैत छथि आ सभ जिम्मेदार सोचवला मित्र सँ उचित हस्तक्षेपक अपेक्षा करैत छी।

संजय दास मिथिला संस्कृतिक तथाकथित रक्षककेँ आहत करयबला पेंटिंगक विषयमे कहैत छथि, "हम गोवा बीच क दृश्य देखलाक बाद ई ड्राइंग बनौने छी। मिथिलाक एकटा महिला विदेशी पर्यटककेँ काल्हि ड्रिंक बार/पटासि रहल छथि। अर्धनग्न महिला बिकनीमे एकटा विदेशी पर्यटक अछि।" मतलब ई पलायनक शिकार मैथिल ललना भूगोलक संग संग मानसिक वर्जनाक देबाल पार कऽ रहल छथि। अश्लीलता ई चित्रमे नहि, अधलाह विचारक लोकक नजरिमे अछि। अंग अश्लील नहि अछि आ ने ओकर चित्रण। जँ एहन रहैत तँ कोहबरक चित्र नहि बनैत।

(हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद आशीष अनचिन्हार)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

𑓒.𑓗.𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏 "𑒅𑒮𑒢 𑒏𑒯𑒰 𑒟𑒰" 𑒧𑒰𑒢 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒨𑒢𑒢𑒏 𑒠𑒲𑒩𑓂𑒒𑒏𑒟𑒰 "𑒨𑒖𑓂𑒘0" (𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒰𑓀𑒏𑒢 𑒮𑓀𑒖𑓂𑒘𑒰 𑒠𑒰𑒮)

**𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏 "𑒅𑒮𑒢 𑒏𑒯𑒰 𑒟𑒰" 𑒧𑒰𑒢 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒨𑒢𑒢𑒏 𑒠𑒲𑒩𑓂𑒒𑒏𑒟𑒰 "𑒨𑒖𑓂𑒘0"**

## (चित्रांकन संज्ञ दास)

मैथिलीक "उसन कहा था" मान कुमान पवनक दीर्घकथा "प॰॰0" (सारान अंगिका) । हिन्दीक पा0क, जे "उसन कहा था" पढ़न हेता, कँ बूझल छथि जे काना अहि कथाकँ नचि वन्द्रधन शर्मा "गुलनी" अमन देऽ (गलाह। हम चर्चा कऽ नहल छी, कुमान पवनक "प॰॰0" दीर्घकथाक। एकना पढ़लाक वाद अहाँकँ एकटा निचित्र, सुखद आ मान हौल कनैवला अनुभव हएत, जे सम्भवीनिअन इजनी सँ मिलिता लागत आ हनाका। मुदा ओ नवनाकँ पढ़लाक वाद गामस, घृणा सत्यन नियंत्रणकँ आ सामाजिक/ पानिनानिक दायित्वकँ सहा अहाँ आन गंभीनतासँ लवै, स धनि पक्का अछि। मुदा एकन एकटा शर्त अछि जे एकना समै निकालि कऽ एक उखआहाम पढ़ि जाऊ। ओ कथाक चित्र सत्यकँ लिखलनि अछि लिखिया संज्ञ दास- **सम्पादक**

दीर्घ कथा

# पड़ठ

## कुमार पवन

*प्रायः एक युग बाद कुमार पवन फेर सँ लेखन मे सक्रिय भेल छथि। विगत शताब्दीक नवम दशकक शुरुआत सँ लेखन आंरभ कर'वला कुमार पवन मैथिलीक सुपरिचित कवि, कथाकार आ व्यंग्यकार छथि। किछुए कथा आ तीन चारि दर्जन कविताक बल पर मैथिली मे अपन फराक पहिचान राख'वला ई एक टा विशिष्ट कवि-कथाकार छथि। हिनक नव दौरक प्रारंभ एक टा यादगार दीर्घ कथा आ पाँच गोट कविताक संग भ' रहल छनि। प्रायः कतेको वर्ष सँ मैथिली मे एहन सशक्त कथा पढ़बा लेल नइँ भेटल अछि। हमरा विश्वास अछि जे मैथिलीक व्यापक पाठक वर्ग केँ ई स्मरणीय शुरुआत बुझेतनि।*

—संपादक

### अन्हार मे डुबैत खिरोइ...



मोन मे औनाइत जाहि बेचैनी केँ टारि देबाक फेर मे हम एत' प्रायः भागि क' आयल छलहुँ, से एखनहुँ कहाँ छोड़ि रहल अछि... ईंटाक पाया आ काठक गार्डरवला एहि जर्जर पुल पर ठाढ़ भ' नीचाँ लगभग सुखायल मिरतुक्की खिरोइ आ चारू दिस गर्द-गर्द भेल वातावरण केँ देखि मोन हल्लुक क' लेबाक आशा करब आब व्यर्थें बुझा रहल अछि...। खिरोइ, जे हमर गामक पूर्वी सीमान पर अदौ सँ बहैत हमरा लोकनि केँ एक टा परिचिति दैत आबि रहल अछि, आइ केहन दुब्बरि-पातरि सनटिटही सन भेलि अपन अस्तित्वक लेल संघर्ष क' रहल अछि, से देखनहि जानल जा सकैए। एक टा दीर्घ निसास छोड़ैत हम चारू दिस नजरि खिरबैत छी। सूर्य ढरकि चुकल छथि...। खूने खुनाम पश्चिमाकाश...। घुरिआयल परिवेश...। नहू-नहू उतरैत अन्हार...। आ अन्हार मे डूबैत खिरोइ...।

हम एत' की क' रहल छी? एखन तँ गाम पर रहबाक चाही। ओत' धमगज्जर मचल हेतै। कल्हुका भोजे तेहन रहै जे अजुका भोज लेल लोक सभ भोरहि सँ उत्साहित अछि। जटावला भाँगक पत्ती भोरहि मे फूलय लेल ध' देल गेल छलै। कमलू भाइक खास आग्रह छलनि। से छनि। गाम मे भोज रहौक तँ ओ दड़िभंगा मे अटकि नहि सकैत छथि। ओ काल्हिए दसबजिया ट्रेन सँ आबि गेल छलाह। उत्साहपूर्वक भनसिया सभक संग भरि दिन लागल रहलाह। वैह किऐ? बहुतो लोक आयल अछि। कॉलेजिया नवयुवक सभ। काल्हिए सँ हरित क्रांतिक योजना पर अमल भ' रहल छैक। भोर सँ फुलैत भाँग केँ मीजि-मीजिक' पाँच पानि सँ धोने हेताह शोभन...। सिलौट पर ताधरि पिसने हेताह जाधरि भाँग सिलौट ने छोड़ि देने हैत। भाँग मे देल गेल हेतै खीराक बीया, गुलाबक पत्ती, सौंफ, दछिनी, मरीच आदि-आदि कैक तरहक मसाला। वैन्यू छलै टीसन। नवीन झाक चाहक दोकान। कमलू भाइ साफ कहने छलथिन नवीन झा केँ, कोनो हालति मे दस किलो दूध राखय लेल। दूध-चीनीक संग घोरल गेल हैत भाँग। गिलास-पर-गिलास देने हैत सभ...। सबहक मोन आब गुनगुना चुकल हेतै...। एखन धरि तँ सबहक संपर्क भ' चुकल हेतै बाबा बौरहबा सँ—सोझे हॉटलाइन पर। आब तँ एक्कहि टा काज बाकी...।

सरबन बाबूक दलानक विस्तृत अगुअइत मे नोतल ब्राह्मण सभक जुटान भ' रहल हेतनि...। ओत' एखन हमरो रहबाक चाहैत छल...। आ हम एत' एहि पुल पर ठाढ़ छी...। की क' रहल छी हम एत'? सभ हमरा ओत' ताकि रहल हैत...। कमलू भाइ खास क' आ हम...? तखन सँ कतोक बेर गाम दिस विदा होब' चाहलहुँ अछि, मुदा डेगे नहि उठि रहल अछि...। हिम्मति तँ करहि पड़त...। सामाजिक बन्हन केँ अनठिया देब उचित नहि...। जाय तँ पड़बे करत...।

नदीक छरकी...लचका...जरलाहा पीपर... जेना-जेना गाम दिस बढ़ल जा रहल छी अन्हार आर सघनायल जा रहल अछि...। माल-जाल केँ चराक' बाध सँ घुरैत लोक सभ...। मंथर गतिएँ चलैत, पजुआहि करैत, महीस सभ आ ताहि पर बैसल चरबाह सभ सड़कक एक दिस सँ जा रहल अछि। सामने गाछी सभक पच्छिम रेलवे आ तकर ओइ पार गाम। गाछी आ बँसबारिक कारणें अन्हार आर घनगर बुझा रहल अछि। गाछी सभक विरल भाग द' क' इजोत हुलकी द' रहल अछि आ संगहि सुनाइ पड़ि रहल अछि जेनरेटरक फट्-फट्-फट् फट्... अनवरत...।

गाछी पार क' रेलवे लाइन पर चढ़ैत छी...। एतहि सँ स्पष्ट बुझाइत अछि—व्यापक ब्राह्मण समाज जुटि रहल अछि...। पुआरक सैकड़ो बीड़ा पंक्तिबद्ध राखल जा चुकल अछि...। बैसइ जइयौ केर आग्रह सुनबाक लेल उताहुल बूढ़-सेयान-बच्चा-बुतरु-छौंड़ा-छौंड़ीक भीड़...। भोज्य पदार्थ पर टूटि पड़बाक लेल सन्नद्ध अटाठट्ठ लोक...।

रेललाइन सँ सड़कक लभानी पर उतरि जहिना हम आगाँ बढ़ैत छी कि आग्रह भ' जाइत छैक। की रेलम पेल! लोक सभ बीड़ा लूझ' लेल टूटि पड़ैत अछि। केओ चारि-चारि टा बीड़ा लूझि-ओछा पलथी मारिक' बैसैत अछि तँ केयो बीड़ाक अभाव मे चप्पले पर आसन जमा लैत अछि। दब्बू प्रकृतिक लोक बीड़ाक लूटि मे पछुआ गेला संतां हारि क' चुकिए माली बैस जाइत अछि...। ओम्हर जे कनेक हमर-झाँटि-पर-झूलय-बड़का-बड़का-लोक वला लंठै सँ लैस अछि से बलजोरी सरबन बाबूक टाल सँ झीकि-झीकि पुआरक मोटका बीड़ा बना बैस जाइत अछि आ गर्व सँ गर्दनि तानि चारू दिस ताकि रहल अछि जेना कि कहि रहल हो, 'मर्दक

बेटा अछि क्यो तँ टोकि क' देखओ नेञ।' लोक फराके सँ हाँ...हाँ...क' रहल अछि परंच केक्कर हिम्मति छै जे समक्ष मे आबिक' रोकय...।

आब पात परसल जा रहल अछि...पुरइनक पात। अद्‌भुत! आब जखनकि प्रायः सभ भोज मे लोक दड़िभंगा वा पुपरी सँ पातक रेडीमेड प्लेट आ बाटी ल' अनैत अछि तखन पुरइनक पात? सरबन बाबूक हठ छलनि। खजुरबाराक पोखरि सँ आनल गेल छलै बोझक बोझ...। सरबन बाबूक तँ खाली हठ आ इच्छा छलनि। असल व्यवस्था सँ कयलनि राघव लला। से छनि। लोकक हुनका कमी नहि छनि...। बस एक बेर हाक देबाक काज...।

## मुदा बाजय रसनचौकी...

से आब भोज शुरू भ' गेल अछि...। चूरा-दहीक भोज...। नहि-नहि, दही-चूराक भोज...। कहियो क्रेज रहै पक्की भोजक माने पूड़ी जिलेबीक भोजक। नामे सुनैत मातर बच्चा सभ किलोल करय लगैत छल...। स्त्रीगण अनेरे प्रसन्न भ' अपन नेना केँ कोरा मे ल' चुम्मा लैत पति केँ कनेडेरिएँ देखय लगैत छलीह...। पुरुखवर्गक तँ कथे कोन? परान्नं दुर्लभं लोके शरीराणि च पुनः पुनः केँ गीरह मे बन्हेने ओ लोकनि भाँगक पुरना पत्ती पीसि देबाक लेल कनिञाक निहोरा करय लगैत छलाह...। मुदा, आब ओकर क्रेज गेलै। आब के पुछैए पूड़ी-जिलेबी-तरकारी केँ? ओ तँ रहरहाँ होइते रहैत छै। आब तँ माघ नहाय से मर्द कहाय। माने जे दही-चूराक भोज क' पाबय से मर्द। बड़का-बड़काक ढोंढ़ी ढील भ' जाइत छनि...। हँस्सी-ठट्ठा छै की? पसेरी भरिक' करेज होयबाक चाही। आ चाही मनीपावरक संग मैन पावर...। से आब लगैए, कनिञा काकीक दुनू बेटा मे एहि दुनू चीजक कमी नहि। दुनू बेटा पौरुष देखौलथिन अछि... आ से भरपूर देखौलथिन अछि...।

पौरुष तँ ओ लोकनि देखबिते रहैत छथि। आब ओही दिनुका बात लिय' ने। अरे, सरझप्पी दिनुका। अस्थिसंचयक बाद श्राद्धक हेतु योजना बनाब' लेल गामक पागधारी लोकनिक बैसार भेल छलनि...। सरबन बाबू दुनू भाँइ ओना तँ एक दोसरा सँ कटल-कटल रहैत छलाह...। एक गोटे ईर घाट तँ दोसर वीर घाट! परंच एखन दुनू गोटे अपना केँ एक टा विशेष प्रकारक अपराध भाव सँ समाने रूपेँ दबल अनुभव क' रहल छलाह। लागि रहल छलनि जेना कि पतिया लागल होनि। पतिया लागब की होइत छै, से ओ लोकनि नेनपने मे देखि चुकल छलाह। जकरा हाथेँ खुट्टा पर बान्हल गाय-बड़द मरि जाइत छलै तकरा गरा मे मरल पशुक-जउड़ लटकौने प्रायश्चित हेतु घरे-घरे दयनीय मुद्रा मे मौन रहि भीख माँगैत देखि चुकल छलाह...। आइ दुनू भाँइ अपना-अपना केँ किछु ओहने सन स्थिति मे पाबि रहल छलाह...। एम्हर पागधारी नक्षत्र मंडली विचार क' रहल छल—

"श्राद्ध कोन होअय?"

"वैदिकी?"

"पंचदान?"

"के बजलाह पंचदानक नाम? वजबाक गति नहि अछि तँ कम-सँ-कम चुप तँ रहू। अहाँ केँ ई नञि बूझल अछि जे शास्त्रक अनुसार वैदिकी श्राद्ध भेने मुइनहार केँ पइठ होइत छनि? आ सरबन बाबू दुनू भाँइक कोनो हाड़ हिलैत छनि? कथीक अभाव छनि?"

"हँ यौ! अभाव किऐ रहतनि? दोसर, प्रतिष्ठो किछु अर्थ रखैत छैक कि नहि? प्रखंड भरिक कोन गाम मे के नहि चिन्हैत छनि सरबन बाबू केँ?"

"आ राघवेजी कोन कम छथि?"

"हँ! से तँ ठीके! कोन गामक नवयुवक नहि चिन्हैत छनि राघव केँ?"

"असल मे चिलमक सम्बन्धे ततेक विस्तृत होइत छैक...।"

"फेर...। की बाजि देलहुँ अहाँ? जखन मुँह खोलब बुड़ित्वे बोकरब। भतृहरि कहने छथि...।"

"आब भतृहरि केँ एखन रहय दियनु। ट्रैक सँ हटै नहि जाइ जाउ।"

"ठीके कहैत छी। उचित तँ यैह जे वैदिकी होउक।"

"हँ...हँ...। वैदिकीए होउक।...की सरबन बाबू?"

जगमगाइत नक्षत्र मंडलीक मध्य सकुचायल सकपंज-निष्प्रभ बैसल सरबन बाबूक बुद्धि जेना हेरायल सन भ' गेल छलनि। आब जेना झुकल माथ उठयबाक अवसर आ बाट देखाइ पड़ि रहल छलनि...। कनेक महग अवश्य छलै, मुदा दोसर उपाये कोन छलनि...?

"ठीक छै। हमरा दिस सँ हर्ज नहि। कनेक राघवजी सँ सेहो पूछि लियनु।"

"कि राघवजी?"

सबहक नजरि राघव लला पर आबि स्थिर भ' गेल रहनि। धुआँयल मुखाकृति... झड़कल-झड़कल। कारी झामर ठोर...। तमाकुलक योग सँ गनगनायल गाँजाक लाली प'ल उठबिते आँखिक डिम्हा सँ हुलकी देब' लागल रहनि...।

"ठीके छै। जे सबहक विचार से हमरो...।"

आब भोज। नक्षत्र मंडलीक अनुभवी पाकशास्त्री सभ उनटि-पुनटि क' एहि मुद्दा पर विचार करय लगलाह...। खूब घमर्थन भेल...। अन्ततः निर्णय देल गेल—

"एकादशा दिन यदि संभव होअय तँ तुलसी फूल वा कनकजीर वा करिया कामोदक पुरना अरवा चाउर। जँ से उपलब्ध नहि भ' सकय तँ बासमती तँ अबस्से होअय। फेर राहड़िक दालि...सात टा तीमन...बड़, बड़ी, पापड़, दही, चीनी, सकड़ौरी आदि-आदि।"

"आ द्वादशा दिन पूड़ी-जिलेबीक भोज की करबह हौ सरबन! जखन एतेक भेबे केलै तँ बनियाँवला भोज की करबह। ओहुना कनिञा काकीक भोज लेल सबहक मोन टाँगल छै...। से दही-चूराक करह। भगलपुरिया कतरनी चूरा... कम सँ-कम चारि बेर अहगर क' छल्हिगर दही...चीनी...डालना...तीलक अँचार...आलुक अँचार...नोन-मिरचाइ आ अंत मे बुनियाँ...की?"

"ठीक छै ने सरबन बाबू?"

"मुदा, इस्टीमेट?"

"बनाब' हौ गोपाल। तोँ तँ हिसाब-किताब मे माहिर छह। बड़का कक्का आ भुटकुन बाबा सँ पूछि लहुन। आ अहूँ लोकनि विचार-सहयोग दियनु मास्टर साहेब आ नेता जी...।"

एस्टीमेट बनल। श्राद्ध आ भोज दुनू मिलाक' प्रायः डेढ़ लाखक! सरबन बाबूक हवा गुम्म आ राघव लला सटकदम्म...।

"की सरबन बाबू, भेल ने?"

सरबन बाबू दुनू भाँइ केँ चुप देखि ठीकेदार साहेब केँ नहि रहल गेलनि, "एना चुप किऐ छी? टकाक दिक्कति अइ? ई दिक्कति कोनो दिक्कति छै? असल बात तँ ई जे अहाँ सभ चाहैत की छी? जँ चाहैत छी तँ व्यवस्था भ' जेतै। हम कोनो समाज सँ बाहर थोड़े छी? आ जँ अवसर पर काज नञि आबय तँ धन बेकार। कथी? सधयबाक चिन्ता? भक्क! अरे माय-बाप फेर घुरिक' नहि अबैत छथिन। ओ पुत्र केँ जन्म कथी लेल दैत छथिन? एही लेल ने जे पुत्र समय पर पुरुषार्थ देखाबय? एहन श्राद्ध करय... एहन ब्रह्मभोज करय जे उद्धार क' देअय... स्वर्गक फाटक फोलि देअय। आ से अवसर उपस्थित अछि अहाँ सभक समक्ष। आब आवश्यकता अछि पुरुषार्थ देखयबाक।"

"ठीके तँ कहैत छथि भाइ। बेसी सोचल नहि जाओ। अरे, समय पर पाइ आपस क' सकबनि तँ बेस, नहि तँ टीसन लग सड़कक कात महक जे दसकठवी गाछी अछि सैह लिखि देबनि भाइ केँ। ओहुना आब गाम महक जमीनक प्रति मोह बेकारे। गाछिओ तँ उजड़िए गेल अछि...।"

ठीकेदार साहेबक मुंशी भोगी झाक मंतव्य नीक जकाँ बूझि रहल छलाह सरबन बाबू। गँजेड़ी

राघव बूझय वा नहि। जमीनक ओइ टुकड़ी पर बहुत दिन सँ नजरि छनि ठीकेदार साहेबक। ओ ओत' मार्केट कॉम्पलेक्स बनाब' चाहैत छथि। सामान्य स्थिति रहैत तँ सरबन बाबू ठीकेदारक एहि कूटनीतिक चालिक जबरदस्त जवाब दित'थनि...। मुदा, एखन तेहन ने उलंग फँसल छथि जे कोनो आन बाटे ने सूझि रहल छनि। के देत डेढ़ लाख रुपैया? जे देत से बदला मे किछु-ने-किछु चाहबे करत। निःस्वार्थ मदति आब के ककरा करैत छै? कम-सँ-कम ई समय पर द' तँ रहल अछि। सरबन बाबू चारू दिस तकलनि...। सबहक दृष्टि मे एक्के टा आग्रह। हँ कहि दियौक ने। सपूत बनू...अपन नाम कें सार्थक करू...!

"हम तँ तैयार छी। मुदा, एक बेर राघव जी कें सेहो पूछि लियनु।"

"की राघव जी?"

ठीकेदार साहेब आ हुनक मुंशी भोगी झा कें बेछिल्ले बाँस धाँसि देबाक योजना मोनहि मोन बनबैत आ तत्काल स्थगित करैत राघव लला कें प्रश्न सुनितहि लगलनि जेना केओ हुनक पौरुष कें ललकारि रहल होनि। क्रोध बाट बदलि क' सरबन बाबू पर केन्द्रित भ' गेलनि—

"देखै जाइ जाउ। हम कोनो मउगीक साया मे घुसिया क' रह'वला मर्द नहि छी। सभ कें अपन फिकिर कर' लेल कहियौ। राघव मर्द अछि आ मर्द वला बात कहत। आ मर्दवला बात वैह अछि जे लागय से देआइ, मुदा बाजय रसनचौकी...।"

पित्त तँ सरबन बाबूक सेहो लहरलनि, मुदा गरा मे उतरी तँ हुनके छलनि। दबा गेलाह...।

## अजेय योद्धा सभक पराक्रम...

से आइ द्वादशाक जबरदस्त भोज भ' रहल अछि...। लगैए पूरा गाम उनटि आयल अछि...। हाथ जोड़ि क' सबहक स्वागत करैत दुनू भाँइक आग्रह, "मोन भरि खाइ जाउ। जे वस्तु जतेक चाही से लिय'। कोनो वस्तुक कमी नहि।" कमी किऐ रहतै? ठीकेदार साहेबक सहयोग देखि भरि गामक युवक लोकनिक उत्साह फरकि उठल छलनि...। संगहि सहयोग छलनि भमरपुराक सोगारथ यादवक।

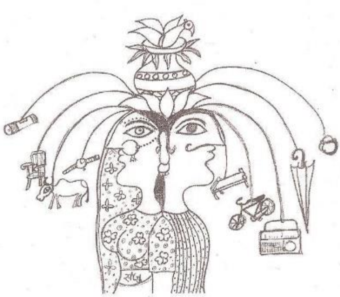
सोगारथ यादव। सरबन बाबूक परम मित्र। प्रखंड राजनीतिक संगी। ढढ़िया, मिल्की, खजुबारा, भभरपुरा, खेरिया टोल, राढ़ी माने ई जे परोपट्टाक सभ गाम छनि मारल गेल...। महिसबार सभ कें सोझे बथाने पर जा पकड़लनि सोगारथ बाबू, "हौ भाइ सभ, साल भरि तँ देहातक दूध एकत्र क'...पानि मिला...ड्राम मे भरि...विदाउट टिकट जनता ट्रेन सँ जाक' दड़िभंगा मे बेचिते छह...चानी कटिते छह...। कहियो क' किछु पुण्यो कमाबह। बस चारि दिनुका दूध दएह। बूझ' जे हमरे दैत छह। चारिम दिन एक-एक टा पाइ गनबा लएह...।" सोगारथ यादवक निशाना कतहु खाली जानि। ततेक ने दूध भेलै जे सय तौला...नहि-नहि, तौला नहि खोर मे पौरल गेल दही...।

"अढ़ाइ सय खोर...।"

"तँ तोरा माने की? अट्ठारह मन अरवा चाउर आ बीस मन चूड़ा खयनिहार गाम मे एहि सँ कम मे की होइतै?"

से दुनू भाँइक आग्रह जे मोन भरि खाइ जाउ आ कामना करै जाउ जे कनिञा काकी कें पइठ होइन...। पंक्तिबद्ध आसन जमौने भोज खयनिहार सभ...। एक टा पाँति पच्छिम मुँहे तँ दोसर पाँति पूब मुँहे...। एहिना तेसर पाँति पश्चिम मुँहे तँ चारिम पाँति पूब मुँहे...। सम्मुखक दू पाँतिक बीच मे बारिक लोकनि कें अयबा-जयबा लेल रस्ता। एत' सँ ओत' धरि पाँति-पाँति मे कुम्भकोपरिदधिचिपटान्नशर्करालवणव्यंजनानिमधुराणि च सँ जूझैत लोक सभ...। चलैत मुँहक चपर-चपर...। बारिक लोकनिक 'ई लाबह हौ', 'ओ लाबह हौ' केर गुंजित स्वर...। सघन भ' गेल अन्हार सँ लड़ैत जेनरेटरक पचासो ट्यूब-लाइट...जगमग...जगमग...सभ किछु जगमग...।

समाजक पैघ-पैघ नाकवला लोकसभ मे अपना कें अग्रगण्य बुझनिहार अल्लाँ बाबू आ फल्लाँ बाबू लोकनि पहिल खेप मे नहि बैसलाह अछि। ओ लोकनि दोसर वा तेसर खेप मे बैसताह। एखन तँ ओ सभ पाँति सबहक मध्य मे टहलैत कखनहुँ भोज खयनिहार सभ सँ दहीक स्वाद वा डालना मे नोनक मात्राक मादे पूछि रहल छथि, तँ कखनहुँ बारिक लोकनि कें कोनो खास जगह पर खास वस्तु ल' क' पहुँचबाक निर्देश उछालि रहल छथि...।



मूड़ी गाड़ि तन्मय भ' भोजनलीन लोक सबहक लगन देखि जेना...जेना किछु मोन पड़ि रहल अछि...। हँ...कनिञे काकी कहैत छलीह खिस्सा...। मैथिल सभक भोजनपटुताक मादे सुनि इंद्रक घमंड फड़कि उठल रहनि। बड़का भोजन भट्ट छथि मैथिल सभ तँ हमरा ओतय आबथु। हम नोत दैत छियनि। हमर व्यवस्थानुरूप भोजन क' कय देखाबथु तँ हम इन्द्रासन हारि जायब। स्वीकार करताह? अप्पन पसिन्नक क्षेत्र मे आबि फँसल शत्रु कें देखि जेना योद्धा कें हँसी लागि जाइत छै तहिना उर्ध्व अहंकारी देवराजक एहि मूर्खतापूर्ण चुनौती पर मुसकिया देलनि मैथिल लोकनि। स्वीकार क' लेल गेल चुनौती...।

परंच इन्द्रो तँ पक्का खिलाड़ी छलाह। भोजक जबरदस्त आयोजन कयलनि। अपार खाद्य-सामग्री। मुदा, आहि रौ बा! ई की? परम्परानुसार सम्मुख पाँति बनाक' बैसल मैथिल लोकनिक दहिन हाथ पर काँखि सँ ल' क' पहुँचाधरि बाँसक फराठी राखि जउड़ सँ लपटि क' बान्हि देल गेलनि। आब भोजन क' देखाबथु...। मुदा वाह रे मैथिल! ओ मैथिल केहन जे कोनहु परिस्थिति मे भोजन क' कय नहि देखाबय? सम्मुखक पाँति सभ कनेक लगीच घुसुकि आयल आ आमने-सामने बैसल मैथिल लोकनि एक दोसरा कें एक-दोसराक पात पर सँ खाद्य-सामग्री ल' बिनु दहिन हाथ मोड़ने खोआबे लगलाह...। जल पीबाक लेल वाम हाथ तँ मुक्त छलनिहेँ। इन्द्र चारू नाल चित्त! भोजनोपरान्त गर्वित मैथिल लोकनिक समक्ष ठाढ़ नतशीश इन्द्र अपन इन्द्रासन ग्रहण करबाक निवेदन कयलथिन...। मैथिलक उदार गर्वोक्ति भेलनि, "इन्द्रासन अपनहि राखल जाओ। हम सभ ल' क' की करब? मुदा, स्मरण रहय जे पुनः हमरा लोकनिक भक्षण-सामर्थ्य कें चुनौती देबाक भूल नहि होअय। ई हमर सबहक क्षेत्र थिक। एहि क्षेत्र मे हम सभ अजेय छी।..."

से आइ एक कात मे ठाढ़ हम एहन अजेय योद्धा सभक पराक्रम देखि रहल छी...। नजरि भोजस्थलक कात मे पाँति सभक छोर पर स्थित सड़क दिस जाइत अछि...। ओत' समाजक दीन-हीन वर्गक महिला, पुरुष, छौंड़ा, छौंड़ी

सभ अलम्यूनियमक थारी आ बट्टा नेने प्रतीक्षा मे ठाढ़ अछि...जे कखन लोक सभ भोजन समाप्त क' कय उठत आ ओकरा सभ केँ अघायल लोकक अँइठ उठयबाक अवसर भेटतै...। भूखक मारल लोकक एहि भीड़ मे सेहो कैक टा छोट-छोट वर्ग छै...। अपना सँ तथाकथित निम्न वर्गक लोक केँ कनेक फराके रहबाक निर्देश देबाक प्रकृति एहू वर्गक लोक सभ मे छै—से स्पष्ट देखाइ पड़ि रहल अछि...।

पच्छिम भर अकास मे लौका लौकब शुरू भ' गेलैए। नहू-नहू मेघ ऊपर उठि रहल अछि...। रहि-रहि क' लौकति लौका भोज खयनिहार आ खुयनिहार दुनू पक्ष केँ कनेक हड़बड़ा देलक अछि। किछु गोटे लोक सभ केँ शांतिपूर्वक भोजन करबाक आग्रह क' रहल छथि। लगैए इन्द्र फेर आइ गड़बड़ी पर उतारू छथि...।

ओम्हर गाम भरिक एकत्रित कुकुर सभ आपस मे कटाउझ क' रहल अछि। कटाउझ मे जे कुकुर हारि जाइत अछि से कनेक हटि क' विचित्र विलम्बित स्वर मे भूक' लगैत अछि... जेना कानि रहल हो...। ओह! ओहने सन...। जेना ओहि राति कानि रहल छल...। ओहि रातुक सघन निस्तब्धता केँ चीँरैत कुकुर सभक रुदनक ओ थरथराइत बिझायल छुरी...।

## आगि-पानि-लोह-पाथर...

ओही रातुक बाद आयल छल ओ जेठक एक टा पचपचायल भोर...। उसीन क' राखि देब'वला तौसायल कारी रातुक बादक ओ भोर...।

साँझहि सँ सड़ल गुमकी छलै...। पसेना-पसेना देह...कखनो सुखयबाक नाम नहि...। ऊपर सँ लाखनि सँ भरल डबराक मच्छरक प्रकोप...। एम्हर-सँ-ओम्हर दौगैत...गुम्हरैत...भूकैत...कनैत कुकुर सभ...। एक्को रत्ती चैन नहि...। छटपट-छटपट करैत राति बहुत नहू-नहू बीति रहल छल...। कखनो-कखनो डबरा महक जलमुर्गी सभ चियों-चियों क' उठैत छल। ककरो चैन नहि...। कोना होइतै? जेठ खतम होब' मे प्रायः छओ दिन रहि गेल रहै परंच बुन्न पड़बाक नाम नहि...। भरि दिन अकास सँ आगि बरिसैत छलै आ साँझहि सँ जे बोकर' लगैत छल पृथ्वी छेहा तौस से राति भरि उसिनाइत रहैत छल प्राणिमात्र...। पता नहि कहिया बुन्न पड़तै...?

हम ठेकानि नहि सकलियै जे कतेक राति भेल हेतै...। प्रायः डेढ़...नहि दू...। कनेक पुरबा सिहकलै...। पसेना सँ भीजल देह ठंडायल आ प'ल भरिआय लागल...। कुकुर सभक तेज झौहटि सँ निन्न टूटल...। एतेक किऐ लागि रहल छै...? भक्क! कुकुरो के कोनो ठेकान छै? जरूरी छै जे कोनो चोरे केँ देखि क' भूकल होअय? भ' सकैए दोसर टोलक कुकुर पर नजरि पड़ल हेतै कि शुरू भ' गेल हैत...। सोचैत-सोचैत फेर प'ल भरिआय लागल...। कखन बरखा अयलै...हम किछु नहि बूझि सकलियै...।

जेना एक टा झटका खाक' निन्न टूटल होअय...। बाहर सड़क दिस गुलगाल भ' रहल छलै...। क्रमशः तेज होइत...। कोठली सँ बाहर दलान पर अयलहुँ। भोर भ' चुकल रहै मुदा एखन सूर्योदय हेबा मे किछु विलम्ब रहै। हमर घरक पूब द'क' जे रेल लाइन गेल अछि—दखिन-पूब सँ उत्तर-पच्छिम दिस—तेम्हरे लोक सभ जा रहल छल...। की बात छै? हम किछु आगाँ बढ़लहुँ...। ओकील ककाक दलान पर किछु लोक ठाढ़ भेल रेल लाइन दिस इशारा करैत बतिया रहल छलाह...। हुनकर सभक तर्जनी केँ पाछाँ करैत हमर नजरि देखलक जे रेल लाइनक आस-पास किछु महिसवार, हाथ मे लोटा नेने 'पोखरि दिस' जयबा लेल बहरायल, किछु भलेमानुस आ ज'न-बोनिहार केँ अढ़यबाक लेल विदा भेल, किछु कृषक लोकनि विस्मय आ दुःखक मुद्रा मे बहस क' रहल छथि...। एतेक फरकी सँ बात बूझब कठिन छल...।

"की भेलैए?" हम पुछलियै।

"लगैए क्यो कटि गेलैए।"

"के?"

"हौ, हमरा तँ लगैए जे काल्हि मैट्रिकक रिजल्ट बहार भेलै। कहाँदन बड्ड खराब रिजल्ट भेलैए। अबस्स कोनो फेल केलहा छौंड़ा कटि गेल हेतै।"

"नहि हौ, कोनो विद्यार्थी नहि रहल हेतै ओ। आइ-काल्हि ट्रेनक छत पर चढ़बाक बड्ड चलन भ' गेलैए। ओही मे सँ कोनो अगत्ती टपकि पड़ल हेतै।"

"ई अहाँ कोना कहैत छियै भाइ? ईहो तँ भ' सकैए जे कोनो तड़िपिब्बा वा गँजपिब्बा औंघरा गेल हैत रेल लाइन पर...आ...।"

जतेक मुँह ततेक बात। ओम्हर ओकील कका एहि सभ सँ निरपेक्ष मनोयोगपूर्वक अपन बड़द केँ सानी खुआ रहल छलाह।

"की कका, के कटि गेलैए?"

"पता नहि!" ओ हमरा दिस तकबो नहि कयलनि। नादि पर नजरि गाड़ने रहलाह। हुनक ई निरपेक्षता हमरा कनेक विचित्र जकाँ लागल। लागल जे हिनका जरूर बूझल छनि। कदाच् जानि-बूझि क' अपना केँ कोनो काज मे ओझरा क' रखने छथि। हम रेल लाइन दिस बढ़लहुँ।

"हौ बौआ, तों ओम्हर नहि जाह। तोहर करेज एतेक मजगूत नहि छह...बर्दाश्त नहि हेतह...।" ई हमर माय छलि जे पता नहि कखन सहटि क' पाछाँ-पाछाँ एत' धरि आबि गेल छलि।

"तों चिन्ता नहि कर। हम तुरंत आबि जायब। आ हमरा किछु नहि हैत। आब हम दस वर्खक ओ समीर नहि छी जे शोणित देखिक' रद्द भ' जायत।", हम आगाँ बढ़ि गेल छलहुँ।

हमर पाछाँ-पाछाँ लछमी सेहो ओही दिस जा रहल छलि। ओकर यैह रस्ते छलै। एही द' क' ओ नित्त हीरा बाबूक ओत' बर्तन-बासन कर' जाइत छलि। सामने सँ पप्पू आबि रहल छल। पूछलियै तँ ओ कहलक, "एतेक तँ निश्चित अछि जे कोनो स्त्री कटल अछि। पैघ-पैघ केस छै। हमर हिम्मत नहि एलाउ कयलक जे लग जाक' देखियै। देखैं नञि छियै जे ककरो लग जयबाक साहस भ' रहल छै? सभ दस हाथ फटकिए सँ देखि रहल अछि...आ देखिक' अपन-अपन बाट ध' रहल अछि...। एहन भयानक दृश्य नहि देखल भाइ...। हमर तँ मोन कोनादन क' रहल अछि...। हमरा जाय दिय'...।" पप्पू घर दिस बढ़ि गेल।

तावत लछमी हमरा सँ आगाँ निकलि रेल लाइन पर घटनास्थल लग पहुँचि चुकल छलि...। आगाँ बढ़ैत हम देखलहुँ जे ओ पुरुष सभक गोल केँ चीँरैत भीतर गेलि...। "अरे बाप रे बाप! दैबा रे दैबा! ई की भेलै रे दैबा। कनिञा काकी अय कनिञा काकी! ई की कयली अय कनिञा काकी?", लोकसभक गोल मे घेरायल लछमी भोकरि रहलि छलि...। ओ देखाइ नहि पड़ि रहलि छलि, मुदा ओकर करुण-तीक्ष्ण स्वर गूँजि रहल छलै...। आब कोनो संदेह नहि रहि गेल छलै...। हम लपकलहुँ...। गोल मे पैसलहुँ...। हे भगवान! हिला क' राखि देब'वला भीषण वीभत्स दृश्य छल...।

कनिञा काकी, ओ कनिञा काकी, जे वृद्धावस्था दिस डेग बढ़ा चुकलाक बादो सबहक लेल कनिञे काकी छलीह...जे बाट पर चलैत काल एना लगैत छलीह जेना धरती सँ पूछि-पूछि क' डेग बढ़ा रहलि होथि...। जे धरतीए जकाँ सर्वसहा आ अन्तर्मुखी छलीह...जे प्रत्येक जूड़शीतलक भोरे टोल भरिक नवयुवक लोकनिक चानि ठंडा देब' लेल बासि जलक लोटा नेने आबि जुमैत छलीह...। जे तिला सँकराँति दिन सभ केँ ताकि-ताकि क' तिल-चाउर हाथ मे थमा दैत पूछैत छलथिन, "बौआ तिल बहब' ने?" से कनिञा काकी आइ रेलक पटरीक आस-पास रोड़ा सभक ढेर पर खंड-खंड भेलि छिड़िआयल पड़लि छलीह...। ओह! हे भगवान!

रेलक पुबरिया पटरीक ओइ पार दुनू टाँग...दुनू पटरीक बीच मे धड़ आ पछबरिया पटरीक एहि पार मुंड...। आन-आन अंग जत' छिड़िआयल छलै ओतहि मुंडक स्थिति कनेक

विस्मयजनक! लगैत छलै जेना केओ ठोढ़ीक नीचाँ सँ सटाक' घेंट कटने होइक आ ओरिया क' रोड़ाक ढेर पर राखि देने होइक—उर्ध्वमुख। मुंडक केस माथ सँ एकदम सटल छलै...। चँछायल पीयर चेहरा पर सामने देखैत पथरायल निर्जीव निर्वाक आँखि मे उदासी जेना जमि गेल हो...। केम्हरो सँ कोनो कोण सँ देखतियै तँ हरायल आँखि जेना सोझे अहीं केँ देखैत अनुभव होइत...। उपरका चारि टा दाँत निचला ठोर मे धँसल...। आश्चर्य! शोणितक दर्श नहि...। लगैए बरखा बाद मे आयल रहल हेतै...। धोल-पखारल लहास आर भयावह लागि रहल छलै...।

आनन-फानन मे खबरि पसरि गेलै। कनिञा काकीक दुनू पुत्र आ पुतोहु माथ-छाती पीटैत आबि चुकल छलथिन। दुनू भाँइ रेलवे पर ओंघरा-ओंघरा क' कानि रहल छलाह। ओम्हर दुनू देयादिनी सेहो छाती पर दुहत्थड़ मारैत घ'ना क' रहल छलीह...। लछमी आब दुनू केँ सम्हार' पर लागलि छलि...। बहुत कारुणिक दृश्य छलै...।

आब जखनकि स्थिति प्राय: स्पष्ट भ' चुकल छलै तँ त्वरित निर्णय लेब' मे माहिर लोक सभक विचार भेलनि जे एहि सँ पहिने कि थाना मे खबरि होइक आ गुंडा बैंकक मैसेन्जर जकाँ दारोगा सदल-बल आबि जुमय, दाह संस्कारक काज सम्पन्न क' लेल जाय...। एक बेर जँ लहास छाउर भ' गेल तँ फेर दारोगा की क' लेत? चलू आब जे भेलै से भेलै। शीघ्रता करै जाउ...।

फेर जल्दी-जल्दी मे लोक सभ लहासक टुकड़ी सभ केँ बीछि-बीछि क' बोरा मे ठुँसलक...खाट पर लादि उठौलक...मटिया तेलक कंटर लेल गेल...बाड़ी-झाड़ी मे जे बाँस-राहठ भेटलै से उठबैत गेल...आ भागल श्मशान। आनन-फानन मे डेढ़-दू घंटा मे कनिञा काकी केँ फूकि-फाकि क' सुड्डाह क' देल गेलनि...। पँचकठिया फेंकलाक बाद कठियारी सभ बाधे-बाधे बढ़ल...खिरोइ दिस...धूर पकड़ने...आगाँ-पाछाँ...पंक्तिबद्ध। "देखै जाइ जइह'। सम्हरिक'। दोसराक पयर पर पयर नहि लाग'। ...आ केओ गोटे घुरिक' तकिह' नहि। अकाल मृत्युक मामिला छै...नहि तँ अपनहि बझिह'...।" बड़का कक्काक निर्देश केँ सभ चुपचाप सुनि लेलक...। कुल्लम पन्द्रह गोटे तँ रहबे करी। दुनू भाँइ सरबन बाबू आ बाकी हम सभ तेरह गोटे। ककरो मुँह फोलबाक साहस नहि भ' रहल छलै...। जोश मे, संस्कार मे सम्मिलित होयबाक लेल, आबि तँ गेल छल लोक मुदा आब एक टा विशेष प्रकारक अदंक करेज केँ दलकौने छलै...। सभ खेते-खेते धूर पकड़ने जा रहल छल...। सड़क पकड़बाक साहस नहि भ' रहल छलै। यदि पुलिस आबि गेल होइक तखन...? ओना नेता



जी सोझे मोटरसाइकिल सँ थाना भागल हेताह। सरबन बाबूक आग्रह पर भमरपुरा सँ सोगारथ यादव केँ सेहो संग क' नेने हेथिन। एक नम्बरक खच्चड़ अछि चौकीदार। तुरंत साइकिल सँ थाना लेल विदा भ' गेल हैत। मुदा नेता जी तँ मोटर साइकिल सँ गेलाह अछि! ओ अबस्स पहिनहि पहुँचि गेल हेताह...। तथापि यावत् ओ घुरिक' नहि अओताह तावत् की कहल जाय...।

कतेक समय भेल रहल हेतै? बेसी-सँ-बेसी दस...। मुदा बरखाक बाद स्वच्छ भ' गेल अकास सँ एखनहि तिक्ख रौद बरस' लागल छलै। लागि रहल छलै जेना चानि चनकि जेतै...। सभ गोटे एक टा गाछी मे विलमि गेल। केओ ककरो सँ नजरि नहि मिला रहल छल...। वर्तमान प्रसंग पर केओ चर्च नहि करय चाहैत छल। अनर्थक भीषण विशिष्टता आ मात्रा केँ सभ अटकारि रहल छल। दाह-संस्कारक गैर-कानूनी पक्षो केँ सभ जानि रहल छल...। "चलै जाह हौ। शीघ्रता करै जाह। आब सोझे खिरोइ पर!"

जेठक कड़कड़ायल रौद मे लहालोट भेलि खिरोइ पस्त पड़लि छलि...। धार कहाँ छलै...। एक तँ ओहिना प्रतिवर्ष बाढ़िक संग आयल बालू सँ भथैत-भथैत ओ उत्थर भ' गेल छलै। दोसर एहि साल एखन धरि ठीक सँ बरखा कहाँ भेल छलै...। पुलक दक्खिन एक टा पैघ सनक खाधि मे जे जल छलै सैह...बाकी कतहु जलक निशान नहि। खाली नामे टा धार...। रातुक बरखा सँ पेटी महक बालुका-राशि जँ भिजलो रहल हेतै तँ से आब एखन हालक नाम नहि। एखनहि बालु उड़ि रहल छलै...। भोरे जे महिसबार सभ महिस केँ धोबाक क्रम मे खाधि महक जल केँ घोंकने छल से एखनो साफ नहि भेल छलै। ...ओहिना घोर मट्ठा। ओही जल मे सभ गोटे नहाइत गेल...। कनिञा काकी केँ तिलांजलि देलक...। पन्द्रह टा लोक तिल बहि देलक कनिञा काकीक...।

घुरैत काल हम बाट मे सोचैत रही...। की तिल बहबाक यैह अर्थ होइत छै? नजरिक समक्ष लोक तरसैत रहओ...तड़पैत रहओ...बेल तरक मारल बबूर तर जाइत रहओ...अनुचित अवांछित कलंक आ दंश सहैत रहओ...मुदा समय पर केओ कल्ला अलगाब'वला नहि...सभ अपना-अपना मे लिप्त आ जखन ओ टूटि जाय...टूटिक' छिड़िया जाय तँ ओकरा फूकि-फाकि क' सुड्डाह क' दियौ आ एक चुटकी तिल माथ पर ल' डुबकी द' दियौ...बस भ' गेलै तिल बहब...। तिल बहबाक अर्थ आर की होइत छैक?

कारी मड़र सूचना ल' क' आयल छल जे नेता जी आपस आबि गेलाह अछि। सभ टा मैनेज भ' गेलै...। चिन्ताक कोनो बात नहि...। सूचना द' ओ नरौछ लेल विदा भ' गेल...। महापात्र केँ सेहो खबरि करबाक छलै ने! मैनेज भ' गेलै। माने ई जे आब कोनो डर नञि। निधोख गाम जायल जा सकैत छल। तथापि पता नहि किएक कठियारी लोकनिक समूह मूड़ी गोंतने सड़क धयने गाम दिस जा रहल छल। खेत मे काज करैत ज'न-बोनिहार सभ ठमकि क' पन्द्रहो पराक्रमी व्यक्तिक समूह केँ देखि रहल छल...मुदा हमरा सभ मे सँ केओ एम्हर-ओम्हर देखय नहि चाहैत छल...। पता नहि के किछु पूछि देअय! रौद बड्ड तिक्ख भेल जा रहल छलै...। सबहक फेर चानि चनकय लागल छलै...। ओम्हर पता नहि किएक एक टा टिटही बड्ड व्याकुल स्वर मे टिटिया रहल छल...।

सरबन बाबूक आँगन मे राखल आगि-पानि-लोह-पाथर केँ छुबैत काल देखल जे टोल भरिक स्त्रीगण सभ जमा छलीह आ दुनू देयादिनी ओंघरिया दैत चिकरि-चिकरि क' लयात्मक ढंगें कानि रहलि छलीह...जेना कोनो हृदयविदारक करुण गीत गाबि रहलि होथि...। गीतक प्रत्येक पाँति मे श्रद्धेया सासु माक विशिष्ट दुर्लभ गुण आ ताहि सँ आब सदाक लेल वंचित भ' जयबाक अफसोसक मर्मस्पर्शी वर्णन आरोह-अवरोहक संग भ' रहल छल...। कोनहु सहृदय केँ द्रवित क' देबा मे समर्थ एहि रोदनाक यथेष्ट प्रभाव त्वरित-रुदन मे प्रवीण जनी-जाति सभ पर स्पष्ट गोचर भ' रहल छल...। ओ सभ कनितो छलीह आ दुनू देयादिनी केँ भरोस तथा साहस रखबाक परामर्शो द' रहल छलीह...। सघन उदासी आ करुण स्वर केँ अनुभव करैत कठियारी सभ आगि-पानि-लोह-पाथर छूलक...। कर्ता दुनू भाँइ केँ छोड़ि सभ अपन-अपन आँगनक लेल विदा होइत गेल...।

## नवारी दु:ख कि बुढ़ारी दु:ख...?

"जय हो...जय हो...महो-महो भ' गेलै..." दही तेबारा परसल जा रहल अछि। जे चुक्की मारने छलाह से पलथी मारि लेलनि अछि आ जे पलथी



मारने छलाह से चुक्की मारि लेलनि अछि। आसन बदलि क' सभ दही सुड़कि रहल छथि...।

"अरे के खुअबैत अछि आइ-काल्हि, एतेक हृदय खोलिक'?"

"कनिञा काकी छलीह मुदा भागमंत!"

"आह! ताहू मे कोनो संदेह? एहन सपूत सभ केँ जन्म देनिहार भागमंत नहि तँ आर की कहल जयतीह?"

"देखियनु पुण्यक प्रताप जे मर' सँ पहिने ककरो सेवा करबाक कष्टो देलथिन?"

"हँ यौ ठीके कहैत छी। एक तँ उत्तरायणक समय, दोसर मृत्यो कोना क्षण मे क्षणाक भेलनि। कोनो कष्टो तँ नहि भेलनि...।"

एक कात मे ठाढ़ हम चौंकि पड़ैत छी...। मोन होइत अछि जे किछु बाजी। मुदा, एखन बाजिक' लाभे की? आ ई टिप्पणी तँ मगन मोनक असहज टिप्पणी अछि। एहि पर प्रतिक्रिया की करब? आ कोन फूसि कहलकै? ठीके ने कहलकै...। की कष्ट भेल हेतनि...? दू सँ चारि मिनट मे सभ समाप्त...। नहि! हुनका कष्टे कहिया भेलनि? यदि भेलो होनि तँ ककरो कहलथिन नहि...। कहबो कयलथिन तँ कष्टक मादे नहि—निसाफ करय लेल...आ से...।

ओहि दिन अंत्येष्टि-संस्कार सँ घुरल रही। आँगनक मुँह पर माय भरि लोटा जल, नीमक पात आ ललका सुखायल मिरचाइ राखि देने रहय। मिरचाइ केँ दाँत सँ काटि...थुकड़ि...नीमक पात चिबा जल सँ कुरुड़ कयलहुँ आ पयर धोलहुँ। चापाकल पर जाय फेर सँ स्नान कयलहुँ...। जाह! दतमनि तँ आइ करबे नहि कयलहुँ...। कखन करितहुँ? छोड़! कोन भोजन करबाक अछि? ककरा धँसतै? मायक करेज! ओ किछु खा लेबाक हठ करय लागलि रहय। ओकरा टारय लेल अनेरे कनेक कठोर होइत हमर कंठ अवरुद्ध भ' गेल रहय आ आँखि मे नोर सेहो ढबढबा गेल रहय...। कहुना ओ अपन हठ छोड़ि देलक। हमरा ककरो सँ गप्प करबाक मोन नहि होइत रहय। ...एहि मनःस्थिति मे जखन हम अपन कोठली मे आबि पड़ल रही तखन कनिञा काकीक एहि अनपेक्षित आ भीषण परिणति पर सोचैत-सोचैत लागि रहल छल जे माथ फाटि जायत...। ई होयबाक नहि चाहैत छलै...। काकी एतेक दुर्बल तँ नहि रहलीह कहियो...। किछु सुनल आ किछु देखल छल जे जिनगीक हिंसक आँखि मे आँखि गड़बैत कनिञा काकीक मुखाकृति पर कहियो संभावित पराजयक आशंकाक लेशो धरि नहि झलकल छलनि...। तखन ई काज? कहीं एहन तँ नहि...?

एतनी टा रहथिन कहाँदन जहिया व्यास कका बिआहि क' अनने रहथिन हुनका। हुनका सँ पैघ तँ जाउत-जइधी सभ छलथिन। साड़ी धरि नहि सम्हारि पबैत छलीह। बेर-बेर लटपटाक' खसि पड़थि। जाउते-जइधी सभ नाम देलकनि—कनिञा काकी। फेर तँ सभक ओ कनिञे काकी बनि गेलीह। नेनपन मे हमरा आश्चर्य लागय जे हम तँ हुनका कनिञा काकी कहिते छियनि हमर बाबूजी सेहो सैह कहैत छथिन। ई कोना भ' सकैत छै? ई तँ पछाति जा क' स्पष्ट भेल रहय जे वस्तुतः टोलक संबंधे ओ हमर बाबुए जीक काकी लगथिन। जेँकि हमर घरक बगलवला आँगन मे ओ रहैत छलीह तेँ सभ केँ कनिञा काकी कहैत देखि हमरो वैह कहबाक अभ्यास भ' गेल रहय। हमरे किऐ? देओर-भैंसुर केँ छोड़िक' प्रायः सभ केँ सैह अभ्यास भ' गेल छलनि...।'

दाइ (दादी) कहैत छलीह जे कनिञा काकी पाँच बहीन छलीह। भाइ एक्को टा नहि। दरिद्र पिता बड्ड स'ख सँ नाम रखने रहथिन, जानकी। ओ पाँचो बहिन मे सभ सँ पैघ छलीह। अपना पाछाँ चारि गोट बहिन केँ ल' अनबाक दोखी छलीह। खिसिआयलि माय सदिखन दुरजरु कयने रहैत छलथिन, "अलच्छी! केहन जरल भाग ल'क' आयल जे...।"

जानकीक जीवन-संघर्ष छठमे वर्ख मे प्रारंभ भ' गेल रहनि। पिता भोरे स्नानक बाद शालिग्राम पूजन क' निकलि जाइत छलथिन जजमानक गाम। वंशी चौक लग भीष्मक टोलक वासी श्यामानंद पुरोहित केँ जजुआर गाम धरि नित्य पयरे जाय पड़ैत छलनि। हुनक दिनचर्या चारि बजे भोर सँ शुरू भ' जाइ छलनि...आ संगहि दिनचर्या शुरू भ' जाइ छलनि जानकीक...। भोरे उठिक' फूल लोढ़ब...पूजाक बासन माँजब...ठाँव करब...। आ तकर बाद मायक काज। रतुका अपैत-अँइठ बासन सभ माँजब...। घर-आँगन बहारब...चूल्हि नीपब...तरकारी काटब...चाउर बीछब...। एतेक भेलाक बाद माय तँ लागि जाइत छलथिन भानस-भात मे...एम्हर छोट-पैघ काज सभ जानकीए केँ कर' पड़ैत छलनि—जेना इनार पर सँ जल भरि क' आनब...छोट-छोट बहिन सभ केँ सम्हारब...। घरक लगे मे प्राइमरी स्कूल रहनि तथापि ओ कहियो स्कूलक मुँह नहि देखि पौलीह...।

जानकी केँ दू गोटे सँ भरपूर सिनेह आ वात्सल्य भेटलनि...। एक तँ पिता बड्ड मानैत रहथिन। नाम रखने रहथिन जानकी, मुदा आवेशेँ कखनो वैदेही तँ कखनो मैथिली कहि सेहो सोर करथिन। दोसर गोटे छलथिन बड़की पितिआइन। गाम भरि मे कथकहिनी आ गितगाइनक रूप मे प्रसिद्ध। कनेक कड़गड़ सुभावक। मायो अपन एहि बड़की देयादिनी सँ कनेक डेराइत छलथिन। तेँ जानकी पर तनल बड़की काकीक स्नेह-सुरक्षा-क्षत्र केँ देखि मोनहि मोन सुनगैत तँ बड्ड छलीह, मुदा प्रकटतः लहकि नहि पबैत छलीह। कनिञे काकीक मुँहें हम सुनने रही जे गीत गयबाक लूरि आ जितिया, सप्ता-विपता, बड़साइत, मधुश्रावणी आदिक कथा कहबाक आकर्षक-मोहक ढंग ओ अपन ओही बड़की काकी सँ सिखने रहथि...।

हुनका स्परण नहि रहनि जे नेनपन मे कहियो कनिञा पुतरा, सतघरा वा कितकित खेलबाक अवसर भेटल होनि। जनमिते परिस्थितिक हाथेँ वयस्क बना देल गेल छलीह। धूआ बालिकाक आ मोन वयस्कक। प्रायः एगारह वर्खक रहल

हेतीह तँ पंचपुत्रीक पिता कैँ हुनक बिआहक चिन्ता सवार भेलनि...। जजमान परमेश्वर ठाकुर लग चर्च कयलथिन तँ किछु दिनुका बाद ओ कहलथिन, ''मुरैठ मे हमर पिसियौतक टोल मे एक टा लड़का छै। दू भाइक भइयारी। पैघ भाइ विवाहित। छोट कुमार छै। कनेक पंडित प्रकृतिक अछि। सत्यनारायण पूजन, मूड़न, उपनयन, बिआह करा लैत अछि। देख'-सुन' मे बड्ड बेस। थोड़ेक जमीनो छै। यदि पसिन्न होअय तँ हम प्रयास करी। हम जनैत छी जे अहाँ कैँ कैँचाक दिक्कति अछि। तँ चिन्ता नहि कयल जाओ। बिआह रातुक खर्चो देया देब...। श्रीविहीन संत्रस्त श्यामानंद पुरोहित कैँ लागल रहनि जेना केओ थापड़ मारने होनि। मुदा निरुपाय ओ 'बेटी बेचना' कहयबाक संभावित कलंक कैँ अवधारैत जानकीक बिआह क' देलथिन। आ एहि तरहेँ बालवधू बनि जानकी उर्फ कनिञा काकी एहि गाम मे अयलीह...।

मायक उमिरक जेठ देयादिनी आ सिनेही पतिक छत्रछाया मे कनिञा काकीक जीवनक ई नव अध्याय पहिलुके अध्याय जकाँ छलनि। फेर वैह कड़ाचूर मेहनतिक दिनचर्या...निरन्तर...। प्राय: बारह बर्खक बाद देयादिनी कैँ लाग' लगलनि जे भीन होयब जरूरी छनि। हुनको सँ बेसी हुनक पुतोहु सभ कैँ। निरन्तर कलहक परिणति अन्तत: भीन-भिनाउज मे भेलै। जेठ जन जेठांशक नाम पर नीक-नीक खेत-पथार सभ चुनि लेलथिन। कनिञा काकी छटपटा क' रहि गेलीह...। मुदा, पैघ भाय कैँ पिताक आदर देनिहार धैर्यक धनी व्यास कका हुनका एतबे कहथि, ''अहाँ किछु नहि बाजू। भगवान पर भरोस राखू। सभ ठीक भ' जेतै।''

आर की कयलनि कनिञा काकी? अप्पन मेहनतिक अतिरिक्त भगवाने पर तँ भरोस कयलनि। कड़ाचूड़ मेहनति क' अपन गृहस्थी कैँ सम्हारलनि। तीन साढ़े तीन बीघा जमीन... बाढ़िक मारल। उपजाक नाम पर नामे लेल अन्न...। कने-मने पड़िताइ सँ होइत पतिक आमदनी...। एहन स्थिति मे गृहस्थीक गाड़ी ससरब मोश्किल रहनि। किछु करब जरूरी छलनि। हारिक' लाज-धाक कैँ ताख पर रखलनि ओ। बड़की काकी सँ सीखल विद्या काज देलकनि। अँगने-अँगने जाक' कथा-पिहानी कहब...गीत गायब...दनौरी, तिलौरी, चरौड़ी पाड़ि देब...अहिपन-पुरहर-कोबर लिखि देब...धान-गहूम फटकि-बना देब आदि-आदि काज सँ किछु आमदनी भ' जाइत छलनि...। गाड़ी कहुना क' ससर' लागल रहनि।

ओहि दिन कोठली मे पड़ल-पड़ल हमरा आँखिक आगाँ कथा कहैत कनिञा काकीक छवि नचैत रहल...। गोर दपदप छौंकी सन छरहर धूआ...छूरी सन पातर ठोर...कनेक भरल-भरल गाल...पैघ-पैघ किछु बजैत जीवन-रस सँ भरल आँखि...अँउठिया केस...कुल मिलाक' सोहनगर चेहरा...। हुनका कहियो हम लहक-चहक वला कपड़ा पहिरने नहि देखलियनि...। भ' सकैए कम उमिर मे पहिरने होथि। मुदा, हुनक जे पुरान-सँ-पुरान छवि हमर मानस मे अंकित अछि ओहि मे एक्को टा एहन नहि अछि जे ओ एकपढ़िया छोड़िक' कोनो दोसर साड़ी मे होथि...। जजमनिका मे कहियो काल पति कैँ ढंगगर रंगीन साड़ी भेटि जाइन तँ पेटी मे जोगा क' सैँति लैत छलीह—ई सरबन बाबूक कनिञा लेल...ई राघव जीक कनिञा लेल...आ ई गुंजाक लेल...।

अप्पन इच्छा-अभिलाषा-लालसा कैँ अनठियबैत दबवैत भोर सँ राति धरि अखंड मेहनति करैत ओ कोनो तरहेँ अपन घर कैँ सम्हारैत रहलीह...पाइ-पाइ कैँ जोड़ैत रहलीह ...आ संतान सभ कैँ पढ़यबाक प्रयास करैत रहलीह। बड़का बी.ए. क' ट्रेनिंग कयलथिन आ हाइ स्कूल मे शिक्षक बनि गेलथिन। अध्यापन सँ बेसी प्रखंडक राजनीति मे रुचि लैत अनौपचारिक रूपेँ सक्रिय रहनिहार सरबन बाबू कैँ आइ के नहि चिन्हैत छनि? छोटका राघव मुदा दिशा भटकि गेलथिन। हाइए स्कूल मे रहथि कि गामक गँजेड़ी सभक संपर्क मे आबि गेलाह। पढ़ाइ मे कम आ चिलम सँ एक बीत ऊँच धधरा उठाब' मे बेसी मोन लाग' लगलनि...। मैट्रिको नहि क' सकलथिन। एखन ठीकेदारी मे लागल रहैत छथिन। बेटी गुंजा बेस चंसगर रहथिन। फर्स्ट डिवीजन सँ सप्तम बोर्ड कयलथिन, तथापि बेटी रहथि। इच्छा रहितो पाँच किलोमीटर दूर कमतौल बालिका उच्च विद्यालय मे पढ़य नहि जा सकलीह...। आब तँ सासुरो बसना कतोक बर्ख भ' गेलनि...।

नहि जानि कनिञा काकी हमरा एतेक नीक किऐ लगैत छलीह? भ' सकैए हुनक वत्सल सुभाव हमरा अपना दिस टनैत होअय। खाहे कोनो आन कारण होइक, मुदा हमरा हुनका सँ पटैत खूब छल। हुनका सँ नहू-नहू स्वर मे कोनो लोकगीत वा कोनो कथा सुनब हमरा बड्ड नीक लगैत छल। एकर अतिरिक्त हुनक नेनपनक स्मृति हुनके मुँहें सुनैत हमरा लगैत छल जेना कोनो रहस्यमय प्रदेशक यात्रा क' रहल होइ...। एहन प्रसंग मे कखनो क' हुनक जीवन-संघर्ष आ वर्तमान मानसिक स्थितिक झलक सेहो भेटैत छल...। जेना-जेना धिया-पूता सभ पैघ भ' रहल छलनि...पढ़ि रहल छलनि... तेना-तेना हुनका लाग' लागल रहनि जे आब किछु बर्ख आर! तकर बाद सभ किछु ठीक भ' जायत। सबहक दिन फिरै छै। सभ दिन कतहु दुक्खे होइ? सप्ता-विप्ताक कथा मे सेहो रानी सँ पुछने रहथि देवी, ''नवारी दु:ख लेबैं कि बुढ़ारी दु:ख? दु:ख तँ कोनहु हालति मे भोगहि पड़तहु। अपराध भेल छौक तोरा पति सँ। मुदा, तोहर आत्मा छौक शुद्ध। तेँ इच्छा पूछि रहल छियौक। बाज! नवारी दु:ख लेबैं कि बुढ़ारी दु:ख?'', देवीक प्रकोप सँ भयभीत रहितहुँ रानी बुधियारी सँ सोचैत विनम्र-चिंतित स्वर मे चयन कयने रहथि, ''नवारी दु:ख तँ सहियो लेब मुदा बुढ़ारी दु:ख तँ सहलो ने जायत।'' सप्ता-विप्ताक कथा मे रानी कैँ तँ 'तथास्तु' केर आश्वस्ति भेटि गेल रहनि, मुदा कनिञा काकी कैँ? ओ स्वयं कहैत छलीह, ''बौआ, हमरा लगैत रहय जे आब किछु बर्ख आर... जीवनक अभिशप्त दीर्घ कालखंड बीतय वला अछि...। मुदा, कहाँ जनैत रही जे कथा कथा छैक आ जीवन जीवन...। कहाँ जनैत रही जे बसात कैँ मुट्ठी मे पकड़बाक प्रयास...!!''

सत्ते! कनिञा काकी कहाँ जनैत रहथि जे फसिल लगा क' संभावित उपजाक सपना देखैत मिथिलाक कृषक लोकनिक सपना जेना प्रतिवर्ष बाढ़ि मे बहि जयबाक लेल अभिशप्त छनि, तहिना हुनको सपना मात्र सपने भ'क' रहि जयबाक लेल अभिशप्त छनि...। से जनितथि तँ जेठ पुत्र कैँ शिक्षक बनैत आ छोट कैँ पेट्टी कान्ट्रेक्टरक रूप मे आगाँ बढ़ैत देखि एक टा मृगतृष्णा मे नहि फँसितथि...।

पोता-पोती कैँ तेल मालिश करैत...स्नान करबैत...सुग्गा कौर, मैना कौर खुअबैत...रंग-बिरंगक खिस्सा-पिहानी सुनबैत ओ निरंतर मगन रह' लागल छलीह। आब तँ हुनका एक्के टा लालसा छलनि। बस...किछु दिन नीक जकाँ सुख भोगि ली...। आ तकर बाद सिऊँथ मे सेनुर नेने आँखि मूनि ली...। सुनिक' एक दिन कतेक कातर भ' उठल रहथिन व्यास कका...। जेना कोनो बच्चा कैँ अपन माय सँ बिछुड़ि जयबाक आशंका त्रस्त क' देने होइक...।

प्राय: सत्तर वर्षक एहि बच्चा कैँ की कहल जाय? दिन-राति जानकी-जानकी रटैत रहयवला ई बच्चा कोना रहि पाओत हमरा बिना? एगारह बर्खक उमेर सँ ओ देखैत आबि रहल छथि अपन एहि बच्चा कैँ। दुनियादारी सँ प्राय: अनवगत ई बच्चा कथू लेल कहियो चिन्तित नहि भेल। किछु जरूरी होइक तँ जानकी! कतहु सँ घुरिक' आबय तँ जानकी! बड़की पुतोहु कैँ बड्ड अनसोहाँत लगनि। बुढ़ारी मे कतहु लोक एतेक...। जानकी...जानकी...जानकी! वाह रे जानकी! कहलकै जे हम सुनरी कि पिया सुनरा गामक लोक बनरी-बनरा! पुतोहु कैँ जे मोन

होनि से सोचथि आ बाजथि। मुदा, ओ स्वयं जनैत छथि जे प्राय: दसे बर्ख मे टुग्गर भ' गेल ई बच्चा पुन: टुग्गर भ' जयबाक आशंका सँ ग्रस्त अछि...। ओहि दिन पतिक भीतर सँ हुलकी दैत आ फेर सम्पूर्ण मुखाकृति पर पसरैत एक टा टुग्गर कातरता केँ देखि हुनका लागल रहनि जेना फेर सँ ब्लाउज भीजि गेल होइन आ एक टा दुधिया सुगंध पसरि गेल होइक...।

फेर कहियो व्यास कका लग ई बात बजबाक साहस नहि भेलनि...। आ एक दिन माघ मासक कुहेसल भोर मे व्यास कका अपनहि आँखि मूनि लेलथिन। हुनका आँखि मुनिते जेना कनिञा काकी अपना केँ कटाह एकाकीपनक हिमगीत चाँगुर मे फँसल अनुभव कयलनि। ओह! ओहि दिनुका हुनकर कानब...! तुलसी चौरा लग व्यास ककाक शव पर माथ पटकि-पटकि क', करेज फाड़ि कनैत कनिञा काकीक ओ छवि...।

एम्हर पतिक शव केँ लोक श्मशान ल' गेलनि आ ओम्हर ओ अचाँचके मौन भ' गेलीह...। जेना एकदम निस्पंद...जड! टोल-भरिक स्त्रीगण सभ जे-जे करबैत गेलथिन ओ करैत गेलीह। चूड़ी फोड़ि देल गेलनि...। मौन निर्विकार चेहरा नेने ओ सहयोग दैत गेलथिन...। फेर कोना-कोना अस्थि-संचय सँ ल'क' श्राद्ध धरिक ओरिआओन भेलै, काकी केँ किछु बूझल नहि भेलनि। दुनू भाँइ केँ जेना जे फुरयलनि... लोक सभ जेना जे परामर्श देलकनि...करैत गेलाह...।



## खिड़की पर अँटकल मुंड...

''बौआ...बौआ! उठह ने हौ! कतेक सुतबह?'', माय हमर कोठलीक केबाड़ पीटि रहल छलि। हमरा लागल जेना कोनो यात्रा सँ घुरि क' आयल होइ। संभवत: माय बूझि रहल छलि जे बेटा सूतल अछि। ''चाह बना दिय?'', मायक एहि प्रश्नक उत्तर मे हम स्वीकृतिसूचक माथ डोलबैत...नहि जानि किएक माय सँ आँखि मिलयबा सँ बँचैत चापाकल दिस बढ़ि गेल रही...।

चाह पीबैत रही तँ माय कहने रहय, ''जाह! कने घूमि-फिरि आबह। मोन बहटि जेतह...।'' विदा तँ भ' गेल रही मुदा, कोम्हर जाइ से निर्णय बाधित छल। रेल लाइन दिस? नहि! खिरोइ दिस? नहि-नहि!! तखन टीसन? हँ चली...। टीसन पर चाहक दोकान पर लोक सभक चर्चक विषय वैह छल जाहि सँ हम बाँच' चाहैत छलहुँ...। हम ओत' सँ उठि अरुणक पानक दोकान लग जा ठाढ़ भ' गेलहुँ। हम नित्त जतेक भाँग खाइत रही ताहि सँ प्राय: तिगुना हमरा खाइत देखि अरुणक आँखि विस्मय सँ फाटि गेल रहै...। हम ओकरा दिस ध्याने नहि देलहुँ आ विदा भ' गेलहुँ बाध दिस। बौआइत रहलहुँ...बौआइत रहलहुँ... कहुना सम्पूर्ण प्रसंग केँ बिसरि जयबाक प्रयास करैत रहलहुँ...।

प्राय: साढ़े आठ बजे राति मे घर घुरलहुँ तँ मायक खोंचारैत प्रश्न सँ बचबाक एक्के टा उपाय छल जे चुपचाप दू-चारि टा सोहारी खाक' अपन ओछाओन ध' ली...। आइ फेर निन्न निपत्ता छल...। क्रमश: जेना-जेना राति बीति रहल छलै तेना-तेना निसबद्ध भेल जा रहल छलै...। दूर दछिनबारी टोल दिस सँ कुकुर सभक झौहटि सुनाइ पड़ि रहल छलै... मुदा एम्हर एकदम निस्तब्धता...। कुकुर सभ निपत्ता...जलमुर्गी मुँह सीने...कतहु कोनो चूलचाल नहि...। पशुपति एक्सप्रेस धड़धड़ायल पास क' गेल...फेर पुन: सन्नाटा...। अचानक लागल जेना हमर कोठलीक अगुअइत मे किछु खड़खड़ायल होअय...। कथी भ' सकैए? हेतै कथू। के आँखि खोलओ?...फेर लागल जेना खिड़की दिस किछु भरिआयल सन। आँखि खुजि गेल...। नजरि खिड़की दिस उठल...। खिड़की पर कनिञा काकी छलीह...। कनिञा काकी नहि, कनिञा काकीक मुंड...। धड़ निपत्ता...। खाली मुंड...। उपरका चारि टा दाँत निचला ठोर मे धँसल...भीजल केस माथ मे सटल...चँछायल रक्तहीन धोल-पखारल निष्प्रभ चेहरा...सोझे हमरा दिस तकैत आँखि...। उँह! भ्रम थिक। भाँगक यैह लच्छन ठीक नहि। एकभगाह क' दैत अछि। झुट्ठे। कहाँ क्यो अछि? अनठिया क' सुतबाक प्रयास कयलहुँ तँ अनुभव भेल जे हृदयक गति तेज भ' गेल अछि...धक् ...धक्!...भक्! हम डरबूक नहि छी। कहाँ केओ अछि...? हमर आँखि फक् सँ खुजल...खिड़की पर अँटकल मुँड़ हमरा ओहिना निहारि रहल छल...। एक बेर, दू बेर, कैक बेर यैह क्रम चलल...। पसेना-पसेना भ' गेलहुँ...। तरासे कंठ सुखा रहल छल...। चौकीक नीचाँ लोटा मे जल राखल छल...मुदा हिलबाक साहस...? आँखि मूनि चिचिअयबाक प्रयास कयलहुँ, ''माय...माय...!''

''बौआ...बौआ! की भेलह? डर होइत छह की?'', माय केबाड़ फोलि देलक। ई केबाड़ फोलि देलाक बाद मायक कोठली सँ हमर कोठली जुड़ि जाइत अछि। ओ हमर चौकी पर आबि बैसलि। माथ पर हाथ देलक। आँचर सँ हमर माथ पोछैत जल पिऔलक।

''की भेलह?''

''माय, खिड़की पर कनिञा काकी छलीह!''

''दुर् बताह! ओ बेचारी कथी लेल अओतीह? ई तोहर अपने मोनक डर छलह...। पहिने कहने छलियह भोर मे जे रेलवे दिस नहि जाह। तों अपना केँ जतेक नहि चिन्हैत छह ताहि सँ बेसी हम तोरा जनैत छिअह। ओ किऐ अओतीह बेचारी? एहि ठाम हुनक की छनि? जँ रहितनि तँ एना जयबे कैरतीह?''

पता नहि किएक हम ओहि क्षण बिसरि गेल रही जे आब प्राय: चौबीस बर्खक भ' चुकल छी...। मायक कोर मे मूड़ी गाड़ि ठोहि पाड़ि क' कनैत रहलहुँ...।

''चलह बौआ! आब सुतबाक प्रयास करह। बहुत राति भ' गेलै। अच्छा, कने घुसकह, हमहूँ एतहि पड़ि रहैत छी।''

हमरा माय सँ अपन कोठली मे जाक' सूति रहबाक आग्रह करबाक साहस नहि भेल। हम गुबदी मारि लेलहुँ...। हमरा सूतल जानि नहू...नहू माय फोंफ काटय लागलि...। आ एम्हर हम सोचैत रही...माय कहैत अछि जे ओ हमरा हमरो सँ बेसी जनैत अछि। की सबहक माय अपन संतान केँ एहिना जनैत हेथिन? की कनिञा काकी अपन बेटा सभ केँ एहिना जनैत रहथि...?

## निरर्थक योजक-चिह्न...

ओहि दिन व्यास ककाक त्रयोदशा रहनि। प्राय: दस-एगारह बाजि रहल हेतै। कनिञा काकी अपन कोठली मे पड़ल-पड़ल आब सदाक लेल अनुपस्थित भ' चुकल पतिक विगत स्मृति केँ सहेजबा मे लागल रहथि कि आँगन मे हल्ला भेलै...। दुनू पुतोहु आपस मे लड़ि रहल छलथिन। पहिने ओ लोकनि एक दोसरा केँ हीन प्रमाणित कयलनि...। फेर एक दोसराक नैहर केँ गर्हित घोषित कयलनि...। संतोष नहि भेलनि तँ एक-दोसराक भाय-बाप केँ चिबा जयबाक धमकी देलनि...। तथापि किछु कसरि रहि जयबाक संदेह भेलनि तँ एक-दोसराक अंग-विशेष केँ खच्चारि केँ अँचार भरि देबाक दावा ठोकय लगलनि...।

ऐन एही अवसर पर सरबन बाबू आ राघव ललाक प्रवेश एहि लंका कांड मे भेलनि। ओहो दुनू गोटे परस्पर वाचिक आक्रमणक क्रम मे ई बिसरैत चलि गेलाह जे एक-दोसराक सहोदर छथि...। तामसक आधिक्य मे समक्ष ठाढ़ शत्रु केँ अगम्यागमनक आरोपी घोषित करैत एक टा हिंसक संतुष्टि सँ तृप्त होइत गेलाह...। कलह बढ़ैत गेलै... बढ़ैत गेलै। नौबति मारि-पीटि धरि पहुँचि गेलै...। ई तँ स्व्छ रहलै जे हल्ला सुनि किछु लोक आँगन मे जुटि गेलाह आ दुनू भाँइ केँ अलग कयल गेलनि। तथापि दुनू देयादिनी अपन नेनपन सँ ल'क' आइ धरि सिखलाहा गारि सभक बरखा करिते रहलीह...।

झगड़ा तँ कहुना शांत भेल, मुदा लोक सभ कारण जानि क' चकित छलाह। एतेक साधारण बात लेल एतेक झगड़ा? त्रयोदशा होयबाक कारणेँ आइ राति घर मे माछ वा माउस बनब स्वाभाविके छलै। मुदा माछ आनल जाय वा माउस, से निर्णय नहि भ' पाबि रहल छलै। सरबन बाबूक सार केँ माछ बेसी नीक लगैत छलनि तँ राघव ललाक ससुर केँ माउस। मामिला एतहि ओझरा गेलै आ बतकुच्चनि होइत-होइत एत' धरि पहुँचि गेल रहै...। आब तँ दुनू भाँइ अड़ि गेलाह जे चूल्हि साझी रहि नहि सकैए...। आइए आ एखनहि बाँट-चूट भ' जाय।

एहन कलह कोनो नव बात नहि छलै। पहिनहुँ कतोक बेर दुनू भाँइ टकरा चुकल छलाह। दुनू केँ एक-दोसराक नेत पर शंका छलनि। दुनू केँ होनि जे दोसर महाबेइमान अछि। एम्हर हम घर लेल खटैत-खटैत मरि रहल छी आ ओम्हर ओ चोरा-चोरा क' पाइ जमा करैत अछि। एहि शंकाक आगि केँ लहकयबाक काज दुनू देयादिनी समय-समय पर बड्ड योग्यतापूर्वक करैत आबि रहल छलथिन...। मुदा आइ, आइ तँ हद भ' गेलै। कदाचित दुनू पक्ष एहि दिनक प्रतीक्षा मे छल। कनिञा काकी अपन परिवार मे होइत एहि घिनाउन विस्फोट केँ टुकुर-टुकुर देखैत रहलीह आ सोचैत रहलीह जे की हमर खून मे एतेक स्वार्थ भरल छल...।

ओहि दिन तँ बूढ़-पुरान सभ जेना-तेना बुझा-सुझा क' दुनू पक्ष केँ शांत कयलनि, परंच भानस एक ठाम नहि भेलै। दुनू घर मे लोक सभ अपन-अपन इच्छानुसार भोजन बनौलनि। एम्हर रहि गेलीह माय। तँ ओहि दिन दुनू भाँइ जेना मातृ-भक्तिक आदर्श प्रस्तुत करय लेल तत्पर रहथि। पुतोहु सभ तँ आओर आगाँ-पाछाँ, "मा! ई एक बेर कहथुन तँ जे की खाय के मोन होइत छनि? ई निश्चिन्त रहथु मा! एकदम अमनिञा रहतनि। कनिको संदेह नञि करथु। ई जे कहथिन से बना देबनि। सेबैयक खीर बना दियनु? आकि मखानक? रसगुल्ला मँगा दियनु...?" तात्पर्य ई जे एक टा सद्य: विधवा जे-जे वस्तु खा सकैत अछि वा जे-जे उपलब्ध भ' सकैत छलै, सबहक नाम गना देल गेलै...। मुदा कनिञा काकीक एक्के रट, "नहि बौआ! नहि कनिञा! हमरा भूख नहि अछि।" ओ तँ यैह नहि बूझि पाबि रहल छलीह जे जाहि आँगन मे आइ एते अट्ठाबज्जर खसल होइक ओत' ककरो कंठ मे किछु कोना धँसि सकैत छै?

दोसर दिन भोरे अधिकांश पाहुन विदा भ' गेल रहथिन। टोलक दू-चारि टा लोक आ एक-दू टा पाहुन केँ ल' दुनू भाँइ दलान पर श्राद्धक खर्चक हिसाब-किताब करय लेल बैसलाह। मामिला फेर ओझराय लगलै। ओझराइत-ओझराइत पहिने गारिक अध्याय चललै...फेर लाठी चलबाक नौबति आबि गेलै...। आब एहन स्थिति देखि लोको सभ बाँट-चूट कइए देब उचित बुझलनि। ओहि दिन तँ नहि, मुदा दोसर दिन पंच सभ जुटलाह आ भीन-भिनाउजक प्रक्रिया प्रारंभ भेल। प्राय: सभ चल-अचल संपत्तिक बखरा लागि गेलाक उपरान्त एक टा एहन वस्तु बाँचि गेलै जकरा बाँटब असंभव छलै...। ओ वस्तु चक्कू, टेंगाड़ी, कुड़हरि वा आरी माने कोनो प्रकारक हथियार सँ काटिक' वा तराजू सँ जोखि केँ बाँटल नहि जा सकैत छलै। आखिर ओहि वस्तु केँ बाँटल जाय तँ कोना बाँटल जाय? दोसर, दुनू भाँइ मे सँ कोनो ओहि वस्तु केँ बाँटय नहि चाहैत छलाह। दुनूक इच्छा रहनि जे दोसर गोटे अपन दावा छोड़ि देअय आ ई पूराक पूरा हमरे भेटि जाय...। ओ वस्तु छलीह कनिञा काकी!

पंच लोकनि चकित छलाह! वाह रे मातृभक्ति!! आइ काल्हि एहन मातृभक्त कत' देखाइ पड़ैत अछि? पुतोहुक तँ बाते छोड़ि देल जाय। पुत्रो सभ मे एहन मातृभक्ति दुर्लभ भ' गेल अछि। बड्ड भागमंत छथि एहन माय। ठीके, व्यास जी बड्ड सोचि केँ नाम रखने हेताह अपन दुनू पुत्रक। नामक प्रभाव किछु ने किछु तँ पड़िते छै ने...वाह!

अंतत: पंचलोकनि दुनू भाँइ केँ एक दोसराक मातृभक्ति केँ सम्मान देबाक उपदेश दैत एहि बात पर राजी क' लेलनि जे ओ सभ 'पार' लगा लेथि। एक-एक सप्ताहक पार। माने ई जे कनिञा काकी बेरा-बेरी सप्ताह भरिक लेल दुनू परिवार रहल करतीह आ बेटा-पुतोहु केँ सेवाक अवसर दैत रहतीह। की? कनिञा काकी? कोनो आपत्ति तँ नहि? ओ की बजितथि? किछु बाजय लेल एक टा निष्कर्ष पर पहुँचब जरूरी छलनि। हुनक माथ पर चकरघिन्नी भेल छलनि...। ओ बूझि नहि पाबि रहल छलीह जे विगत दस-बारह बर्खक कालखंड मे बेटा-पुतोहुक व्यक्तित्वक जाहि अनपेक्षित पक्ष सँ ओ नहू-नहू परिचित भेलीह अछि ताहि सँ आजुक पक्षक सामंजस्य कोना बैसाबथि? ओ टुकुर-टुकुर तकैत रहलीह...। दुनू ठोर सटल रहलनि...। हुनक चुप्पी केँ स्वीकृति बूझल गेल...।

'पार' ओही दिन सँ प्रारंभ भेलै। पहिल पार भेटलनि जेठ पुत्र सरबन बाबू केँ, हुनके इच्छाक आदार करैत। ई घोषणा करैत पंचलोकनि पंचैती समेटबाक लेल उद्यत होइते रहथि कि आँगन दिस हल्ला उठलै...। हल्लाक केन्द्र पर नजरि पड़िते सभ स्तब्ध रहि गेलाह...। माँझ आँगन मे दुनू देयादिनी परस्पर भिड़ल छलीह...। असल मे भेलै ई जे पारक घोषणा होइतहि जेठ-जनी दुरुखाक केबाड़क पाछाँ सँ चूड़ी खनका क' सरबन बाबू केँ इशारा कयलथिन। ओ लग गेलाह तँ देखलनि जे पत्नीक हाथ मे मायवला पुरना टिनही बाकस छनि। हुनके दिया कनिञा काकी केँ अपन घर चलबाक समाद अगुतायल-हड़बड़ायल स्वर मे देलथिन जेठ जनी। समाद सुनियो क' कनिञा काकी 'की-करी, की-नहि'क सोच मे पड़ल रहलीह...। संपूर्ण घटनाक्रम हुनका लेल भीषण बेदनादायी छलनि...। एहि विखंडन केँ रोकबाक कोनो बाट नहि सूझि रहल छलनि। आब विखंडन केँ रोकबाक कोन कथा? ओ तँ भ' चुकल रहै। संपूर्ण वीभत्सताक संग! ओ स्वयं की करथि? कि एतबहि मे आँगन मे अनघोल मचल...।

प्रतिद्वन्द्वी देयादिनी जकाँ छोट जनीक सेहो नजरि प्रत्येक घटनाक्रम पर आ कान प्रत्येक स्वर पर रहनि। जेठजनी दुरुखाक केबाड़ लग सन्नद्ध छलीह छोट जनी दलानक कोठलीक खिड़की लग तत्पर! पारक घोषणा होइतहि छोटजनी जेठजनी केँ लपकि क' सासुक कोठली मे जाइत...सासुवला टिनही बाकस ल'क' धड़फड़ाइत दुरुखाक केबाड़ लग अबैत...चूड़ी खनकबैत...आ पति केँ किछु फुसफुसा क' कहैत देखलनि। निमिष मात्र मे ओ सभ बात बुझि गेलीह... 'गै दाइ! ई बात छैक? फुर्ती ने देखियौ! इह! लगैए हम छोड़ि देबै। आँखि आगाँ अपन आशा-अभिलाषाक अपहरण देखि जे चुप रहि जाय से एक बापक बेटी नहि।' ओ झपट्टा मारिक' बाकस केँ ध' लेलनि। छीना-झपटी मे दुनू देयादिनी असंतुलित भ' दुआरि पर सँ आँगन मे खसलीह। चोट भरपूर लगलनि...। पंच सभक नजरि जखन पड़ल रहनि तखन दुनू गोटे बाकसक कड़ी केँ पकड़ने अपना-अपना दिस घीचि लेबाक प्रयास क' रहल छलीह...। संगहि वाक्-युद्ध चालू छल...निरंतर। एक-दोसराक बेटा, घरवला, भाय, बाप सभ केँ सोझे गीड़ि जयबाक

धमकी देल जा रहल छल...।

अवाक् कनिञा काकी दुनू पुतोहु आ हुनका सभक मध्य योजक चिह्न जकाँ वर्तमान संदर्भ बुझबाक प्रयास क' रहल छलीह...।

पंच सभ दुनू देयादिनी केँ डाँटिक' फराक कयलनि आ बाकस केँ सबहक मध्य मे आनल गेल। कोन रहस्य छै एहि बाकस मे? किऐ दुनू देयादिनी एहि बाकस केँ हथियाब' लेल एतेक आफन तोड़ने छथि? ई बाकस तँ कनिञा काकीक दुरगमनिञा बाकस छनि जे हुनक बाबूजी बड्ड सख सँ देने रहथिन। तहिया जेहन रहल हो, मुदा आब तँ भ' गेल अछि पुरान... बिझायल...प्राय: जर्जर सन...। ताहि लेल एतेक तमाशा।

असल मे, दुनू बेटा-पुतोहुक मोन मे एक टा अद्‌भूत आशा बहुत दिन सँ सुगबुगा रहल छलनि...। ई सभ जनैत अछि जे ओ सभ दिन मितव्ययी रहलीह अछि...। कहियो हाथ खोलिक' खर्च नहि कयलनि। तखन तँ ओ अवश्य किछु-ने-किछु जमा करैत हेतीह। हुनका पास अवश्य कोसलिया हेतनि। एहन गुम्मी छथि जे बेटा-पुतोहु केँ हवा लागय देतीह...। जरूर बेटी लेल जोगाक' रखने हेतीह...। ओहो जे गुंजा अछि ने से माये जकाँ गहींर अछि...। मुदा ताहि सँ की? छोड़बनि थोड़े। आ गहना? भला गहना छोड़ल जाय?

राघव लला आ हुनक पत्नी केँ आशा छलनि जे जेंकि राघव छोट बेटा छथि तेँ मायक कोसलिया आ गहना पर हुनके सभक अधिकार छनि। ओम्हर सरबन बाबू दुनू व्यक्तिक सोचब छलनि जे एक तँ ओ जेठ छथि, दोसर आइयो माय सरबने बाबू केँ 'बौआ' कहैत छथिन तँ स्वाभाविके हुनक अधिकार बेसी मजगूत छनि। मुदा, दुनू पक्ष मे सँ कोनो एहि मादे प्रकटत: चर्च नहि क' रहल छल। दुनू पक्षक कान पर एहि आशंकाक उल्लू बैसल छलै जे जँ बात खुजि गेल तँ दोसर पक्ष अपन हिस्सा ने माँगि लेअय! चतुर कुटनीतिक जकाँ प्रयास कयल जा रहल छल जे अपार मातृभक्तिक प्रदर्शनक बलेँ माय केँ अपना संग राखि लेल जाय...। एक बेर माय अपन पक्ष मे, अपन हिस्सा मे आबि गेलीह तँ बाकसो अपनहि आबि जायत...। एहि लेल दुनू पक्ष साकांक्ष, सतर्क आ सन्नद्ध छल...। जखन खिड़की लग ठाढ़ि छोटजनी देखलनि जे दुरुखाक मुँह लग ठाढ़ि जेठजनी की क' रहल छथि तँ ओ जेना सेन्हे पर चोर केँ पकड़ि लेबाक अंदाज मे झपट्टा मारलनि आ पतिक कान फूकि पहिल पार अपन माथे सहर्ष स्वीकार करबाक चलल चालि खाली जाइत देखि जेठजनी पर खिसिया क' रहि गेल रहथि...।

पंच लोकनि कनिञा काकी सँ कुँजी ल' बाकस केँ फोललनि। ताहि खन कनिञा काकीक चेहरा मारकीन जकाँ मलिन-मटियौन भ' गेल छलनि...नीरक्त...निर्भाव...निष्प्रभ! आँखिक चारूकात असंख्य बादुर उड़ैत...कनपट्टी पर गिरगिट चलैत...। बाकस मे सँ बहार भेलै...दू-तीन टा पुरान साड़ी...सेनुरक एक टा गद्दी जे कदाचित साड़ी मे सन्हिआयल रहि गेल रहै...। व्यास ककाक एक टा पुरान मैलछौंह फोटो, खादीक एक टा पुरान दुहत्ती चद्दरि...आ एक जोड़ा पुरना खराम जे मृत्यु सँ पूर्व व्यास कका पहिरैत रहथि...बस्स! दुनू देयादिनी केँ विश्वास नहि भेलनि। दुरुखाक मुँह लग ठाढ़ि ओ लोकनि पहिने नहू स्वर मे फेर जोर सँ निर्देश देलथिन जे बाकस केँ उनटि-पुनटि क' देखल जाय। मौलायल आस नेने दुनू भाँइ सेहो एहि बात पर जोर देलनि। पंच मे सँ एक गोटे ईहो क' के देखा देलथिन। किछु नहि खसलै! सभ टा वस्तु ओही मे राखि क' ताला लगा बाकस कनिञा काकी लग राखि देल गेलनि। कुँजी सेहो हुनके द' देल गेलनि। एक टा पंच आग्रह करैत कहलथिन, "जाउ सरबन बाबू, आब माय केँ ल' जइयनु।" हताश सरबन बाबू मरल मोन सँ बाकस उठा माय केँ ल' क' आँगन गेलाह।

"ई जंजाल किऐ उठा क' ल' अनलहुँ। फेंकि दितियै डबरा मे वा द' दितियै ओकरे सभ केँ जकरा सभक करेज फटैत छलै एहि लेल।" आँगन मे ठाढ़ि पत्नी हुनका डाँटय लगलथिन। ओ कनेक थकमका गेलाह। ओम्हर छोट जनी केँ ई बात खबखबा केँ लगलनि। ई राँड़ी की बुझैत अछि? ओ खौंराक बेटी अछि तँ हमहू जलबारक बेटी छी। घुमा-फिराक' कूट करत तँ हम नञि बूझबै? आ हम छोड़ि देबै की?

"हमर सभक करेज किऐ फाटत? फटतै ओक्कर सभक जकरा अपन बेटाक सराध लेल ढेउआक कमी होइ आ जे निर्लज्ज जकाँ बाकस चोराक' भागय।"

एहि जोरगर आक्रमण सँ जेठजनी छिलमिला गेलीह। ओ आँचर उठाक' सूर्य दिस तकैत बजलीह, "हे दिनकर दिनानाथ! जनिह' तोंही...। जरल उगै छह...जरल डुबै छह...। धोंछी सभ हमर बेटा केँ नजरि पर चढ़ौने रहैए...। तोंही निसाफ करिह'। हे नाथ! गुँहखौंकी सभ केँ मुँह मे खदखद पिलुआ फरबिह' हे दिनानाथ!"

आब तँ छोटजनी केँ सनसना केँ लगलनि। एहन घिनौन आक्रमण! नञि। आब अप्रत्यक्ष आक्रमण सँ काज नहि चलत। प्रत्यक्ष आक्रमण बेसी चोटगर, "हमरा किऐ पिलुआ फरत? फरतौ तोरा सभ केँ। तोहर बेटा केँ...तोहर चाँद सन घरवला केँ...भाय केँ...बाप केँ...आ सेहो नेडरिया पिलुआ...।"

एवंप्रकारेँ प्रत्यक्ष आक्रमणक क्रम चलैत रहल...चलैत रहल...।

## अपूर्ण आशाक साइड इफेक्ट...

आ ओही दिन सँ शुरू भ' गेलनि कनिञा काकीक जीवनक एक टा नवीन क्रम...। कड़ाचूर मेहनतिक क्रम...। ओना तँ ओ अपनहि बैस क' खायवाली कहियो नहि रहलीह, मुदा आबक कथा किछु आने छलै...। जाहि बेटाक पार मे ओ रहथि, घरक कोन काज नहि करथि? चाउर बिछब, चिक्कस चालब, घर-आँगन बहारब, बच्चा सभ केँ सम्हारब...माने ई जे कोनो-ने-कोनो काज मे लागले रहैत छलीह...। तैयो जँ केओ कमी निकालि-निकालि क' फज्झति कर' पर तुलल रहय तँ की कयल जाय? दुनू पुतोहु अपन-अपन पार मे हुनका पर क्षुब्ध रहैत छलथिन। हुनका सभ केँ शंका नहि विश्वास छलनि जे ओ महाबेइमान छथि...नमक हराम छथि। जेठजनीक पार मे छोटजनीक दुआरि पर बैसि जायब वा हुनक बच्चा केँ दुलारब तथा छोटजनीक पार मे जेठजनी सँ बतिआयब वा हुनक कोनो सौदा दोकान सँ आनि देब कनिञा काकीक बेइमानी मे गनल जाइत छलनि...। रहरहाँ घुमा-फिराक' व्यंग्य तँ कयले जाइत छलनि जे ओ अपन सभ टा कोसलिया बेटी केँ द' देलनि...। एहन अवसर पर बेटी आ नातिक लेल होइत गारि-सरापक बरखा हुनक आत्मा केँ हेहरु क' दैत छलनि...। उनटि क' उत्तर देब वा आपत्ति करब हुनक स्वभाव कहियो नञि रहलनि। मोनहि मोन कूही होइत ओ एतबे सोचथि जे ओइ बेचारीक कोन दोख? ओ तँ अपनहि दैवक डाँग सँ थकुचायलि अछि। एकमात्र बारह बर्खक बेटा केँ कहुना क' पोसैत ओ कतेक कष्ट सँ जीवन बिता रहल अछि, से कोनो नुकायल छै? केकरा नञि बूझल छै? तैयो एतेक गारि-सराप।

जखन कखनो गुंजाक मादे सोचैत छलीह कनिञा काकी तँ लगैत छलनि जेना केओ करेज केँ पकड़ि क' निचोड़ि दैत होनि...। कतेक दुलारू रहय बापक! पतिक आगाँ बेटी केँ डाँटय के कहियो हिम्मति नहि भेलनि हुनका। से आइ...। कखनो क' अपन बेटी पर गर्व सेहो होइत छलनि। लगैत छलनि जे बेटी हुनको सँ बेसी साहसी छनि। अपना नवारी मे लाख कष्ट रहल होनि...कम-सँ-कम सिनेही पतिक छाँह तँ उपलब्ध रहनि...आ गुंजा केँ?

ककर भाग मे की लिखल रहैत छै, से के जनैए? जहिया व्यास कका बेटीक लेल वर देखि क' आयल रहथि तहिया कनिञा काकी केँ बड्ड संतोष भेल रहनि जे बेटी मात्र पौने कोस दूर

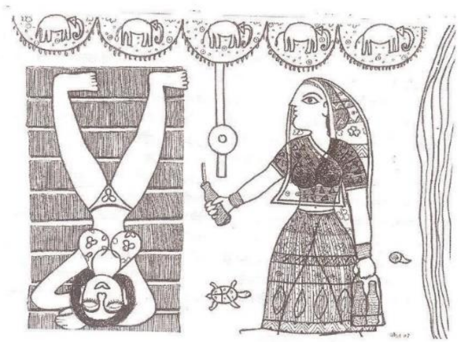
रहत। एहि गाम सँ पूब थोड़ेक दूरी पर खिरोइ आ तकर बाद ढढ़िया...। ढढ़ियाक पंडित उमाधर झा कें के नहि चिन्हैत छनि? परोपट्टा मे नामी...प्रसिद्ध वैदिक! तिनक पोता। गोर नार चकैठ सन धूआ। बी.ए. पास। की हेतै जे एखन कोनो नोकरी नहि भेलनि अछि? तत्काल उत्साहपूर्वक खेतिए मे लागल। संगहि गामक सार्वजनिक काज सभ मे आगाँ-आगाँ रहनिहार दुस्साहसी युवक। के जनैत रहय जे यैह दुस्साहस काल भ' जेतै।

सतासीक चढ़ल बाढ़ि मे लगनमा पुल लग खिरोइक उफनैत धार मे हेलबाक दुस्साहस ढढ़ियाक तीन टा नवयुवक कें गीड़ि गेल रहै...। ओही मे ओहो रहथि। सात दिनुका बाद जखन पानि उतरल रहै तँ कोस भरि दूर ततैला लग बबूरक झोंझ मे ओझरायल लहास भेटल रहै...फूलल-फूलल...किछु-किछु सड़ल सन। कहुना क' संस्कार कयल गेल रहै। एहीक संग गुंजाक सभ टा स'ख-मनोरथ जेना बाढ़िक संग बहि गेल रहै...। आब तँ कहुना क' बेटाक लेल जीबाक छलै...। से बस संघर्ष करैत जीबि रहल अछि...।

गुंजा कें बड्ड प्रेम आ भरोस छलै अपन भाय सभ पर। भाय सबहक विरुद्ध ओ किछु सुन' लेल तैयार नहि रहल कहियो। नेनपनो मे झगड़ा भेला पर यदि कोनो संगी ओकरा भायक गारि पढ़ि दैक तँ ओ किटकिटा क' संगीक मुँह नोंचि लेअय। आर जे गारि देबाक हो से दे, मुदा यदि हमर भाय सभ कें किछु कहबें तँ छोड़बौ नञि, से बूझि ले। भायक प्रति ई प्रेम बिआहक बादो बनल रहलै। तें ने ओ सभ साल दुर्गापूजा मे जे नैहर आबय तँ भरदुतिया मे भाय सभ कें बड्ड सिनेह सँ नोतैत छलि...आ टोलक छोट-पैघ बेटी-धी सभ कें प्रेरित करैत भरपूर ओरिआओन सँ सामा-चकेबा खेलैत छलि। कतेक विश्वास छलकै छलै ओकर आत्मा सँ जखन ओ बेस टहंकार सँ गबैत छलि—

*गाम के अधिकारी अहाँ सरबन भैया यौ*
*अहाँ राघव भैया यौ*
*भैया गोठ चढ़ि पोखरि खुना दिय'*
*चम्पा फूल लगा दिय' यौ...।*

मुदा, कहाँ सुनि सकलथिन भाइ सभ बहिनक करुण हाक कें। बहिनोइक श्राद्ध मे जे दुनू भाँइ नोत पूरि क' अयलाह, से जेना तकर बाद ढढ़ियाक बाटे बिसरि गेलाह...। राजनीतिक काज सँ बौआइत सरबन बाबूक लिस्ट मे ढढ़ियाक नामे नहि छलनि आ राघव लला, तँ सहजहि एक टा अलगे दुनिया मे मस्त रहैत छलाह। अभावग्रस्त गुंजा एक बेर पूसी पूर्णिमाक अवसर पर गौतम कुंडक मेला मे माय सँ भेट क' कय कहने रहनि जे भैया सभ कें कनी मदति करय लेल कहिअहुन...। मुदा भैया सभ तँ सुनिते मातर अपन-अपन रोदना ततेक ने पसारि बैसलथिन जे मायक मुँहक बात मुँहे मे रहि गेल रहनि...।



तैयो गुंजा साहस नञि छोड़ने अछि...। की भेलै जे नैहर आयब छोड़ि देने अछि? बापोक श्राद्ध मे नहि आयलि...। खूब जनैत छथि ओ अपन बेटी कें। अपन दुर्दशा माय कें देखाब' नहि चाहैत अछि...। जो गै बेटी! हम अपन अभागक अतिरिक्त तोरा किछु नहि द' सकलियौ...। यदि हमरा पास किछु रहैत तँ तोरा एना बेलल्ला नहि होब' दितियौ...।

आ एम्हर बेटा पुतोहु कें होइत छनि जे बेइमान बुढ़िया सभ किछु बेटी कें द' देलक...। सभ किछु? कथी-कथी? स्वार्थक आवेग मे हुनका लोकनि कें एतबो स्मरण नहि रहैत छनि जे हमरा पास रहबे की करय? गहनाक नाम पर मायक देल एक जोड़ी माकड़ी। ओहि मे सँ एक टा कें तोड़बा क' बड़कीक बेटा कें हनुमानी बनवा देलथिन तँ दोसर पर नजरि गड़ि गेल रहनि छोटकीक। ओहि सँ ओ बाली बनवा लेलनि। रहल टका! तँ यदि से रहैत तखन यैह दुर्दशा रहैत हमर आ हमर बेटीक...?

सोचैत-सोचैत कनिञा काकी अपन विगतजीवनक छानबीन करय लगैत छलीह...। कत' गलती भ' गेलनि? कत' चूकि गेलीह? जे किछु जहिया आमदनी होइत छलनि तकर पाइ-पाइ ओ परिवार कें बनाब' मे खर्च करैत रहलीह...। सख-सधोरि कें कोठीक कन्हा पर रखने छलीह...। तीर्थ यात्रा ककरा कहैत छै ओ कहियो नहि जानि सकलीह। बड्ड भेलनि तँ गौतम कुंड, अहिल्या स्थान वा बेसी-सँ-बेसी गंडेसर... पयरे...दर्शन-पूजा क' बिनु कैंचा खर्च कयने आपस...। सदा एक्के टा लक्ष्य! धिया-पुता सम्हरि जाय...मनुक्ख बनि जाय...आर की? कत' कसरि रहि गेलनि प्रयास मे? सत्य कही तँ ओ यदि कमी कयबो कयलनि तँ बेटिए संग...। ओहन चंसगर बेटी! कतेक इच्छा रहै ओकरा पढ़बाक। मुदा कोना जाय दितथिन कमतौल...। पाँच किलोमीटर दूर...केओ संगी नहि, बेटी जाति... ओह! यदि ओ पढ़ि-लिखि गेल रहितनि तँ आइ...। दुनू बेटाक बिआह बड्ड स'ख सँ कयने रहथि। कहाँ जनैत रहथि जे बिआहक लेल प्रस्थान करैत बेटा सभ कें परिछनक उपरान्त परम्परानुसार जे छाती सँ लगौतीह से जेना माय सँ बेटाक विमुखताक प्रस्थान-पर्व सिद्ध हेतनि...। अपना जनतबे पुतोहु सभ कें कोनो कम सिनेह देलथिन? दुनू पुतोहु कें हुलास सँ नव-नव नाम देने रहथिन—हीरा सुन्नरि आ फूल सुन्नरि। जेना आन-आन सासु लोकनि करैत जाइत छथि तेना ओ कहियो पुतोहु सभ कें कसिक' नहि रखलथिन। टोलेक देयादिनी छलथिन 'अरेरवाली बहिन'। ओ कहबो करथिन, ''कनिञा एना ढील देबै तँ पछतायब। कहबी छै, हल्लुक सवार घोड़ा फउद मारैए।'' परंच एहन अवसर पर कनिञा काकी खाली हँसि क' रहि जाथि। कहियो भारी सवार होयबाक प्रयत्न नहि कयलनि। किछु-ने-किछु हेर-फेर क' कोसलिया जमा करबाक लुतुक रहैत छनि स्त्रीगण मे। कोनो-कोनो चतुरी सँ चुपचाप लहनो लगबैत छथि। मुदा ओ कहियो एहि दिशा मे सोचबो नहि कयलनि...। ककरा सँ चोर 'बितथि? आ आइ हुनका पर आरोप मढ़ल

जाइत छनि...। आरोप नहि जेना कलंकक टीका...। अपन हाड़-हाड़ निकलल देह कें निहारैत हुनका लगैत छलनि जे कदाच टूटि क' रहि गेल अपन निराधार आशा-अपेक्षा कें देखि ओ लोकनि एतेक खिसिया क' रहि गेल छथि जे...। कदाच एही कारणें जिनक पार मे ओ रहैत छथिन तिनक तामस हरदम लहरल रहैत छनि..। कदाच तें ओहि सप्ताह भरि ओइ घर मे भात बहुत कम बनैत छै...। आ जतबा बनैत छै से कनिञा काकीक लेल नहि रहैत छनि...। हुनका लेल मकइ वा बड्ड भेल तँ गहुमक जनहा रोटी आ तरकारीक नाम पर किच्छो वा नोन-तेल। हुनका माछ-माउस वा पियाजु-लहसुन सँ दिक्कति होइत छनि। होइत छनि तँ होइत रहनु...। ओहि सप्ताह मे उपेति क' तीन-चारि दिन बनबे करतै...।

भीन भिनाउजक बादे सँ दुनू भाँइ दनादन प्रगति क' रहल छलाह...। गामक लोक कें देखि क' ठकमूड़ी लागि जानि। दुइए साल मे दुनू भाँइ दड़िभंगा मे लक्ष्मीसागर मोहल्ला मे छपकी पर डेढ़-डेढ़ कट्ठा जमीन ल' नेने छलाह आ एतय गाम पर तीन-तीन कोठली पक्का घर सेहो बना नेने रहथि। बस दलानवला भाग टा पुराने छलै...। माटिक भीतवला एक टा पैघ कोठली। एहि कोठली सँ आँगन दिस जाउ तँ एत' सँ ओत' धरि दुआरि जकर एक दिस एक टा एकचारी कोठली। एहि मे कनिञा काकी रहैत छलीह। दलानवला पैघ कोठली मे एक दिस चारि-पाँच टा माटिक कोठी सभ जे आब प्राय: खालिए रहैत छलै...कहियो तोड़ि क' फेंका जयबाक प्रतीक्षा मे। एहि कोठली मे केओ बाढ़नि-सोढ़नि नहि दैत छलै...। साझी चीज साँग पर...। कहियो क' मोन होनि तँ कनिञे काकी बहारि-सोहारि दैत छलथिन—पारवालीक उलहन सुनियो क'। कोठली सँ बाहर आउ तँ दलानक बरंडा पर एक टा पुरना चौकी राखल...। गर्दा सँ भरल। दलानक काजे कोन? सरबन बाबू कें गाम-गाम राजनीति करय सँ पलखति नहि आ राघव ललाक दलान छलनि गामक टीसन वा ब्रह्मस्थान वा पंचायत भवन जतय संगी सभक जुटान होइत छलनि...। के देखैए दलान कें? दुनू कें अपन-अपन परिवारक बेसी चिन्ता छलनि...। कहुना प्रगति करी...। से दुनूक प्रगति देखि कनिञो काकी चकित छलीह। जे लोकनि बापक श्राद्ध मे एक बीघा खेत बेच लेलनि...। से एही बीच मे एतेक पाइ कत' सँ आनि लेलनि? एहन अवसर पर ओ अपन कान छूबि बाबा वैद्यनाथ सँ माफी माँगि लेथि...। क्षमा करब हे बाबा! हमर नजरि नहि लगौक। काकीक बेटा तँ बेटा, पुतोहु सभ तँ आर होशियार छलथिन। मुट्ठी बान्हि क' खर्च करैत जाइत छलथिन। खास क' सासुक लेल तँ हुनकर सभक मुट्ठी किछु आर कसि जाइत छलनि...। ओ सभ किछु देखैत रहैत छलीह...बुझैत रहैत छलीह आ सहैत रहैत छलीह...।

गामक स्त्रीगण सभ प्राय: एहि बात लेल निवसइत रहैत छथि जे ओ चारि-चारि टा हरिबासर कयने छथि। मुदा, एहि दू बर्ख मे कनिञा काकी कतेक हरिवासर क' चुकल छलीह, से के जानय...। अपना कें साधिक' राखि देने रहथि ओ...। एम्हर हम कहियो हुनका मुख पर तृप्तिक लेशो नहि देखि सकल छलहुँ। सदिखन जेना गिल्ल छाउर अउँसल...। ईह! की सुन्नर अउँठिया केस रहनि हुनक। से आब धड़धड़ा क' पकैत-ओझराइत बगड़ाक खोंता भ' गेल छलनि...।

## इमलीक बूढ़ भूतहा गाछ...

''हँ-हँ! चल' दियौ...चल' दियौ...।'' चारिम बेर दही परसल जा रहल अछि...। दहीक बारिकक संगे चीनी, डालना, आ बुनियाँक बारिक सेहो गतिशील-सक्रिय छथि...। बेसी लोकक पेट भरि चुकल छनि। तैयो रसना मानि नहि रहल छनि...। छीलल माथ...चानन लेपल कपार...पीयर धोती, पीयर जनेउ आ भागलपुरी दोपटा सँ शोभित सरबन बाबू आ राघव लला हाथ जोड़ि-जोड़ि क' आग्रह क' रहल छथिन, ''हड़बड़ाइ नहि जाइ जाउ। सभ कें इच्छा भरि भोजन करय दियनु। कोनो वस्तुक कमी नहि...।''

जिनक पेट भरि चुकल छनि से मोने मोन अपन एहि मूर्खता पर पछता-खिसिया रहल छथि जे पहिने चूड़े बेसी ल' लेलाह। एतबे नहि, पहिले वा दोसरे बेर मे दही अहगर क' ल' लेलाह। ईहो नहि ध्यान देलनि जे गर्मीक पुरान दही खटगर होइत छै आ भोज मे तँ पहिने पुराने दही परसल जाइत छै। आब असली खायवला दही परसल जा रहल अछि...। मुदा, खाथु कोना? पेट मे जगह कहाँ छनि? आ बुनियाँ कोना खयताह? अपना कें संसारक सभ सँ बड़का उलूकनन्दन बुझैत ओ लोकनि मुँह लटकौने किछु बेसी अग्रचेती सभ कें देखि जरि रहल छथि जे कोना ओ सभ पहिने तँ हाथ बारने रहलाह आ आब हाथ-मुँह चारिम गेयर मे चला रहल छथि..।

हम सहटि क' कनिञा काकीक आँगन दिस बढ़ि जाइत छी। एत' अलगे अनघोल मचल अछि...। बाहर पुरुष वर्गक पहिल खेपक भोज आब लगिचायल छै। योजनानुसार स्त्रीगणक बिझो भ' गेल अछि। आब यावत पुरुष वर्ग भोजन क' कय उठत, अँइठ-कूठ उठाओल जायत, खरहरा देल जायत तावत स्त्रीगण कें पारस देल जेतनि। पूरा आँगन भरल अछि...टोल भरिक बेटी-धी आ बूढ़-पुरान स्त्री सभ सँ...। सबहक हाथ मे थारी आ बट्टा। ककरो-ककरो हाथ मे बट्टाक बदला लोटा। पारस परसल जा रहल छै। सभ कें पहिने ल' लेबाक हड़बड़ी लागल छै। दुनू देयादिनी अतिव्यस्त छथि।

''केओ छूटथि नहि। सभ कें भरि इच्छा दियनु। हे दाइ सभ, पहिने पारस ल'क' अपन-अपन आँगन ध' अबै जाउ। आ हे, आँगने मे नहि रहि जायब। जल्दी सँ घुरि क' अबै जाउ आ भरि इच्छा भोजन करै जाउ। अहाँ सभ कुमारि-बारि छी...भगवती स्वरूपा छी। अहाँ सभ जे भरि पोख खा लेब आ भगवती कें कहबनि तँ मा कें अवस्स पइठ हेतनि...।'' जेठजनी अपन बोल कें आर मधुर बनबैत आग्रह करैत छथिन।

''हँ-हँ किऐ नहि! जीबैत रह तँ गूह भात आ मुइला पर दूध भात। इह! नाटक ने देखू!! एहने पइठ भगवान अहूँ सभ कें देथि!!!'' चउदह बर्खक मुँहफट बुचियाक टिप्पणी कें सुनैत मातर ओकर बड़की बहिन कामिनी घबड़ा जाइत अछि। ओ बुचियाक मुँह पर तरहत्थी रखैत डँटैत अछि, ''बुचिया तोरा बाज' के ठेकान नहि छौ। तोहर ठोर पर बड़ी बड्ड पाक' लागल छौक। हरदम लुबलुब करैत रहैत छै। बेसी उचितवक्ताक सारि नञि बन।'' ई कहि कामिनी एक ठुनका बुचियाक गाल पर दैत अछि।

ई जेना बड्ड अनसोहाँत लगैत छै गितिया कें। बुचिया ओकर संगी छै। दुनू मे 'फूल' लागल छै। आब कामिनी कें किछु कोना कहौक गितिया, मुदा ओकर अप्पन जीह कें के रोकि लेतै, ''अयँ यै जलबार वाली भौजी! गुंजा दीदी कें नहि देखै छियनि। एहू बेर नहिए बजौलियनि? जाय दियौ। आबि क' की करितथि? माय कें तँ चिबाइए गेलियनि अहाँ सभ...।'' गितियाक एहि कथन पर आस-पासक सभ चौंकि पड़ैत अछि। केओ बजैत तँ नहि अछि किछु, मुदा सभ कें तामस बड्ड होइत छै। ई दुनू धोंछी सभ लाहेब करत। जँ जलबारवाली वा खौंरावाली सुनत तँ पता नञि की हैत? भोज खाइते रहि जयतीह छिछिआहो सभ! मुदा, लगैए, दुनू देयादिनी कदाच बुचिया वा गितियाक टिप्पणी नहि सुनि पौलनि अछि। यदि सुनबो कयने हेतीह तँ संभवत: अनठिया देलनि अछि...।

हम दलान पर आबि जाइत छी। बस्स। किछु काल आर। पहिल खेपक भोज सम्पन्न भ' जेतै। आ फेर पान-सुपारी लेल घमासान मचत...। हम सहटैत-सहटैत अपन दलान पर आबि जाइत छी। आँगनक गेट बन्न अछि। माय सरबन बाबूक आँगन गेल अछि। हम दलानक

आगाँ भालसरीक छाँह मे कुर्सी ध' बैसि जाइत छी...। अकास साफ अछि...। कूदि-फानि क' मेघ सभ दखिन-भर चलि गेल अछि। भ' सकैए पच्छिम मे बरसल होअय। एहि गाम धरि अयबाक साहस नहि क' सकल। संभवतः इन्द्र केँ अपन पराजय मोन पड़ि गेल हेतनि...।

अन्हरियाक पंचमीक उदास चान रेलवेक ओइ पार आमक गाछीक उपर उगि आयल अछि। नहू-नहू रेलवे आ तकर ओइ पार बल्ला मे ठाढ़ इमलीक बूढ़ भूतहा गाछ देखाइ पड़ि रहल अछि...। नहि जानि कतोक भूत-प्रेतक बास छै ओहि गाछ पर...। ई कोनो हम नहि कहि रहल छी। कतेक लोक देखि चुकल छथि। कोनो-कोनो महिसवार केँ तँ पसर चरबैत काल घेरियो नेने रहै आ नकिआयल स्वर मे तमाकुल मँगने रहै...। सुनै छियै, ओहि इमली गाछ पर जतेक भूत-प्रेत अछि से प्रायः वैह अछि जे कोनो-ने-कोनो कारेणेँ रेल सँ कटल अछि...। जहिया ई रेल लाइन बनल हेतै तहिया के सोचने हैत जे कतेक लोकक लेल अंतिम प्रस्थानक कतेक सहज-सुलभ-सस्त-साधन उपलब्ध कयल जा रहल छै...। मुदा नहि! कहाँ प्रस्थान क' पबैत अछि केओ? कहाँदन सभ केँ ओही इमली पर वास लेब' पड़ैत छै...। की कनिञा काकी सेहो ओही पर...? मुदा, एहि ग्यारह-बारह दिन मे कहाँ कतहु नजरि आयल अछि हुनक धूआ? खाली ओहि राति...।

## एक मुट्ठी भात...

ओहि राति हमरा लग सूतलि माय फोंफ कटैत रहय। बेटा केँ वात्सल्यक सुरक्षा दैत...। की हम सुरक्षित भ' गेल रही? खिड़की पर सँ कनिञा काकीक मुंड जरूर निपत्ता भ' गेल रहनि...परंच मोन मे सन्हिआयल हुनक आँखि ओ बेधक दृष्टि...। की कहय चाहैत रहय ओ दृष्टि...? की अर्थ रहै ओकर...? ओना किऐ देखने रहथि कनिञा काकी हमरा ओइ दिन?

ओइ दिन कनिञा काकीक नाति आयल रहनि—नानी केँ देखय। माय सँ जिद् क' कय। कतबो मजगूत हृदयक होथि गुंजा परंच मायक लेल दरेग तँ छलनिहें ने। की करितथि? नहि रोकि सकलथिन बेटा केँ। कहने रहथिन जे नहि मानबेँ तँ जो मुदा साँझ धरि घुरि अबिहेँ।

तहिया काकी छोटजनीक पार मे छलीह। भोरे-भोर आबि जुमल ओहि बारह बर्खक पाहुन केँ देखिते छोटजनीक पारा चढ़ि गेलनि। फल भोग' पड़लनि धिया-पुता केँ। अनेरे माय सँ मारि खाइत ओ सभ हकबका गेल जे ओकर सभक अपराध की छै? तामसे छोटजनी बहुत कम मात्रा मे भात बनौलनि। एतबहि जे हुनक अपनहुँ नेना सभ लेल अपर्याप्त रहनि...। ओ ओहि बारह बर्खक पाहुनक आगाँ मकइक रोटी आ रामतरोइक तरकारी परसि देलथिन आ नहाय लेल बाड़ी मे चलि गेलीह...। एम्हर ओ बच्चा कहुना क' दू कौर खयलक आ नानीक मुँह ताकय लागल...। काकीक करेज मे हूक उठलनि...। हुनक आत्मा कलपि उठलनि...। हुनका लगलनि जेना अन्तस मे जमल कोनो वस्तु पिघलि रहल होनि आ गरा बकौर लागि रहल होनि...। ओ अपना क' कहुना क' सम्हारलनि आ एक टा निर्णय लेलनि...। लाज तेयागि क' जेठजनीक दुआरि दिस बढ़लीह...कनेक थकमकयलीह...आ चढ़ि गेलीह दुआरि पर...।

"हीरा सुन्नरि, एक मुट्ठी भात देब?" ई सुनिते हीरा सुन्नरि किटकिटा उठलीह।

"केओ कमा क' राखि गेल छै की? हुँह! अंगोर राखिक' पटपटा नहि देबै जे भात देबै?"

"कनिञा, हमर जे दुर्दशा करबाक होअय, से क' लेब...मुदा ओहि अबोध केँ...?" पहिल बेर कनिञा काकीक स्वर मे आपत्ति प्रकट भेल रहनि।

"अरे, वाह रे अबोध! ककरो बापक किछु धारने छियै की? केओ खराँत राखि गेल अछि की? एतबे दरेग छनि तँ निकालथुन ने कोसलिया आ खुअबथुन रसगुल्ला...।"

देयादिनीक चिकरब सुनि छोटजनी बाड़ी मे सँ प्रकट भेलीह...सद्यःस्नाता...सही अर्थ मे एकवस्त्रा...भीजल केस नग्न पीठ पर लहराइत... साया केँ छाती पर वामा हाथेँ सम्हारने...। स्थिति केँ अँटकारैत-अँटकारैत हुनक कान मे जेठजनीक संवादक अंतिम अंश नीक जकाँ पड़लनि,

"...बनैत जायत सभ धन्ना सेठ...आ...एक टा पाहनु केँ दू मुट्ठी भात खुअबैत हींग चूब' लगैत छै!"

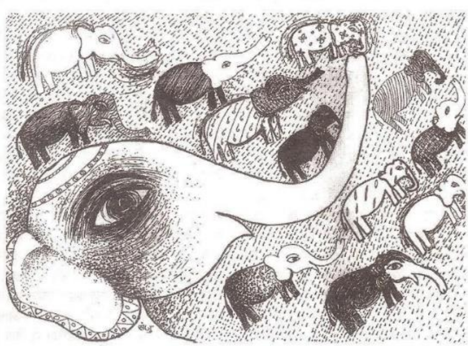
छोटजनी केँ लेसि देलकनि। तरबाक लहरि मगज पर चढ़ि गेलनि...। ओ खरमासक आगि जकाँ लहकि उठलीह...। ओ जल्दी-जल्दी सायाक डोरी केँ छाती पर कसलनि आ कनिञा काकी संग व्यास ककाक सात पुश्तक उद्धार करैत लपकलनि। हुनक झौंटा पकड़ि क' घिचलनि। कनिञा काकी तलमला क' खसि पड़लीह...। आब ओ दुनू हाथें कसि क' झोंटा केँ ध' लेलथिन आ घिसिअबैत-घिसिअबैत अपन दुआरि लग आनि पटकि देलथिन...।

"आइ आब' दे मुन्ना के पप्पा केँ तँ भात खुअबैत छियौ...। तोरो आ तोहर नाति केँ सेहो...। गै राँड़ी...बुढ़ौरी! तोँ गेलय की करय मुदइ के दुआरि पर? हमरा बदनाम करय लेल? आइ तोहर भथियान ने चहका देलियौ तँ हमहू भोला मिसरक एक बूँदक नहि...।"

एवं प्रकारेँ सासुक इलाज कय ओ अपन घर मे कपड़ा पहिरय चलि गेलीह आ ओत्तहि सँ गरियबैत रहलीह...।

चट्टुआ पर भोजन लेल बैसल नाति नानीक दुर्दशा देखि पहिने तँ हकबकायल...फेर किछु नहि फुरयलै तँ कानय लागल...। आ कनिञा काकी! ओ ने किछु बाजि रहल छलीह आ ने कानि रहल छलीह। बस चितांग पड़ल शून्य दृष्टिएँ अकास दिस तकैत रहलीह...। नातिक कानब सुनि चेत भेलनि...। जेना-तेना उठलीह आ नाति केँ पँजिया क' कानय लगलीह...।

ओही दिन बेरू पहर नाति अपन गाम चलि गेलनि। संयोग सँ हम खरदाहाक खेत देखि



आपस होइत रही तँ देखलियै जे रेलवेक ओइ पार जे गाछी सभक बाद डिस्ट्रिक्ट बोर्डवला साबिकक सड़क छै ततहि कनिञा काकी नाति कैँ विदा क' रहल छथि...। विदा करबाक ढंग कनेक विचित्रे सन...। भरि पाँज क' नाति कैँ पकड़ने ओकर मुँह, आँखि, कान, कपार सभ कैँ धड़ाधड़ चूमि रहल छलीह। नानीक पाँज मे फँसल नाति कसमसा रहल छल, मुदा ओ ओकरा जेना मुक्त कर' लेल तैयार नहि रहथिन...। कननमुँह भेल नाति कैँ गसियाक' पकड़ने विह्वल भेलि कनिञा काकी अचक्के हमरा समक्ष मे ठाढ़ देखि ठमकि गेल रहथि...। नाति मुक्त भ' पैघ-पैघ साँस लेब' लगलनि...। तखन कनिञा काकीक आँखि विचित्र छलनि। नजरि झुकि गेल रहय हमर...। नाति विदा भ' गेलनि। हमरा लागल जे ओ आब गाम घुरतीह। पुछलियनि तँ ओ हमरा बढ़ि जयबाक संकेत कयलनि आ अपने जाइत नाति कैँ पाछाँ सँ देखैत रहलीह...देखैत रहलीह...। की ओ वस्तुत: नातिए कैँ देखि रहल छलीह वा आर किछु...? हम पच्छिम दिस अपन गाम जा रहल छलहुँ...। कतेक बेर घुरिक' तकलहुँ तँ देखल जे ओ ओहिना ठाढ़ पूब दिस देखि रहल छथि...लगातार...।

ओहि दिन जखन ओ गाम पर घुरि क' अयलीह तँ अपन दु:ख की कहितथि बेटा सँ? ओ तँ पहिनहि सँ तैयार भेल बैसल रहनि स्वागतक हेतु। एक टा हाथ छोड़ब रहि गेलै नहि तँ कोन दुर्दशा बाकी रखलकनि राघव लला! बेटाक मुँहें ओहन घिनौन-घिनौन गारि सुनिक' काकी कैँ लागि रहल छलनि जे हाड़ टा रहि जायत नहि तँ देहक माउस गलि गलि क' खसि पड़त...। इच्छा भेलनि जे जँ एहि काल धरती फाटि जाइत तँ ओहि मे समा जइतहुँ...। मुदा से संभव कहाँ छलनि...?

सरबन बाबू एहि सभ सँ निरपेक्ष। हुनक प्रत्येक भंगिमा जेना यैह कहि रहल छलनि, "हमरा नहि कह किछु। हमर पार मे तोँ एखन नहि छेँ। ओकरे कही जकर पार मे छही...।"

अगत्या ओहि दिन कनिञा काकी साँझ सँ ल'क' राति धरि टोल-पड़ोस आ गामक कोन अल्लाँ बाबू आ फल्लाँ बाबूक ओत' नहि गेलीह...किनकर-किनकर खुशामद नहि कयलनि..."हमर निसाफ करै जाउ...!" मुदा, कोनो गोटे दोसराक घरेलू मामिला मे बजबाक जरूरति नहि बुझलनि...। दिन भरि दोसराक घरेलू बात कैँ कौचर्यक स्थायी विषय बना क' मजा लेनिहार स्त्री-पुरुष प्रत्यक्षत: हिनक मामिला मे हस्तक्षेप करब अनुचित बुझलनि...। असल मे सरबन बाबूक ब्रह्मपेंच आ राघव ललाक लंठइ सँ सबहक पिल्ही चमकि रहल छलनि...। के उपकार क' कय फँसत ग'। जाय दियौ। फेर तँ माय-बेटा, सासु-पुतोहु एक्के हैत...। बुड़बक बनब हम सभ। छोड़ह-छोड़ह। हमरा सभ कैँ कुकुर कटने अछि की? जानय जौ जानय जाँत। हमरा सभ कैँ अपने कोन कम समस्या अछि? आ जत' दू टा बासन रहैत छै ओतहि ने ढनमन होइत छै...। तखन घरक बात ल'क' दरबज्जे-दरबज्जे अँगने-अँगने बौआयब...। ई कोन नीक बात भेलै? नञि अपने चैन सँ रहतीह आ ने हमरा सभ कैँ रह' देतीह गुंजाक माय। लगैए ईहो सनकल जाइत छथि...।

## भोर जे कहियो नञि भेलै...

सनकि तँ गेले रहथि ओ। तखन ने ओहन विचित्र रूप धारण क' नेने रहथि...। ओहि राति ओ घुरिक' आँगन नहि गेलीह। दलानवला कोठली मे कोठी सभक दोग मे जाक' पड़ि रहलीह...। एक दिन...दू दिन...तीन दिन...। हम एहि बीच मे दड़िभंगा गेल रही। तेसर दिन जखन चारिबजिया ट्रेन सँ गाम अयलहुँ तँ ज्ञात भेल जे तीन दिन सँ ओ ओही अवस्था मे बिनु खयने-पीने ओही ठाम कखनो बैसल, तँ कखनो पड़ल रहैत छथि...। ने तँ किछु बजैत छथि आ ने ककरो बातक उत्तर दैत छथिन। निकासो लेल बाहर जाइत केओ नहि देखलकनि अछि। भ' सकैए रातिक' एकांत मे जाइत होथि। सभ समझा-बुझा क' हारि गेल अछि...हुनका पर कोनो असरि नहि...।

हम जखन पहुँचल रही तखन तुरंत सूर्य अस्त भेल छलाह। दलानक कोठली अपेक्षाकृत फइल रहलाक बादो किछु भरिआयल सन आ अन्हार सन लागि रहल छलै। कदाच् कोठी सभक कारणें...। आँखि गड़ाक' देख' पड़ल रहय हमरा...। हम मृदुल स्वर मे टोकलियनि, "कनिञा काकी!" दू-तीन बेर टोकलाक बादो ओ उठिक' देबालक सहारा ल' बैसलीह... आ नजरि उठाक' तकलनि...। चाड़क घसकल खपड़ा सँ बनल छिद्र सभ द'क' तुरंते डूबल सूर्यक ललौन प्रकाश कोठली मे जत'-तत' आबि रहल छलै...। प्रकाशक एहने एक टा टुकड़ा कनिञा काकीक बगल मे देबाल पर पड़ि रहल छलै...। ओहि मद्धिम होइत ललौन प्रकाश मे नोनी लागल देबाल आ कोठी सभक जर्जर स्थिति पर नजरि गेल... संगहि नजरि गेल कनिञा काकीक चेहरा पर...। जनम-जनम के उदासी जेना हुनक आँखि मे जमि क' रहि गेल रहै...। नहुए कंपित ठोर जेना किछु कहय चाहैत होअय, मुदा कहि नहि पाबि रहल होअय...। हम आग्रह कयने रहियनि जे अनशन तोड़थि। जे भेलै से भेलै। ओ तँ माय छथिन। बिसरि जाथु सभ किछु। हमरा विश्वास रहय जे ओ हमर बात मानि जयतीह...। मुदा, ओ टस-सँ-मस नहि भेलीह। हारिक' हम पुन: भोर मे अयबाक बात कहि चलय लगलहुँ...। अचानक देखल जे हुनक ठोरक कंपन बन्न भ' गेल रहनि आ आँखि एक टा विचित्र प्रकारक चमक सँ चमकय लागल रहनि...।

## रोगाह इजोरिया सँ झँपाइत गाम...!

"एह! थइ-थइ भ' गेलैक...। महो-महो भ' गेलैक...। कनिञा काकीक दुनू बेटा कमाल क' देलनि...। कतेक नीक जकाँ अपन कर्तव्य निमाहि देलनि...।" भोज खयनिहार लोकनिक अघायल टिप्पणी चलि रहल अछि...। खुशीक आवेग मे किछु गोटे अँइठे मुँहे नारा लगाब' लगलाह अछि...।

"कनिञा काकीक?"
"जय!"
"सरबन बाबूक?"
"जय!"
"राघव बाबूक?"
"जय!"
"धर्म केर?"
"जय हो!"
"अधर्म केर?"
"नाश हो!"
"प्राणी सभ मे?"
"सद्भावना हो!"
"विश्व केर?"
"कल्याण हो!"...

पहिल खेपक भोज समाप्त भ' गेल अछि। चन्द्रमा नहू-नहू अकास मे चढ़ि रहल छथि...मुदा इजोरिया साफ नहि अछि...। धूसर मटिआह रंगक...जेना रोगाह होअय...जांडिस सँ पीड़ित...। एहि रोगाह इजोरिया सँ आच्छादित गाम क्रमश: शांत भ' रहल अछि...।

ओम्हर सरबन बाबूक दलान पर पहिल खेपक ब्राह्मण-लोकनि पान-सुपारी ल'क' जा चुकल छथि...। खरहरा देल जा रहल अछि...। आ दोसर खेप मे बैसबाक लेल प्रतीक्षारत बुभुक्षु ब्राह्मण लोकनि तत्पर छथि...।

आ एत' हम एहि कुर्सी पर जेना जमि क' रहि गेल छी...की करी? जाइ कि नञि जाइ?

संपर्क : द्वारा-डॉ. पी. के. झा
पी.जी.टी. (हिंदी), केंद्रीय विद्यालय,
कटिहार, बिहार-854105
मो. 9430038969

## २.६.मुन्नी कामत- समकालीन चित्रकार संजू दास



**मुन्नी कामत**

## समकालीन चित्रकार संजू दास

चित्र कला सिखबाक लेल गुरु सँ बेसी लगन आऽ सतत् अभ्यास आवश्यक अछि। ई कहब अछि मिथिलाक धिया श्रीमति संजू दासक। हिनकर एहे हुनर हिनका सबल सफल बनौलक। १७ जनवरी १९७२ मे जनमल ग्राम कमतौलीक (दरभंगा) श्री प्रभु नारायण आऽ श्रीमती रुनकी दासक पुत्री गामक माटि सँ खेला आय राजधानीमे बैस सात रंगक चितेरी बनि गेली। मिथिला संस्कारमे पालित संजू दासक सफलताक पहिल अंश हुनकर मिथिलानी रहनाय अछि। मिथिलाक धिया जन्म संगे लूरी, व्यवहार, गुण विरासत मऽ लऽ अबैय य'। मूज -सिक्की कला,कुनूसिया,सब पाबैन -

आह्वान मS घर -आँगन मS बनाओल अरिपन ,घरक देवाल पर आँकल विभिन्न कलाकृतिक दर्शन मिथिला मे सहज अछि। संतोष दास अहिसब कलाम निपुण छलीह एक कहियो नै सोचने नहि जे अहि आधार पर ओS देशक नामी -गामी चित्रकार संग अपना स्थान सुनिश्चित करथिन।

गामक परिवेश मS पलल संतोष दासक जीवन तखन बदलल मोड़ लेलक जखन हुनकर विवाह सन् १९९७मे हाटी राँटी ग्रामक श्री नवीन्द्र दास सँ भेल। जे पटना आर्ट कॉलेज क प्रशिक्षित आधुनिक चित्रकार छल। येह हुनकर गुरू आS सफलताक मूल कारण अछि।
जखन हाथ पकरि बाट देखवैय लेल हमसफर संग हाय सँ हुन मंजिल कहाँ दूर नहि अछि ओकरा हासिल करैयक जुनून जेना वैठ जाइत अछि। संतोष दास जी जखन महानगर मे बसली सँ घूमैयक नाम पर पति संग चित्रकला प्रदर्शनी मे बसी जेना छलीह। कलाक विद्या सँ हुनका भीतर अंकुरैल पहिल सँ छल बस ओहि अंकुरैल विद्या कँ माटि आS प्रकाशक आवश्यकता छल जे पति श्री नवीन्द्र दास सँ प्राप्त भेल। आय पतियक संरक्षण मS वैह विद्या प्रस्फुटित भS पौधक निर्माण करलक जकर उंचाई हमरा सबकें गौरवान्वित करैत अछि।

संतोष दास द्वारा बनाओल नीला आS हरियर पृष्ठभूमि पर हुन उम्रनक आकृति मS प्रयोग कैल चटकिला रंगक कलाकृति अहाँ क अपना दिस खिचत। किछु देर लेल मात्र नै ,0हुनवाक बादो मनन लेल मजबूर करत। मिथिला कलाक आधुनिक कला सँ जाडि अगो।

अलग तरहक सृजन मात्र हिनक चित्रकला मे देखैत अछि। हिनकर ऐहि शैली हिनका सबसँ विशेष बनबैत अछि। मैथिली शैलीक आत्मा अछि चटक रंग,बारिक रेखा,अलंकारिक पान-बूटि , आ प्रकृतिक चित्रण अहि शैलीकँ आधुनिकताक आकर्षण सहिना संग ओ अपन कैनवास पर उतारैत रहलि।

हिनकर कला मात्र प्राकृतिक आ मानवीय सुंदरता तक सिमित नै अछि। चित्रकलाक अर्थ मात्र देखबाक खूबसूरती नै बल्कि हृदयक मनोरंजक दृश्य एवं प्रदर्शनकारी कलाक विभिन्न रूपक माध्यम सँ प्रकट कैल जाकरा रंग द्वारा सुन्दर आ सजीव बनबाओल कला अछि। हिनकर कला किछु अलग सन अछि। जहि मे स्त्रीक श्रम, स्त्रीक स्वप्न, स्त्रीक संघर्ष, स्त्रीक मनक उड़ान, स्त्रीक शोषण आदि एतेक स्त्री सँ बसी सजीवता जायज कैल के आनि सकत। हिनकर मनन दृष्टि बहुत गंभीर अछि जे हिनकर कलाकृति मे हम महसूस कऽ सकैत छी।

आदरणीय संध्या दास २०बरख सँ लगातार पारिवारिक जिम्मेदारीयक निर्वाह करैत समाज मे प्रतिष्ठा प्राप्त कैलैथ। हिनकर कला आब ग्राम आ राष्ट्र टा मे नै देश आ विदेश मे प्रशंसनीय अछि। अखन धरि ६टा एकल प्रदर्शनी हिनकर भेल अछि तथा कला संस्थानक संग्रहालय मे हिनकर कला संग्रहित छैन।
विभिन्न संस्था द्वारा सम्मानित श्रीमति संध्या दास अखन धरि 30 ठाम देखलखिन आगा। बेल हुनका अन्तर्राष्ट्रिय स्तर पर अपन गाम,राज्य

आऽ दर्शक नाम स्थापित करैयक अछि। बिहार सरकार द्वारा वरिष्ठ महिला कलाकार सँ सम्मानित अहि कलाधर्मी कँ स्वस्थ तन आऽ शसक्त मनक उत्थान लेल हमर हृदयँ शुभकामना।

हिनका प्राप्त सम्मानक विवरण:-

2017-18 कुमुद शर्मा पुरस्कार (बिहार सरकार वरिष्ठ कलाकार पुरस्कार)

एकल

1999 ग्रेंडलेज बैंक गैलरी (चाणक्यपुरी दिल्ली)

1999 रवींद्र भवन, ललित कला अकादमी, दिल्ली

2000 रवींद्र भवन, ललित कला अकादमी, दिल्ली

2002 नंद लाल बसु कला दीर्घा, पटना

2012 कॉन्फ्रेन्स लॉबी हैबिटट सेंटर

2013 कन्वेंशन लॉबी हैबिटट सेंटर

चयनित समूह प्रदर्शनियां

2022 नारी नारायणी तृतीया वसंत राग परियोजना

2022 गैलरी पायनियर द्वारा बिहार का विहंगम दृश्य

2021 राजेश चंद द्वारा क्यूरेट कैल□नलाइन ड्राइंग प्रदर्शनी

2021 AIFACS अखिल भारतीय चित्रकला प्रदर्शनी

2000 पस समूह प्रदर्शनी

2018 महिला चित्रकारक सामूहिक प्रदर्शनी एनजीएमए

मैथिली भोजपुरी अकादमी द्वारा 2010 रंगपूर्वी समूह प्रदर्शनी

2003 अनलॉक्ड स्पिरिट

2001 उनकी कहानी (क्रीतम आर्ट गैलरी द्वारा समूह प्रदर्शनी संगठन)

2001 ओजन ?लनिंग निथ फिगर्स डाआनजी वाय आर्ट ऊंक्लन रागीदानी

उमा शंकन याठक द्वाना संवर्धिन 2021 समूह प्रदर्शनी ओनआ?लीनी आर्ट गैलनी

2018 ता?लसिटी क रुफाउन

2003 युयीओलकओ द्वाना ?टन स्टट ओक्सवंज प्रदर्शनी डाआनजी

2001 उत्तन प्रदेश नाज्य प्रदर्शनी

2001 उत्तन प्रदेश नाज्य ललिन कला अकादमी द्वाना यश्चिमी उत्र प्रदर्शनी संगठन

2001 लघु कला प्रदर्शनी गढी

1997 ललिन कला अकादमी द्वाना कला मला संगठन

1997 AIFACS अखिल रानीय विचकला प्रदर्शनी

ओआनटी शिविन

2022 युयी ललिन कला अकादमी ऊौन ओमओसओम ट्रस्ट द्वाना अखिल रानीय शिविन यटनाग यी जम्मू डाआनजी

2022 अर्थशिला कला संवाद विद्यान कला शिविन प्रिनार्थन द्वाना आयोजित

नवींद्र नाथ टैगोन विश्वविद्यालय द्वाना 2021 अखिल रानीय शिविन संगठन

1998 □ल ?तिया कैंय डाआनजी वाय यस ग्रुय नाओता

2007 □ल ?तिया आर्ट कैंय दहनादून डाआनजी वा?ी नीच

2009 साहित्य कला यनिषद दिल्ली द्वाना अखिल रानीय शिविन संगठन

कार्य संग्रह: ओनजीओमओ दिल्ली, आ?ीटीतीसी दिल्ली, यनिनगन

विहार ओर राज्य ओर विदेश में कतेको निजी गैलरी
स्लाइड शो संगोष्ठी ओर प्रस्तुति
राज्य की लोक कला पूर्वी ललित कला द्वारा आयोजित
आईसीसीआर दिल्ली में मैथिली साहित्य उत्सव
2002 पटना (पुनाश पटना द्वारा डाआनजी)
2018 मिथिला पेंटिंग पर लखनऊ ललित कला अकादमी।

प्रकाशन
कतेक पत्र (आउटलुक अंग्रेजी ओर हिंदी, हंस, वर्तमान साहित्य ओर गृहशोभा) आदि
समकालीन कला (हिंदी), दैनिक जागरण, सखी पत्रिका, जनसत्ता, राष्ट्रीय सहारा, पटना हिंदुस्तान में लेख

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

## २.१.मुकेश दास- अपन शैली आ तकनीकक बलेँ आधुनिक कला म अलग पहचान बना चुकलीह संजू दास



**मुकेश दास**

**अपन शैली आ तकनीकक बलेँ आधुनिक कला म अलग पहचान बना चुकलीह संजू दास**

मिथिला प्रदेशक दरभंगा जिलाक कमतौली गाम मे जनमल, आधुनिक शैलीमे अपन कलाकृतिक लेल चर्चित, पहिल लोक कलाकार संतोष दास हालहिक चर्चित चित्रकार छथि। ओहि कलाकारक कलाकृतिक समीक्षा आऊट देशक चर्चित पत्र-पत्रिकामे छपैत रहल अछि। हिनक एखन धरि छह गोट एकल प्रदर्शनी आयोजित भऽ चुकल अछि आओर हिनक कलाकृति देशक प्रतिष्ठित राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घामे सेहो संग्रहित अछि। बिहार सरकारक प्रकाशित 'बिहार की समकालीन कला' आ 'सौ साल मे बिहार की कला-कला और कलाकार' दुनू पुस्तकमे हिनका नव पीढ़ीक प्रतिभावान कलाकारक रूपमे उल्लेख कएल गेल छैक। बिहार सरकारक वरिष्ठ महिला कलाकारक सम्मान 'कुमुद शर्मा पुरस्कार' सँ सम्मानित संतोषीक प्रदर्शनी एखन बिहार सरकारक पटना स्थित बिहार म्यूजियममे लागल छैक। समकालीन कलामे हुनि कलाकारक अपन खास शैली होइत अछि, मिथिला पेंटिंगक दुनियासँ आधुनिक कलाक दुनियामे कदम राखयवाली पहिल कलाकार संतोषीक पेंटिंगकेँ अहाँ आसानी सँ चिह्न आ वर्गीकृत कऽ सकैत छथि।

हिनक चित्रमे ग्राम्य जीवनक व्यथा आ नारी जातिक आंतरिक करुण गाथाक झलक देखैत अछि। संतोषी बहुत चित्र बनबामे रुचि राखैत छथि जकर सीधा सम्बन्ध मानवीय मूल्य आ वास्तविकतासँ होइ, प्राकृतिक विषय पर चित्र बनाएब हिनका सेहो खूब पसिन्न छैक। एकटा ग्राम्य जीवनसँ अपन अनुभव आ स्वप्रशिक्षित चित्रकार होएबाक कारणे हिनक कलाकृतिमे नारीवादी कलाकार जेना धान सेहो देखबामे आबैत अछि। □ल ऊतिया हाऊन आर्ट एंड क्राफ्ट

सोसाइटी, ललित कला अकादमी आदि कतेको प्राइवेट गैलरी सबमे हिनक कलाकृति प्रदर्शित भऽ चुकल छैन्हि। हिनक चित्रकेँ एकटा नवीन तरहक शैली कहल जा सकैत अछि जाहिमे मॉडर्न आर्ट आ पारम्परिक मिथिला शैली दुनूक नीक प्रयोग देखबामे आबैत अछि। उखरि-मूसर, सार बिनइया, दौनी-ओसौनी, नदी-नाला, खेत-खरिहान, धान-रोपनी, सुमन-टिकुली, चौपाल-पंचायत सन किछु एकटा कैनवास पर उपस्थित कऽ दैत छथिन संज्ञजी। हिनक सौम्यता आ कलाक प्रति समर्पण हिनक प्रसिद्धिक मुख्य कारण बुझना जाइत अछि।

मात्र दसवी धरीसँ पढ़ल प्रतिभा। हिनक ऊर्जा थिकैन्हि जे स्वयं एकटा गृहस्थ महिला छलीह मुदा कला-कौशलमे निपुण। हुनका सँ ई सुजनी कला, अरिपन देनाय आ मिथिला पेंटिंग बनेनाय सिखलीह। हिनक पिता श्री प्रभु नारायण दास ब्लॉक मे ग्रामसेवक छलाह। जतय धरि हिनक शिक्षा-दीक्षाक गप्प अछि तऽ अपन गामक स्कूलमे पढ़ी आ गाममे नहि प्राइवेट सँ ग्रेजुएसन कलैह। विवाह हावीसेआन निवासी आधुनिक चित्रकार नवीन्द्र दाससँ भेलैन्हि। दुइए पुत्रीक मात्र संज्ञजी गृहस्थाश्रम सम्हारैत अपन कलाक प्रति सदिखन समर्पित रहैत छथि।

बाल्यकालसँ मिथिला पेंटिंग बनबैत आबि रहलीह संज्ञजीक रंग लगेबाक रीति आ संयोजनमे सहज आर परिवर्तन देखबामे आबैत अछि। आर हिनक आकृतिमे रेखाक नहि बल्कि रंगक प्रमुखता होइत छैन्हि। पहिने ई लोककला शैलीमे काज करैत छलीह मुदा विवाहक बाद लोक-कलासँ प्रभावित आधुनिककला शैलीमे काज करय लगलीह। ई बदलाव दिल्ली एलाक किछु दिन बाद राष्ट्रीय

आधुनिक कला दीर्घामे महिला कलाकारक प्रदर्शनी देखलाक बाद अयलैह। ओहि प्रदर्शनीमे कतेको आधुनिक कलाकार सभहक काजमे लोककलाक प्रभाव छल, तँ ओहो साहस लगलीह जे हुनकहुँ तँ एकटा लोककलाकार छीह हुनका तँ मात्र आधुनिककलाक किछु बारीकी टा सीखबाक जरूरति अछि। ताकर बाद सँ हिनक आधुनिककलाक यात्रा शुरु होइत छैह। हिनक सभ कलाकृतिमे विषय स्त्रीक जीवन आ हुनक आकांक्षा होइत छैह जे मात्र आकृतिमूलक कल मे संभव भऽ सकैत अछि। ग्रामीण जीवन तँ रंग-बिरंगा होइत छैक, शायद तेँ हिनका चटख रंगसँ किछु बेसी स्नेह छैह।

आइ एकटा स्वप्रशिक्षित कलाकारक रूपमे अपन कला यात्रासँ बहुत खुश भऽ कहैत छथिन, "जाहि कला महाविद्यालयमे हुनक नामांकन नहि भेल आइ ओतुका छात्र-छात्रा आ शिक्षक लोकनि सभ हुनका एकटा कलाकारक रूपमे सम्मान दैत छथि, हुनका लेल एहिसँ बढ़ि कऽ आन खुशी की होयत।" देशक लगभग सभ महानगरमे हिनक काज प्रदर्शित भऽ चुकल अछि आ कतेको कला शिविरमे हिनका आमंत्रित कएल जा चुकल छैह। हिनक पहिल प्रदर्शनीसँ काम बिकय लागल छलैह, दोसर प्रदर्शनीक बाद हिनकर कलाकृति आधुनिक कला दीर्घामे संग्रहित भेलैह। प्रिंट आ इलेक्ट्रानिक मीडियामे हिनका आ हिनक कलाकेँ खूब जगह भेटैत छैह। हिनका नजरिमे कला जीवनक प्रतिबिम्ब अछि, तेँ हिनक किछु कलाकृतिमे साहित्यक प्रभाव देखल जा सकैत अछि। कियेक तँ हिनका कविता आ नाटक सभ खूब पसंद छैह। हिनक शुरुआती कलाकृति सब बेसी ग्रामीण जीवनशैली पर आधारित होइत छल, मुदा आइ-काल्हि ई नारी मनक आकांक्षा पर काज कऽ रहल छथि। अभिषेक सिंह,

अनामिका आ केदार नाथ सिंह केर कविता हिनका खूब पसंद छैन्ह।

कला हिनका लेल आम दिनचर्या छल किएक त' मिथिलाक हर स्त्री कलाकार होइत छथिन, मुदा ओ कहियो ओ नहि सोचने रहथि जे आगाँ चलि ओ स्वयं एकटा कलाकार बनतीह। चूँकि हिनकर पति सेहो एकटा प्रसिद्ध कलाकार छथिन त' हिनका मनमे रहैन्ह जे हिनका कलाक विधिवत शिक्षा लेबाक चाही मुदा से संभव नहि भ' सकलैन्ह। हिनका जनतब दुनिया भरिक कोनो आर्ट कॉलेज कलाकृति बननाय नहि सिखाबैत छैक। एकटा कलाकार बनबाक लेल तकनिकी शिक्षाक अलावा निजी चिंतन आ सामाजिक-राजनीतिक स्थितिक जानकारी सेहो जरूरी होइत अछि।

दिल्लीसँ प्रकाशित होएबला मैथिली त्रैमासिक पत्रिका 'मिथिलांगन' लेल देल अपन एकटा साक्षात्कार मे पूछल प्रश्न "अहाँकेँ कलाकार बनबाक मन किएक भेल?" केर उत्तर मे कहने छलीह, "जेना मिथिलाक आम स्त्रीगण बिबाह आ पर्व-त्यौहारक अवसर पर कागज, कपड़ा आ दीवार पर थोड़-बहुत चित्रकारी करैत छथि तहिना हमहूँ करैत रही। मुदा कहियो हम सोचने नहि रही जे हमहूँ एक दिन कलाकार बनब, किएक त' तखन हमरा ओ बात नइ बुझल छल जे शहर मे गामक एहि कलाकेँ लोक एतेक पसिन करैत छथि आ कलाकार लोकनिक एतेक सम्मान आ पाइ देल जाइत छैन्ह। शुरुआत मे हम कागज पर जलरंगसँ छोट-छोट पेंटिंग बनाबी ताहि पर आयल पेस्टल ल' क' ओकरा फिनिशिंग टच दैत रही। जलरंग आ आयल पेस्टलकेँ बाद हमरा ऐक्रेलिक रंगसँ कैनवास पर काम करबाक मन भेल। मुदा हम छोट आकार

म बसी पेंटिंग बनौलहुँ। मात्र एकटा पैघ आकारक बनौलहुँ जकरा पहिल एकल प्रदर्शनी मे प्रदर्शित कएलहुँ। किछु पेंटिंग बीकायल जाहिमे ओ बड़का पेंटिंग सेहो छल, ओहिसँ हमर आत्मविश्वास बढ़ल। तकर बाद हम पैघ-पैघ आकार पेंटिंग बननाय शुरू कऽ देलहुँ। हमर पति हमरा सदिखन सहयोग कलैथ आ उत्साह बढ़ौलैथ। दिल्लीक खुलल माहौल हमर कलात्मक अभिरूचिकेँ नव दिशा देलक।"

एहि साक्षात्कारमे "आधुनिक कलाक प्रति केना आकर्षित भेलहुँ?" केर जबाव देत कहलैथ, "चूँकि हमर विवाह एकटा आधुनिक कलाकारसँ भेल तेँ विवाहक बाद हमरा बसी भेंट-घाँट कलाकार लोकनिसँ भेल। एकर अति त घुमनाइ-फिरनाइयो बसी कलादीर्घ आ कला प्रदर्शनीये मे भेल। ओहि समय राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय मे स्थानीय महिला कलाकार सभहक एकटा प्रदर्शनी देखबाक अवसर भेंटल ओकर बाद हम आधुनिक कलाक प्रति आकर्षित भेलहुँ। हम सोचलहुँ किएक नञि मिथिलाक लोक कलाकेँ आधुनिक कलासँ जोड़ल जाए। तकर बाद हमर कलामे एकटा निखार आबि गेल। जखन हमर पेंटिंग राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय लेल चयनित भेल तखन कतेक कलाकार कहलाह जे आब अहूँ आधुनिक कलाकार भऽ गेलहुँ।"

अपन सबल पक्षमे, नव-नव प्रयोग लोक सबसँ गप्प करनाए हिनका नीक लगैत छैन्ह, तऽ ठीक ओहिना ठीक बुनाइ पसंद नहि छैन्ह। अपन पेंटिंग मे सेहो एहि विषयकेँ ओ प्रमुखतासँ चित्रित करैत छथि। साहित्य आ नाटक खूब पसंद छैन्ह जकर उपयोग ओ अपन कलाकृतिक पात्र-चित्रण करबामे करैत छथि। तऽ दासन दिश

दुर्बल पक्ष हुनका कचोट छैन्ह जे, हमरा अंग्रेजी नहि अबैत अछि आ कला क्षेत्रमे बेसी किताब, समीक्षक आ खरीददारक भाषा अंग्रेजी मे हेबाक कारणेँ दिक्कत होइत अछि।

अपन पेंटिंगक बात मे बतबैत कहैत छथि, "पॉल गोगनां आ मार्क शैगालक रंग योजना हमरा बड़ पसिन अछि, हमर पेंटिंगकेँ देखलासँ अहाँकेँ ई बुझा जायत। हमर शुरुआती प्रदर्शनीक चित्र सबमे मिथिलाक ग्राम्य जीवनक सुन्दर झलकी छल, ताहि मे बेसी ग्रामीण महिला सभहक दैनिक क्रियाकलाप पर आधारित चित्रण छल। ओकर बाद स्त्री मनक संवेदना आ आकांक्षाक चित्रण करए शुरू कएलहुँ मुदा प्रतीक आ बिम्ब गामक स्मृति पर आधारित छल। हालाँकि अपन चित्रक संयोजन मे हम कोशिश करैत छी जे मधुबनी पेंटिंगक खुशबू बाँचल रहय, जेना- पूरा सतह पर अलंकारिक बेल बूटा, रेखांकन आ छोट-छोट आकार सबकेँ सजावट जकाँ उपयोग करैत छी। बेसी चित्रकार स्त्री देहक सुंदरताक चित्रण करैत छथि। मुदा, हम एकटा स्त्री छी तेँ हमर कोशिश रहैत अछि जे स्त्रीक श्रम, ओकर प्रेम, ओकर आकांक्षा आ ओकर मोनक भावना आदिकेँ सेहो चित्रित कएल जाए। हमर कलाकृति पहिल नजर मे लोककला जकाँ आभास दैत छै मुदा, ओकर संयोजन, रंग लगाबयकेँ तरीका आ विषय समकालीन होइत छैक। यएह कारण छैक जे हम समकालीन कलाक सब मुहावरा इस्तेमाल करैत छी खासकर उत्तर आधुनिकतावाद आ नारीवादी कलाकृतिक। एकर धरि जे डिजिटल कला मे सेहो बड़ संभावना देखि रहल छी।"

मिथिला पेंटिंग आ आधुनिक कलामे फरक करैत कहैत छथि, "देखबा मे जरूर अलग लगैत छै, मुदा सब कला एक्के रंगक

छैक। हमरा जनितबे आधुनिक कला आ लोक कलामे बेसी अन्तर नहि छैक खाली माध्यमक अन्तर छैक। आधुनिक कला मॉडर्न आर्टक विकसित रूप कहल जा सकैत अछि। बेसी लोक यथार्थवादी शैली मात्रकेँ मॉडर्न आर्ट बुझैत छथिन आ हुनका कठिन बुझना जाइत छैन्ह आ किछु गोटे आधुनिक कलाकेँ उटपटांग काज बुझैत छथि। आधुनिक पेंटिंग मे अमूर्तता आनबाक प्रयासमे एक रंगमे कतेको रंग आ आकारकेँ अपन आकार देखबा मे भेटत। ओना आधुनिक कलाक बेसी प्रयोग शैली आ माध्यमक भेल छैक। महासुंदरी देवीकेँ रेखांकन देखिक कतेको कलाकार पिकासोसँ तुलना करय लागैत छथि। कोना कलाकारकेँ अपन शैली छैन्ह आ नव विषय पर काज कऽ रहल छथि खाली माध्यमक अन्तर भेलासँ कोना नहि हुनका आधुनिक कलाकार कहबैन्ह। रहल बात समकालीनताक तऽ मिथिला पेंटिंगमे आब कतेको कलाकार दहेज, आतंकवाद, स्त्री-पुरुखक संबंध, भ्रूण हत्या, पर्यावरण सन आजुक समसामयिक विषयसँ हटल नव सोच आ नव संयोजनमे काज कऽ रहल छथि। समकालीन कलाकार सब एहन विषय पर काज करैत छथि।"
मिथिला कलाक मिथिलामे स्थिति पर ओ कहैत छथि, "कहल जाइत छैक जे संपूर्ण मिथिलाक जन-जनमे ई कला रचल-बसल छैक। मुदा हमरा देखबामे एहन बात नहि आयल। मात्र मधुबनी शहरकेँ नजदीकबला गाम सब व्यावसायिक रूपसँ सफल भेलाक कारणेँ पूरा गामक लोक चित्रकारीमे लागल छथि। आन गाम सबकेँ बेसी प्रचार-प्रसार नहि भेल। तँ ओ लोकनि मात्र पावनि-तिहार धरि एहि कलाकेँ सीमित केने छथि। शहरकेँ दिस बेसी आकर्षण भेलाक कारण आबक लोक एहि कलाकेँ नहि सीखय चाहैत छथि। शहरमे जे मैथिल

परिवार रहैत छथि हुनका आङ्गनमे मिथिला पेंटिंग नहि भेटत, ओतबे नहि गाम-घरमे आब देबाल पर सीनरी भेट जाइत, मुदा मिथिला पेंटिंग नहि भेटत। एखन धरि एहि कलाक लेल संग्रहालयक मिथिला आ देशक आन भागमे कमी अछि। दोसर कारण अछि मिथिला कलामे रोजगारक संभावना, सम्पूर्ण मिथिला तऽ नहि मुदा किछु गाममे अवश्य ई कला रोजगारक प्रमुख साधन बनि गेल अछि। कोनो कलाकेँ रोजगार बनेबाक लेल कलाकारकेँ लगातार काज करय पड़ैत छैन्हि आ अपनाकेँ कलाकार जकाँ प्रचारित सेहो करए पड़ैत छैन्हि, ओतबे नहि ओकर बिक्री लेल सेहो प्रयत्नशील रहय पड़ैत छैन्हि।"

संजू जी मिथिला पेंटिंगक व्यवसायीकरण पर अपन विचार राखैत ओकरा संगोष्ठी मे कहने छलीह जे, "व्यवसायीकरण शब्दकेँ लोक गलत नजरिसँ व्यवहार करैत छथि। मुदा हमर अपन विचार जे कोनो कलाक विकासक लेल व्यवसायीकरण जरूरी छैक। व्यवसायीकरणक लाभ छै, तऽ किछु हानि सेहो छै। लाभ ई भेल जे मिथिलाक स्त्रीगण आर्थिक रूपसँ सबल भेलीह बिनु पढ़ला-लिखला स्त्रीगण देश-विदेश घूमि एलीह। हानि ई भेल जे आब बेसी कलाकार मौलिक काज नहि कऽ कऽ नकल करैत छथि। बेसी चर्चित कलाकार लोकनि दोसरासँ काज करावय लगलाह। किछु कलाकारक नीक स्थिति छैन्हि जिनका संपर्क छैन्हि, मुदा बेसी कलाकार ओकरा मजदूरीसँ नीक बूझि काज कऽ रहल छथि आ कलाकार बला सम्मानो भेटैत छैन्हि।"

ओकरा परिचर्चामे, एहि क्षेत्र मे आबय लेल आवश्यक प्रशिक्षण आ संस्थानक विषयमे अपन विचार राखैत कहने छलीह, "अपन

समाजम सभहक माए-बहीन एहि कलाक प्रशिक्षण दैत छथिन। मुदा, एखन धरि मधुबनी स्थित मिथिला आर्ट इन्स्टीच्यूट नीक कला संस्थान मानल जाइत छैक। किएक तऽ ओतय नीक शिक्षक, कलाक सामग्री आ नीक कलाकारक चित्र खरीदबाक व्यवस्था सेहो छैक। सिखबा लेल कोनो नीक कलाकारसँ सिख सकय छी मुदा सरकारी नौकरी लेल कला महाविद्यालयम शिक्षा आवश्यक अछि। ओतय पाँच सालक डिग्रीक संग बसी कलाकारक स्थान लवाक मौका रहैत अछि। भारतम सभ नगरम तऽ नै मुदा पटना, बनारस, लखनऊ, मुंबई, बड़ौदा, शांति निकतन आदिम एकर नीक पढ़ाइ मानल जाइत अछि। "

मैथिली-भोजपुरी अकादमी, दिल्लीक त्रैमासिकी पत्रिका 'परिछन' क देल अपन साक्षात्कारम "अपनक चित्रम बस चटख रंगक प्रयोग देखबाम अबैत अछि। अहाँ अपन कलाक अन्तर्वस्तुक संबंधम बतबियौक?" प्रश्नक उत्तर दैत कहलैन्ह, "हमर कलाकृतिम स्त्रीक भूमिका बस सकारात्मक रहैत अछि। किछु दिन पहिने स्त्री-मनोदशा आ ग्रामीण स्त्रीक सक्रिय भूमिका पर एकटा प्रदर्शनी आयोजित कयन छलहुँ। हमर मान्यता अछि ज जौं पुरुष आर्थिक जिम्मेदारीक निर्वाह करैत अछि तऽ स्त्री सेहो सामाजिक जिम्मेदारी निर्वाह करबाम सहयोग दैत छथि। गाम-घरक अशिक्षित स्त्रीगण सेहो शहरक कामकाजी स्त्री लोकनि जकाँ आर्थिक सहयोग दैत छथि। एकर अतिरिक्त हम स्त्री-पुरुष संबंधक जटिलताकेँ सेहो अपन चित्रक विषय बनौन छी। आरम्भ भनहिं हम पारंपरिक अरिपन आ कोहबर आदिक रचनासँ कयलहुँ मुदा एखन धरि हम कतका शृंखला (सीरीज) पर काज कयलहुँ अछि हमर पहिल प्रदर्शनी ग्रामीण

जीवनक क्रिया-कलाप सेहो चित्रित छल। हुनक 'मिड नाइट टॉक' चित्र बड़ चर्चित भेल। जकरा जर्मनीक एकटा कला संग्राहक खरीदने छलाह। एहन प्रदर्शनीमे हम 'श्वेत-श्याम चित्रक प्रदर्शनी' लगौने छलहुँ। आइ-काल्हि ग्रामीण दृश्य सेहो आधारित चित्र बना रहल छी। कुल मिला कऽ अहाँ कहि सकैत छी जे हुनक कला ग्रामीण जीवनक सकारात्मक पक्षकेँ चित्रित करैत अछि, कारण जीवनक आरम्भिक बीस साल हम गाममे रहलहुँ जकर प्रभाव आइ धरि हुनक काज सेहो अछि। अहाँ चाहि तँ हुनक कलाकेँ 'यादि मे बसल गाम' कहि सकैत छी।

हम मूलतः आकृतिमूलक चित्र बनबैत छी। चित्र बनएबासँ पहिने रेखांकनक माध्यम द्वारा दृश्य वा आकृतिक रचना करैत छी। हुनक कागत रेखांकनक संयोजनसँ सम्पूर्ण चित्रक कल्पना करैत छी। किछु कला मर्मज्ञ लोकनि हमर चित्रकेँ देखि कऽ जिज्ञासा प्रकट कयलैन्हि जे कोना सँ सहज एक दून अड़ान एक निकटमे चित्र एक संग नहि सीखल जा सकैत अछि तँ अपनाक ब्लु-प्रिंट की रहैत अछि। हम हुनका कहलियैन्हि जे दरअसल हम कलाक दृश्यकेँ एक संग क्रममे जोड़ैत छी। बस यात्राक क्रममे देखल गेल दृश्य हमर ब्लु-प्रिंट रहैत अछि। एखन धरि हम जलरंग रेखांकन, एक्रेलिक वा मिश्रित माध्यम सबसँ काज कयलौंह मात्र आयल कलरमे काज करब बाँकी अछि। अनुमान लगा सकैत अछि जे मिथिलाक लोक-कला स हुनक आत्मीय लगाव अछि हुनक चित्रमे मानवाकृतिक आँखि आ मुखमंडल बनाबटि मिथिला पेंटिंगसँ प्रभावित अछि। चित्ते, पशु इत्यादि हम मिथिला चित्रकलाक मूल स्वरूपहिं जकाँ बनबैत छी। हँ, रंग लेबाक ढंग व संयोजन आधुनिक कलासँ प्रभावित

अछि। विषयक सूक्ष्म संपूर्ण पूर्णिया संस्कृति दिस अछि। कोनो कला संप्रदाक संरक्षण व्यक्तिक रूप मे नहि होइत छैक। व्यक्तिगत रूप मे अहाँ अपन कलाकेँ निखारू आ ओकरा विकसित करत नहियो तँ निश्चित रूपसँ ओहि विशेषक कला संप्रदा समृद्ध होएत आ ओकर विकास स्वतः होएत।"

तँ एकटा आर प्रश्न, "समकालीन भारतीय कला परिदृश्य संबंधमे अपन किछु कहब चाहब? अहाँक कला-रचना समकालीन कला परिदृश्यमे कोन तरहेँ हस्तक्षेप रहल अछि?" कर प्रत्युत्तर मे कहलनि छलीह, "समकालीन परिदृश्य मे भारतीय कला संपूर्ण विश्वक केन्द्र बिंदु बनल जा रहल अछि। विश्वक सबसँ पैघ नीलामीमे भारतीय कला आ पारंपरिक कलाक नीलामी जोर-शोर सँ भऽ रहल अछि। दुनिया भरि मे भारतीय कलाक प्रति उत्सुकता बढ़ल अछि। दुनियाक सबसँ पैघ संग्रहमे मिथिला कला अओर पूर्णिया ओहिक कलाकार लोकनिक कलाकृति संग्रहित कएल जा रहल अछि। हमर कला समकालीन कला परिदृश्यमे हस्तक्षेप करैत अछि, एहि संबंधमे हम की कहू, ई तँ कला समीक्षक बतौताह। मुदा हमरा पहिल बेर अपन काजक महत्व तखन बुझबा मे आयल, जखन कलाकृति नेशनल गैलरी मॉडर्न आर्ट द्वारा खरीदल गेल। किछु विदेशी कला समीक्षक लोकनि सेहो हमर कलाकृति खरीदलैन्हि। माधवी पारेख, पिलायाच खोसलाला सन काफी महिला कलाकार जे स्वयं प्रशिक्षित छथि, हमर कलाकृति सँ प्रभावित होइत छैन्हि से जनौलैन्हि। हमर किछु रेखांकन हंस आ समकालीन भारतीय साहित्य सन साहित्यिक पत्रिका मे प्रकाशित भेल अछि।"

आइयक कलाक अंत कर बात मे पूछला पर कहैत छथि जे हमरा

जेना आइ-काल्हि दू तरहक कलाक ट्रेंड छैक - फोटो रियलिज्म आ दासन इंस्टॉलेशन कला। एकराक कारण बाजार छैक तऽ दासनक बाजार मे अपनाकेँ स्थापित करब। समकालीन कलाक दुनिया मे बाजार हावी छैक। जे कलाकारक कृति जतबा मे बिकैत छैक ओ ओतेक पैघ कलाकार मानल जाइत छैक। हालाँकि हम बाजारवादकेँ नीक मानैत छी, किएक तऽ जौँ हमर कलाकृति नहि बिकल रहैत तऽ हनिसक हम अपन छठा एकल प्रदर्शनी नहि कऽ पबितहुँ। अखन किछु दिन पहिने सोशल मीडिया पर हिनक कलाकृति बस चर्चा मे रहल, कारण छल हिनक कलाकृतिकेँ अश्लील वा कलाकृति मे अश्लीलता। एहि माद हमर एतब कहब अछि जे कोनो कलाकारक कलाकृति वा रचना पर अपन विचार रखनाय अति उत्तम विषय अछि, मुदा अपन विचार राखब सँ पूर्व ओहि विषयक जानकारी हनाय अति आवश्यक अछि। जाहि विषय मे ज्ञान नै अछि ओकर ज्ञान आ जानकारी लेलाक बाद अपन विचार राखब उचित। संजू दास जीक पेंटिंग केँ सूजसननाष् सदृश अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका अपन कवर पर स्थान देलक (जकर चहुँदिश प्रशंसा कएल गेल), इहो अपना सभ लेल गौरवक बात अछि। रहल अश्लीलताक बात, तऽ प्रत्येक व्यक्तिक नजरि, देखबाक-सोचबाक-विचारबाक अपन-अपन दृष्टिकोण होइत अछि। जखन किया अपन माएकेँ, अपन बहिनकेँ, अपन प्रेमीकेँ, अपन पत्नीकेँ, अपन बेटीकेँ देखैत छथि तऽ आँखि तऽ एक्के रहैत अछि मुदा सबकेँ देखबाक नजरि बदलि जाइत अछि। एक्के आँखिसँ लोक अपन माए, अपन पत्नी दुनूकेँ देखैत छथि, मुदा हृदय मे माए लेल श्रद्धा आ सम्मान तऽ पत्नी लेल प्रेम अबैत अछि।

ऽ्ली हमन व्यक्तिगत माननाय अछि ज अश्लीलता प्रकृति ता नचना म नै व्यक्तिक दृष्टिकोण म हाऽ्ऽत अछि। अयन दृष्टि नीक तऽ संसानक सए वस्तु नीक। संगहिं नीक कामक सदिखन प्रासाहन हवाक चाहि, नै की डाहिम नीम-नूक्ष निकालवाक चाहि। जना काना चित्रकान साहित्यिक नचना यदि कऽ चित्र वनावैत छथि, तऽ डाहि नचनाम समायल रानकँ डा अयन तूलीका सँ गढैत छथि। ठीक तहिना कतका नास कनि काना चित्र आ मूर्तिशिल्प दखि अयन कनिताक नचना कनैत छथि आ अयन नचना म डाहि मूर्तिशिल्पक हूवहू वर्णन प्रस्तुत कनवाक प्रयास कनैत छथि, तखन तऽ हूनक नचना डाकन (चित्र आ मूर्तिशिल्पक) प्रतिनूप वनत। संरनाः संजडी सहा अयन चित्रकानी म सभह गुण आनय लल ओहि तनहक प्रयाग कनैत हनीह।

-मूकश दत्त, मा 9910952191

**अयन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

२.६.शाविन्द्र चन्द्र दास- कामसूत्र क विना काना चित्र शैली नहि छैक- लाककला क साडात विश्वविद्यालय गुमनाम नायक कृष्ण कूमान

## कथ्य (ओ शशिवाला)*



### गोविन्द चन्द्र दास

## कामसूत्र क विना काला चित्र शैली नहि ठीक- लोककला क साओन विश्वविद्यालय गुमनाम नायक कृष्ण कुमार कथ्य (ओ शशिवाला)*





मिथिला लोककला आर संस्कृति केर महान कड़ी थीक। मुदा एकरा वैश्विक पटल पर अनबा मे कृष्ण कुमार कश्यप कें विशिष्ट योगदान छन्हि। ओना त ओ एकटा समाज सुधारक, नारी उत्थान केर संस्कृति दूत छलाह, मुदा विवाद सदा हिनक संग लागल रहल। कश्यप जी ओहिना कोनो परिचयक मोहताज नहि छथि। मिथिलाक संस्कृति विशेष क कला क संदर्भ मे हिनक अवदान क कहियो बिसरि नहि सकैछ आओर नहि बिसरबाक चाही। एकर बावजूद समाज आर समालोचक कश्यप जीक संग न्याय नहि कयलनि। हिनक मूल्यांकन उचित ढंग सं नहि कएल गेल। हिनका प्रति समाजक दृष्टिकोण बेस कठोर रहलैक। ओना त मिथिला कला संस्कृति अखनो समालोचनाक दृष्टि सं वंचित जकां अछि। मुदा सोशल मीडिया केर युग मे यदा-कदा नीक-बेजाय क विमर्श होमय लागल अछि। हालांकि कश्यप जी कें कामकाज केर आलोचना त होइत सकैछ, मुदा ताहि स्तरक कोनो अथॉरिटी नहि बुझना जाइछ, जे हिनक उचित आकलन कए सकैथ। समाजक वास्ते कश्यप जी कें कतेक पैघ योगदान छन्हि से बुझनाइ अत्यंत आवश्यक अछि। मुदा से नहीं, हिनक बनाओल चित्रकारी मे बेस सहजता सं अश्लीलताक अन्वेषण क लेल

जाइछ। मुदा ओतए बात नहि छैक। पहिल बात जे कला रसविहीन नहि भऽ सकैछ।

स्थानीय मानस मे ललनसक अवधारणा छैक। ताहि कोनो कलाकार रस सँ विलग भऽ नहि सकैछ। दोसर बात जे पृथक कलाकार आर कथाकार क अपन शैली होइत छैक आ तकर पहचान समाज क करय पड़ैत।

बातचीत क क्रम मे एक बेर हम कथय जी कँ कहित आश्चर्यजनक पेंटिंग पर प्रश्न कयलियैक त हुनक कहनाम रहैन जे बहुजन क जनतब मे मिथिला चित्र तखन एलै जखन एकर बाजार शुरू भेल रहैक। चाहे कोनो जाति क महिला एकरा बनबथि होथि चाहे कायस्थ समाज मे एकर बेसी चलन छैक त सबक बुझबा मे तखन एलैक जखन 30-35 बरख पहिने बाजार मे समान भेलैक। एकर मतलब ई नहि छैक जे एकर रचना मे कामसूत्र नहि छैक। कामसूत्र क बिना कोनो चित्र शैली नहि छैक। हुनक कहनाम रहनि जे पहिने कोहबर घर मे जाहिठाम कोठी राखल रहए ताहिठाम एकटा पार्टीशन होइत रहैक। सुनै छिऐ जे शब्द अछि कोनी-खाद्दी। ई खाद्दी कोहबर घरक एकटा गुप्त स्थान छैक। जाहिठाम सबहक आनाजाही नहि रहैत रहैक तकरा खाद्दी कहल जाइत रहैक। ताहि खाद्दी मे ललनस कामदेवक चित्र रहैत रहैक। त कामसूत्र जे छैक ताहि सँ वंचित कोनो कला शैली नहि छैक। आओर जखन मिथिला चित्र क बाजारीकरण भेलैक त एकरा बाजार मे अनलथिन क?... गंगा देवी, सीता देवी, जगदम्बा देवी। ई सब वृद्ध स्त्री, विधवा स्त्री चाहे ताहि ओज मे जे श्रीनामक भजन बेसी आओर दोसर चीज क चर्च-चर्च बेसी नहि कऽ सकैत छलथिन।

कथय जी कें नाम सं विवाद कें विगंतावाद ठाढ़ कएल गेल से उचित नहि। जाहि मिथिला चित्रकला कें ओ आजीविका आओर उपयोगितावाद सं जोड़वाक प्रयास कलैथ ओकरा नजरंदाज नहि कएल जा सकैछ। हिनक कृति मे प्रतीक आर बिम्ब क माध्यम निर्भीकता आर आत्मविश्वास सं चित्रण साहस क बात छैक। कथय जी कें लेखन वा चित्रकारी पर प्रश्न उठाओल जाइत अछि, मुदा ओ समाजक सच छैक। आर सत्य कर प्रकटीकरण करनाइ कोनो कलाकारक अधिकार छैक। ताहि विषय पर वाद विवाद भऽ सकैछ, मुदा एहि मे करल अश्लीलता देखनाइ कोनो कलाकार क संग अन्याय छैक। ताहि कथय जी कें काम कें अश्लीलताक संज्ञा दऽ खारिज नहि कएल जा सकैछ। यदि इएह बात छैक त कालिदास कर कालजयी रचना कुमार संभव आओर काशीनाथ सिंह कें "काशी का अस्सी" क खारिज कएल जा सकैछ की?
कथय जी जाहि पृष्ठभूमि सं छथि, ताहि मे ई बड़ साहसक बात छै। जाहि अभावक जिनगी (फीस जमा नहि करबाक कारणे स्कूल सं निकालि देल गेला) सं गुजरलाक बादो निजी स्वार्थ कें छोड़ि क समाज कें जे देलखिन ओ स्वयं मे एकटा उपन्यास छथि। हुनक मान मे ई एकदम स्पष्ट रहनि जे नारी उत्थानक आ ओकरा स्वावलंबी बनबाक काज करब। ओ गाम गाम घुमि मिथिला पेंटिंग क केंद्र स्थापित कऽ महिला सब कें जोड़ि हुनका सब क स्वावलंबी बनौलनि। पेंटिंग कें महज सजावटी वस्तु कर सोच सं बाहर निकालि क ओकरा उपयोगिताक सामग्री क रूप मे मान्यता दियाव कर प्रयोग हिनक देन छनि आर ई प्रयोग मिथिला कर बहुत परिवार कें संबल बनल। एहि सब क क्यो नकारि नहि सकैछ। बाद मे ओ

आत्मकथा लिखला बादसमती जाहि कें अध्ययन कला पर लोकक कुण्ठा गलि सर्वोच्च मुद्दा ओकर बदली आन ईमानदारी सं एतय सब लिखनाइ बड़ हिम्मत क बात छैक।

लोकतांत्रिक समाज मे आलोचना करबाक अधिकार त सबकें छैक, मुदा आलोचना आओर आरोप मे फर्क होइत छैक। एहन बात नहि, कथय जी जाहि पदक आओर सम्मान कें हकदार छलाह, ओ हुनका नहि भेटलनि। मुदा मानक काज करबा मे टीस रहब करैत छैक। सौराठ मे पहिल मिथिला लोक कला विश्वविद्यालयक स्थापना कएल गेलैक। विश्वविद्यालय त बनि गेल, मुदा सबसं पैघ संकट रहै जे एकर पाठ्यक्रम की होयत आओर क बनत? त कथय जी कें पात्रता आओर अनुरूप क देखैत ई काज हुनक सुपुर्द कएल गेल। एकर अलावा गरीब बच्चा या भिखमंगनी सबहक बच्चा के पढ़नाइ हुनक लक्ष्य रहनि। जाहि मे सदा विरोधक सामना करऽ पड़लनि। कुल मिलाकऽ कहल जा सकैछ जे महिला, दलित, पिछड़ल आन वंचित कें उत्थानक लेल सदिखन अथक प्रयास करैत दुनिया सं विदा भऽ गेलाह।

***(आ शशिबाला)*- सम्पादक द्वारा जोड़ल गेल। ई आलेखमे जऽ जऽ कथय जीक नाम अछि ओऽ *आ शशिबाला सेहो पढ़ल जाय, कारण कथय जीक जिनगी काटा चित्र ओहन नै अछि जे मात्र कथय जी आ शशिबाला संयुक्त नाम नै बनलनि। - सम्पादक**

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

## २.९.रवीन्द्र कुमार दास- परिवारक सहयोग सबसँ जरूरी



**रवीन्द्र कुमार दास**

## परिवारक सहयोग सबसँ जरूरी

कहवी छैक "ज हर सफल पुरुष क पाछू कोनो नै कोनो स्त्री क हाथ छैक" एहि कथन स हम सहमत छी मुदा स्थिति एकर विपरीत सेहो देखबा म आबि रहल अछि। संग्रह क कहानी हमरा जीवन म हमर बियाहक लेल चर्चा सँ शुरू होइत अछि। हमर बाबूजी कमराली गामक एकटा कथा आनल केलनि एकर मूल आधार छल कन्या चित्र लिखैत छलखिन। हमरा सरन्धा छल ज लड़की चित्र बनबैत होइथ नहि त कम स कम चित्रकार स घृणा नहि करैत होइथ किऐक त एखनहु अपन समाज म चित्रकार क लोक पागल बूझैत छथिन। द्विरागमन क बाद हमर मौसी संग दिस गाकि क

हमरा कहलीह जे अपन जकाँ पागल नै बना दिहन। जहाँतक पागलपन आ जुनून क गप्प छै

त आइयो हुनका म अपन कलाक लेल जुनून देखिक मोन हर्षित होइत अछि। आइयो हमरा खुशी होइत अछि जखेन कोनो कला लेखक वा चित्रकार हिनका स रंग घाँट करवा लेल अबैत छथिन आ पूछैत छथिन चित्रकार संग दास जाय रहैत छथिन हुनका स रंग करवाक अछि। हमरा जनितब मात्र पढ़ाइय म नहि बल्कि चित्र, अभिनय, संगीत, नृत्य वा साहित्य कोनो विधा म सफलताक लेल जुनून हेनाइ जरूरी छै। हमरा मोन अछि जे प्रथम मिलन म हम हिनका स्केचबुक पेंसिल आ कलर बॉक्स रंग कर नही कोनो गहना जरूर नहि।

विवाह क किछु दिन बाद संग हमरा कहलैन हमरा मोन होइत अछि जे हमहू आर्ट कॉलेज म पढ़ि क कला क विधिवत शिक्षा ली। हम कहलियैन तैयारी करु, टेस्ट दियौ एडमिसन भय जाइत अछि त पढ़ब म रहू, ओना तांटा त अछिय। टेस्ट देलनि मुदा एडमिसन जाकर तैयारी नहि छलैन एडमिसन नहि भेलैन। हम कहलियैन जे अहाँ दुखी नहि होउ कलाकार बनवा लेल मात्र जुनून आ लगातार प्रैक्टिस चाही। दुनिया भरि म आ ओहि देश म कतेका कलाकार आर्ट कॉलेज स नहि छथि। ताक पद्मश्री सम्मान स सम्मानित मिथिला पेंटिंग क कलाकार सब कोनो आर्ट कॉलेज म शिक्षा न पढ़ने छथिन।

संग दिल्ली एलीह एकर बाद स्थिति बदलल। हम पटना आर्ट कालेज स फाइन आर्ट क कोर्स कलहुँ आ एकटा अखबारक कला विभाग मे नौकरी ज्वाइन कलहुँ। एखन हम पटना मे रहैत नहि। हमर जाँक मित्रगण छथि जाहि बसी आधुनिक कलाकार छथि। घर मे बैसल छोट छोट पेंटिंग बनबैत आ मित्रगण के देखबैत। हमरा घर मे बसी आधुनिक कला पर चर्चा होइत छल। नहु नहु हिनका आधुनिक कला मे रुचि लेब देखलहुँ। मॉडर्न आर्ट गैलरी मे एकटा स्थानीय समकालीन महिला कलाकारक प्रदर्शनी देखलाक बाद ओ निर्णय कलनि जे आब हम आधुनिक कला शैली सीखब आ ओहि शैली मे काज करब। धीरे धीरे करय लगलीह आ प्रदर्शनी सब मे भाग लय लगलीह। मित्र लोकनि कहलैन जे नीक काज करैत छथिन अहाँ हिनकर एकल प्रदर्शनी आयोजित करू। दुनू गोटे निर्णय कलहुँ आ हिनक पहिल प्रदर्शनी निशुल्क होटलक कारण ग्रीनलेज बैंक के बाथरूम शाखा मे लगाओल गेल। ओतय प्रशंसा त खूब भेलनि मुदा एको त पेंटिंग बिकल नहि मुदा हम दुनू गोटे निराश नहि भेलहुँ। एक साल तक किछु आर पेंटिंग कलीह जाहि मे एकटा बड़का कैनवास सेहो छलैन। सबटा पेंटिंग क दासन प्रदर्शनी मंडी हॉउस स्थित रबीन्द्र भवन ललित कला अकादमिक गैलरी मे आयोजित भेल। ओहि प्रदर्शनी मे पहिल दिन हिंदुस्तान टाइम्स क रंगीन पेज मे हिनकर पेंटिंग छपल आ साँझ तक मे बड़का कैनवास बला पेंटिंग बिका गेल। कतेक कलाकारक लग ओकर पेंटिंग बिका जाए ओहि स बड़का खुशी आर की होयत। एकर बाद हिनका मे हम अद्भुत उत्साह देखलहुँ। आइयो धरि कतेक पुनस्थान भेटलैन, कतेक प्रदर्शनी आ कला शिविर मे भाग लेल होयत मुदा

पहिल थिएटर क विकनाइल जीवन म बहुत महत्वपूर्ण होइत छैक। आइ अपन सब -कुटुंब नैहर आ सासुरक लोक गर्व स हिनका स भेंट करैत छथिन फोटो खिंचबैत छथिन। हमरा याद अछि जहिया पहिल बेर इ टेलीविजन क समाचार म आयल रहैथ तकरा देखिक हिनक माँ खुश भय गेल रहथिन। हम दुनु गोटे सङ्ग ऊधि नहि बिसरि सकैत छी जहिया हिनका बिहार सरकारक वरिष्ठ महिला कलाकार सम्मान भेटलैन हमर बाबूजी आ माँ दुनु गोटे ओहि कार्यक्रम म जबाक लेल उत्साहित रहैथ।XZ

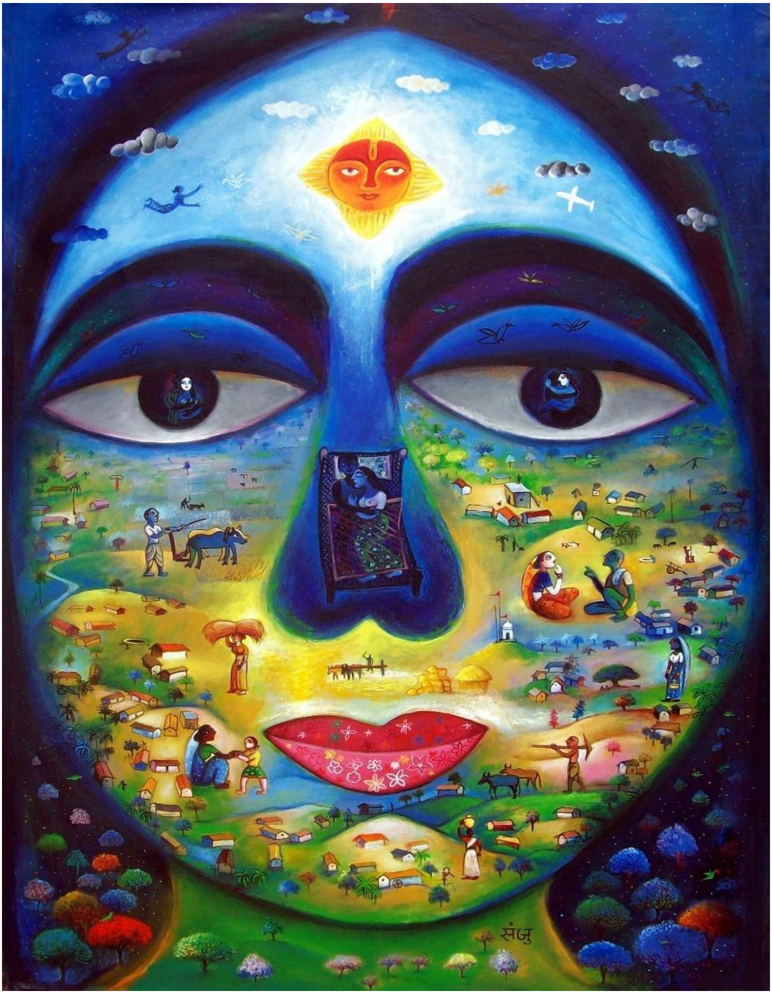
* एक त अपन समाज म कला,रंगमंच,साहित्य,संगीत आ नृत्य क सबस अधलाह काज बूझल जाइत छैक ओहि विषय पर चर्चा करनाइ सङ्ग अधलाह बात अछि। हमर विचार स हुन स्त्री म कोना न कोना प्रतिभा अवश्य होइत छैक आ हुनका म लालसा होइत छनि जे हमरा मौका भेटैत त हमहूँ किछु करितहुँ मुदा अपन समाज म आइयो धरि हुनकर परिवार आ परिवेश स सहयोग नै भेटैत छनि। हाल म हिंदी आउटलुक पत्रिका क पुरा अंक स्त्री देह विशेषांक छपल छल ताहि म सँझक कतेका रेखांकन छपल छलैन। पुरा अंक फेसबुक पर शेयर कलनि त किछु लोक लिखलाह जे जानि बूझिक संझ चर्चा म एबाक लेल अश्लील चित्र बनबैत छथि। एहन किछु दिन पहिने 2008 क मैथिली पत्रिका अंतिका म छपल एकटा रेखांकन पर खुब चर्चा भेल। किछु गोटे लिखलाह जे संझ दास आ कृष्ण कुमार कश्यप दुनु मिथिला कला म अश्लीलता पसारैन रहल छथि। किछु गोटे लिखलैन जे मात्र चर्चा म एबाक लेल ओहि तरहक चित्र बनबैत छथि। हम संझ क एक्का त गप्प करैत छियैन जे लोक पिकासो आ फ्रांसिस न्यूटन सूजा क

कलाकृति देखत त एना नै की कहत ।एतय क सबस प्रतिष्ठित महिला कलाकार अमृता शेरगिल अपन सहज बूत बनौन छथि मैथिल समाज क सहज देखवाक वाली ज दिल्ली म राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घा म संग्रहित अछि।

-नवीन्द्र कुमार दास, मो. 9811712398

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

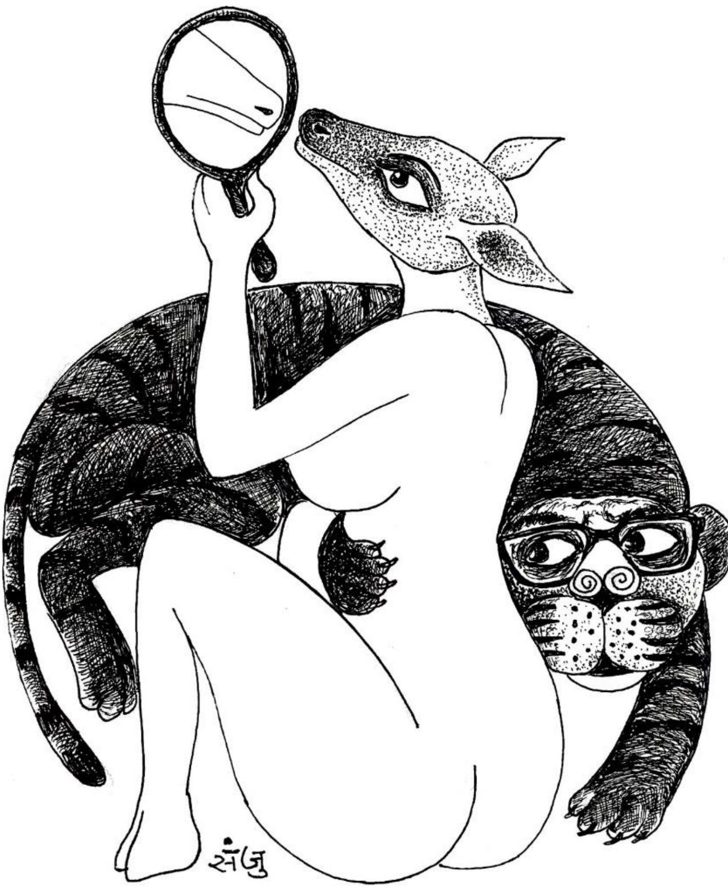
## २.१०.संजू दासक किछु चित्रल कलाकृति

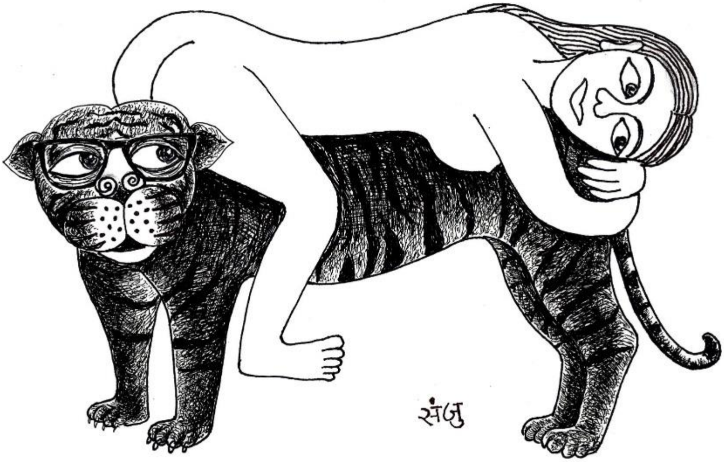





संजु


संजु


संजु


संजु





अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

## २.११.गजेन्द्र ठाकुर- कृष्ण कुमार कश्यप आ शशिबाला- एकटा परिचय



**गजेन्द्र ठाकुर**

**कृष्ण कुमार कश्यप आ शशिबाला- एकटा परिचय**



**कृष्ण कुमार कश्यप**- जन्म १७ सितम्बर १९४९ ई.। मृत्यु- १२ अगस्त २०२० ई.। पिता- कवि-उपन्यासकार स्व. ब्रजनारायण लाल "सँवलिया"। जनवरी १९६७ ई. मे नेना सभ लेल "नाइट स्कूल", १९८१ ई. मे "कला आधारित जीवन आ शिक्षा पद्धति"क

प्रवर्तन आ एकर कार्यान्वयन लेल शिना कश्यप आ शशिबालाक सहयोगसँ "ग्रामीण विकास संस्था"क स्थापना। रचना: शशिबालाक संग "मेघदूत" आ "गीत-गोविन्द"क मैथिली अनुवाद; माछ-भात; मिथिला चित्र प्रवेशिका भाग-१-२; मिथिला चित्र-ज्ञान, भाग-३; मिथिला अरिपन भाग-४; गोदना चित्र-शैली- भाग-५; मिथिला लोकचित्र।



**शशिबाला**- पिता श्री उग्र नारायण लाल, पति श्री उमेश कुमार कर्ण (बिसहथ)। रचना: कृष्ण कुमार कश्यपक संग "मेघदूत" आ "गीत-गोविन्द"क मैथिली अनुवाद; माछ-भात; मिथिला चित्र प्रवेशिका भाग-१-२; मिथिला चित्र-ज्ञान, भाग-३; मिथिला अरिपन भाग-४; गोदना चित्र-शैली- भाग-५; मिथिला लोकचित्र।

कृष्ण कुमार कश्यप जी सँ लेल गेल साक्षात्कार साक्षात्कार-२ म कृष्ण कुमार कश्यप जी कलाक विभिन्न पक्षपर अपन विचार रखने छला। मिथिला चित्रकलाक नाम मधुबनी चित्रकला करबायब ओ चिन्तित छला। जितवारपुर स्कूल आ आन गामक मिथिला चित्रकलाकारक बीचक खाँटि सत्य उजागर भेल।

"जखन लोक बाहरसँ अबैत तँ पुछैत जे अहाँक गाम कोन जिलाम अछि, आ स बुझन जे हम सभ मधुबनी वा दरभंगा जिलाक छी ओ बजैत 'यु आर नॉट फ्रॉम द ओरिजिनल प्लेस'- माने ओकरा होइ छै जे हमर चित्रकला असली मधुबनी चित्रकला नै छी आ स जितबारपुर स्कूलकेँ सुट करै छै।"

नरेन करुणाकरण अपन आलेख "मिथिलाज वुमन पेंट देयर वे आउट ऑफ पावर्टी" मे लिखै छथि- "बिहारक बरहता गामम ग्रामीण विकास मंच गरीब महिलाकेँ चित्रकलाक मिथिला पद्धति सिखा रहल अछि, जइसँ बहुत रास महिला गरीबी रेखाम अपनाकेँ समर्थ कऽ सकल छथि।"

नरेन करुणाकरण लिखै छथि जे कृष्ण कुमार कश्यपक पहिल शिष्या शशिबाला, जे आब ओहो शिक्षिका छथि, हुनका कहलखिन जे "एकटा गरीब मुसहर समुदायक हाथीक थीम आधारित चित्र अति सुन्दर होइत अछि।" शशिबाला हुनका ईहो कहलखिन्ह जे जार बारिहार महिलाक हाथ कम कारगर होइ छै आ जखन ओइम सँ किछु गोट कोमलतासँ कूची नै प्रयुक्त कऽ सकली तँ हुनका चित्रसँ अलग दोसर कला जेना टाकती, टेबुलक्लॉथ आदि बनाइ म लगाओल गेल। मुदा बहुत गोट आस्थासँ कूचीक प्रयोग करनाइ सीखि गेली।

उित जल पानक गगन समीना आधारित पाँच टा रंगक अतिरिक्त दलित-आदिवासीक कलाक रेखा आ काट संग ओकर थीमक प्रवश मिथिला चित्रकलाम गोदना शैलीकेँ प्रवश दियन अछि।

कृष्णु कुमार कश्यप अपन स्कूलमे एकटा डोम छात्राक प्रवेश देने छलखिन्ह, दोसर छात्रा सभ हुनकर सहयोग करै छलखिन्ह मुदा गौँआ सभ हुनकर विरोध करै छलन्हि। हुनकर स्कूलमे किछु मुस्लिम छात्रा सेहो रहथि आ ओ लोकनि हिन्दू धर्मक चित्रांकन करबामे कहियो संकोच नै केलन्हि।

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१२.जितेन्द्र झा, जनकपुर- मिथिला चित्रकला- नेपाल प्रसंग



जितेन्द्र झा, जनकपुर

## मिथिला चित्रकला- नेपाल प्रसंग

१

### अपन घरमे उपेक्षित मिथिला चित्रकला

मिथिलाञ्चलक घरक देवालमे बनाओल जाएवला मिथिला लोकचित्रकला निश्चये ख्याति कमओने अछि। मुदा एखन अपन भूमिमे एकरा पहिचान खोजबाक स्थिति छैक। मिथिला चित्रकलाक सरकार बेवास्ता कएने अछि, तेँ ई व्यवसायिक रूप नहि लऽ सकल अछि। एकर व्यावसायिक प्रवर्द्धन नहि भऽ सकल अछि। ग्रामीण क्षेत्रक महिलाक जीवनस्तर सुधार करबाक लेल बड़का साधन भऽ सकैत अछि ई चित्रकला। कियाक त खासकऽ मैथिल ललनाक हाथमे नुकाएल रहैत अछि ई चित्रकलाक जादूगरी। आर्थिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक समृद्धिक अथाह सम्भावना अछि मिथिला चित्रकलामे। लोकचित्रकलाक व्यवसायिक स्वरूप देलासँ आर्थिक आ सांस्कृतिक दुनू लाभ उठाओल जा सकैत अछि। परम्परागत मिथिला चित्रकला जीवनक अंग अछि मिथिलामे। लोकचित्रकला संस्थानक स्थानक सेहो अछि। मुदा बढ़ैत आधुनिकताक कारणे निर्माण प्रभावित भेल छैक। नामी मिथिला चित्रकलाक एखनधरि चिह्न नहि सकल आनाय चित्रकारसभक छथि। नेपाल सरकार कलाक बढ़ावा देबालेल ललितकला प्रज्ञा प्रतिष्ठान खोलने अछि। जकरऽक प्राज्ञ परिषदमे मिथिला चित्रकलासँ सम्बद्ध एकोटा लोक नहि अछि। ई एकटा प्रमाण मात्र अछि, आन बहुतो ठाम मिथिला चित्रकलासँ सौतिनिआ व्यवहार होइत आएल छैक। एना ललितकला प्रज्ञा प्रतिष्ठानक

कुलपति किनका मानद्वन कहैत छथि जे मिथिला चित्रकलाक विशेष स्थान देल छै। मिथिला चित्रकलामे विशेष दखल रहनिहारि महिलाक स्थान देल जाइत से कुलपतिक कहब छन्हि। हिनक कथनी आ करनीमे कतेक समानता अछि, आब ई बला दिन बताओत। जँ ई समग्र कलाक उन्नतिक बात होइक तँ ई मिथिला पेन्टिङक चित्रकार नहुँ अछि, एकरा निश्चित करबाक चाही। मिथिला चित्रकलासँ सम्बद्ध चित्रकारक उचित अवसर देबाक चाही। नेपाल पर्यटन वर्ष २०११ मना रहल अछि, एहूमे मिथिला चित्रकलाक मादे सेहो पर्यटकक आकर्षक केन्द्र बनि सकैत अछि। एहिबीच काठमाण्डुक बबरमहलस्थित सिद्धार्थ आर्ट ग्यालरीमे एस. सी. सुमनक मिथिला चित्रकला प्रदर्शनी मिथिला कसमस हालहि सम्पन्न भेल अछि। एहि प्रदर्शनीमे कलाप्रेमी मिथिला चित्रकलाक आधुनिक आयामसभसँ परिचित भेलथि। सिद्धार्थ आर्ट ग्यालरीमे हुनक ११ म् प्रदर्शनी छल ई। मिथिला जनक जीवनशैलीक मनोभाव बला चित्रकलासभ दर्शकसँ ग्यालरी मिथिलामय भऽ गेल छल। एस. सी. सुमन मिथिला चित्रकला जगतमे परिचित नाम छथि। हिनक चित्रकलासभ बेस प्रशंसा पओलक। मिथिला चित्रकला सम्बन्धमे अध्ययन अनुसन्धानक सेहो बहुत खगता छैक। मिथिला लोक चित्रकलाक कोनो खास नियम वा सिद्धान्त नहि होइत अछि। ई सभ स्वच्छन्दताक पर्याय सेहो अछि। मिथिलाक समृद्ध संस्कृतिक परिचायक सेहो अछि।

२



## 𑒋𑒮.𑒮𑒲 𑒮𑒳𑒧𑒢, 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩, 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒏𑒪𑒰

## 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒋𑒪𑒏 𑒮𑒾𑒞𑒱𑒢𑒱𑒂 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒯𑒰𑒩

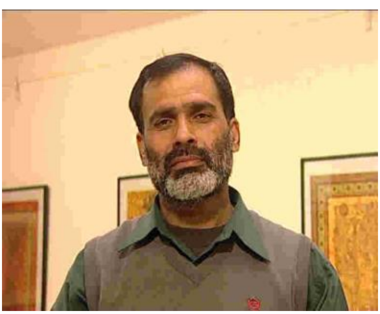


𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒣𑒩𑒧𑓂𑒣𑒩𑒰𑒑𑒞 𑒏𑒪𑒰 𑒁𑒕𑒱, 𑒄 𑒏𑒪𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒣𑒰𑒚𑒬𑒰𑒪𑒰𑒧𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒮𑒱𑒐𑒰𑒍𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 । 𑒣𑒲𑒜𑓃𑒲𑒠𑒩 𑒣𑒲𑒜𑓃𑒲 𑒄 𑒁𑒣𑒢 𑒂𑒣

सिखबाक काज होइत छैक । हमहूँ अपन दादीसँ सिखलहुँ । काकी सासुसँ पुतहु सिखैत अछि आ कखनो मायसँ बेटी । ताहि परिवेशमे हमहूँ अपन दादीसँ मिथिला चित्रकला सिखलहुँ । मिथिला पेन्टिंगक अन्तर्राष्ट्रीय बजारमे बहुत माँग अछि । ई आ एट काक अछि । कलाकारक कलाकारिताक निर्दर्शन करैत छैक डाकर माल । जेना हमर पेन्टिंग ११ हजारसँ लऽकऽ ८० हजारधरिक अछि । ई सहज बिका जाइत अछि । मिथिला पेन्टिंग व्यावसायिक रूप लेबा दिस उन्मुख अछि । कमर्सियल मार्केटमे देखी त सेरामिकमे, ब्यागमे कपडा आदिमे एकर प्रयोग भऽ रहल अछि । ई नीक बजार छैक एकर । जँ अपन बात करी त जहन हम बजारमे अबैत छी त प्रदर्शनी लऽ कऽ हमरा कतेो दिक्कति नहि होइत अछि । मिथिला चित्रकलाक विकासक ई आधारसर अछि स किछु कमजोर भऽ रहल अछि जेना पहिने माटिक घर होइत छलै । भीतक घरमे मिथिला चित्रकलाक नीक अभ्यास होइत छलै । माटिक घरक ठाममे आब क्रंक्रिटक जंगल अछि भऽ गेल । सामाजिक संस्कार आदिमे सेहो भीतमे लिखबाक चलन छलै । मुदा आब बच्चा जँ पेन्सिलसँ देवाल पर किछु लिखि दैत छैक त मायबाप डाँटि दैत छैक । ई भीतमे लिखबाक चलन प्रभावित भेल अछि । गोइया तनाइक मूसहर नक्षी, थारू आ सांगत जातिक नक्षीमे माटिक घरमे मिथिला चित्रकला देखल जा सकैत छैक । नेपाल सरकार एखनधरि किछु नहि कऽ सकल अछि, मिथिला पेन्टिंगक लेल । मिथिला पेन्टिंग जन्मऽ अछि अपन बुनायन, अपन स्थान अपन बनौने अछि । मिथिला चित्रकलामे लागल कलाकारसभ अपन मेहनतिसँ आगु बढ़ल अछि । ललितकला प्रज्ञा प्रतिष्ठानक गठन

कतेक काल प्रज्ञा परिषदमे मिथिला चित्रकलासँ सम्बद्ध एकहु गोटेक नहि राखल गेल। नामक लेल सदस्य मिथिला पेन्टिङसँ हटल एकगोटेक जगह देल गेलै, बादमे विवाद भेलै आ ओहो पद छोड़ि देलनि। व्यक्तिगत रूपमे हमरा पूछी त राज्य मिथिला चित्रकलाक लेल न किछु कएने अछि आ न किछु कऽ सकैया। *(सुमनकसँग जितेन्द्र झा द्वारा कएल गेल बातचीतपर आधारित)*

३



**धीरेन्द्र प्रेमर्षि- साहित्यकार**

**प्रगतिक पथपर मिथिला चित्रकला**

गुणात्मक दृष्टिकोणसँ सेहो मिथिला पेन्टिङमे बहुत काज भऽ रहल अछि। परम्परा आ आधुनिकता दुनूक जोतिकऽ एस.सी सुमन मिथिला पेन्टिङक आगू बढा रहल छथि। मदनकला देवी

कर्ण, श्यामसुन्दर यादवसहितक व्यक्तिसभ परिमाणात्मक आ गुणात्मक दुनू तरहें मिथिला पेंटिंगक आगू बढ़ा रहल छथि। सुमनक पेन्टिङ आधुनिकताक आकाशमे सेहो रेखापूर्ण उड़ान रहल अछि मुदा धरती बिन छोड़ने, ई एकदम महत्वपूर्ण बात अछि। मिथिला पेंटिंगक साधनाक नूतन लऽ कऽ आगू बढ़निहार सभ अपन आय आगू बढ़ि रहल छथि। नारीक दिससँ मिथिला पेन्टिङक लेल कोनो खास काज नहि भऽ सकल अछि। राष्ट्रिय स्तरपर चित्रकारसभक मूल्यांकन करैत काल मिथिला पेन्टिङसँ जुड़ल व्यक्तित्वक ओ स्थान आ सम्मान देल जएबाक चाही, से नहि भऽ सकल अछि। जनस्तर आ अन्तर्राष्ट्रिय स्तरपर मिथिला पेन्टिङ नीक सम्मान पओने अछि। देशमे मिथिला पेन्टिङक स्थापित कएल जाए। खास कऽ महिला सभ एकरा जोगाकऽ रखने अछि। मैथिल महिलासभ किशोर अवस्थासँ अरिपन लिखब शुरू करैत अछि। गुसानी पाबनि आदि सभ सेहो मिथिला पेन्टिङ सिखएबाक अवसर अछि। विविध पूजाक माध्यमे ओ सभ चित्रकलामे प्रवेश करैत छथि। नारीक दिससँ मिथिला पेन्टिङक स्वीकार्यता बढ़एब, व्यावसायीक सम्भावनाक खुला करब, एहिमे लगनिहारसभक सम्मानक वातावरण बनएबाक काज करबाक चाही। तखन ई राष्ट्रिय स्तरपर स्थापित भऽ सकत। एहिमे अन्तर्निहीत वैशिष्ट्य जे अछि ताहिसँ ई अपन अन्तर्राष्ट्रिय स्तरपर स्थापित भ' जाएत, व्यापक भऽ जाएत। *(शिल्पा झा द्वारा कएल गेल वार्तालापक आधारित)*

(विदेह सदेह ३६)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.१३.गजेन्द्र ठाकुर- श्वेता झा चौधरी- एकटा परिचय



## गजेन्द्र ठाकुर

## श्वेता झा चौधरी- एकटा परिचय



श्वेता झा चौधरी, *गाम सरिसब-पाही, ललित कला आ गृहविज्ञानमे स्नातक। मिथिला चित्रकलामे सर्टिफिकेट कोर्स। कला प्रदर्शिनी: एक्स.एल.आर.आइ., जमशेदपुरक सांस्कृतिक कार्यक्रम, ग्राम-श्री मेला जमशेदपुर, कला मन्दिर जमशेदपुर ( एक्जीबिशन आ वर्कशॉप)।*

*कला सम्बन्धी कार्य: एन.आइ.टी. जमशेदपुरमे कला प्रतियोगिताम निर्णायकक रूपमे सहभागिता, २००२-०७ धरि वसना, जमशेदपुरमे कला-शिक्षक (मिथिला चित्रकला), तुमन कॉलेज पुस्तकालय आ हॉटल बुलवार्ड लेल वाल-पेंटिंग। प्रतिष्ठित प्रायोजन: कॉनफ्लुएन्ट कम्युनिकेशन्स, टिस्को; टी.एस.आर.डी.एस, टिस्को; ए.आइ.ए.डी.ए., स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, जमशेदपुर; विभिन्न व्यक्ति, हॉटल, संगठन आ व्यक्तिगत कला संग्राहक। हॉबी: मिथिला चित्रकला, ललित कला, संगीत आ कानन-भ्रमण।*

१

ई चित्र धानक कटनी कालक मिथिलाक गामक चित्रण करैत अछि। पुरुख-पात खेतसँ हँसिल धन अनैत छथि तँ महिला ओहि हँसिलकेँ पैयान कऽ चाउर बनबैत छथि। अपन दैनिक जीवनसँ हटि कऽ एहि अवधिमे महिला एकत्रा होइ छथि आ गप-सनक्का करै छथि।



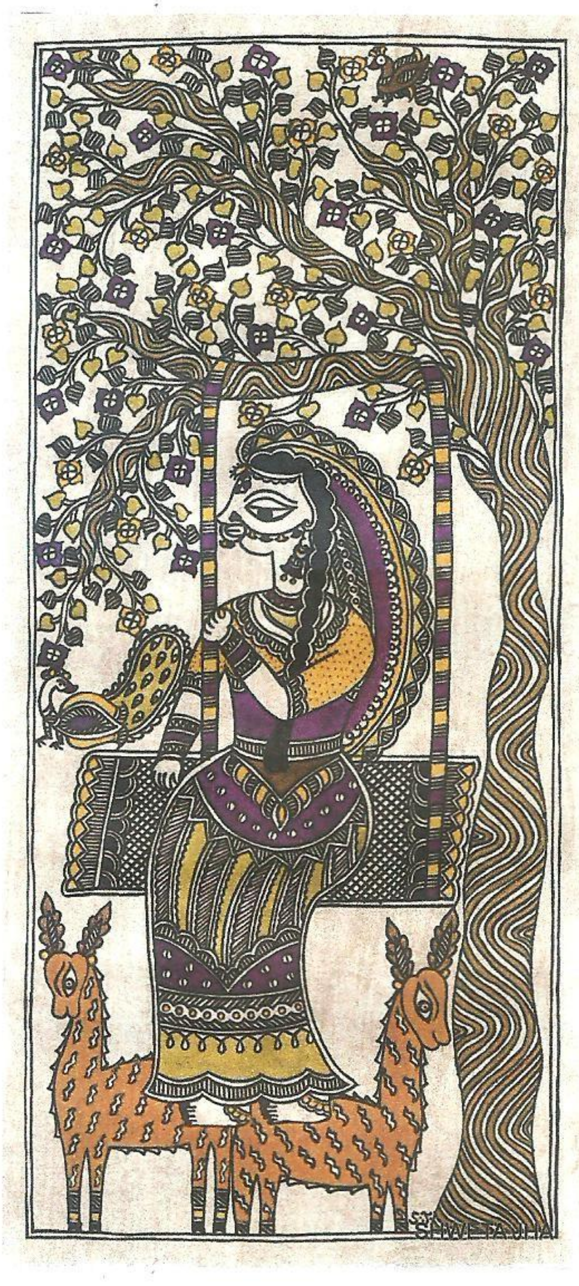
२

जखन कखनो प्रेमक गप अबैत अछि तखन सभसँ पहिने मोनमे राधाकृष्णक ध्यान आबि जाइत अछि। ई चित्र ओहि प्रेमकेँ देखेबाक एकटा प्रयास..।


SHWETA JHA.
'06

३

सावन मासम वनखाक फूहीसँ सीजल माटिक सुगन्ध लेन मूला मूलेक आनन्दक कोना सीमा नहि ..।


SHWETA JHA

४

## डोली कहार

सासुर जएबाक काल नव कनियाँक मनक दुविधा- नैहरक छूटैक दुख आ नव जीवनक उत्साह। डोली सँ अनजान कहार सभ उमंगपूर्वक कनियाँकेँ सासुर पहुँचाबैत...



५

## कनिया पुतरा

मिथिलाक लड़की सभमे कनिया-पुतरा खेलक खूब चलनि अछि। छोट आ पैघ सभ मिलि खेलक आनन्द लैत छथि...



६

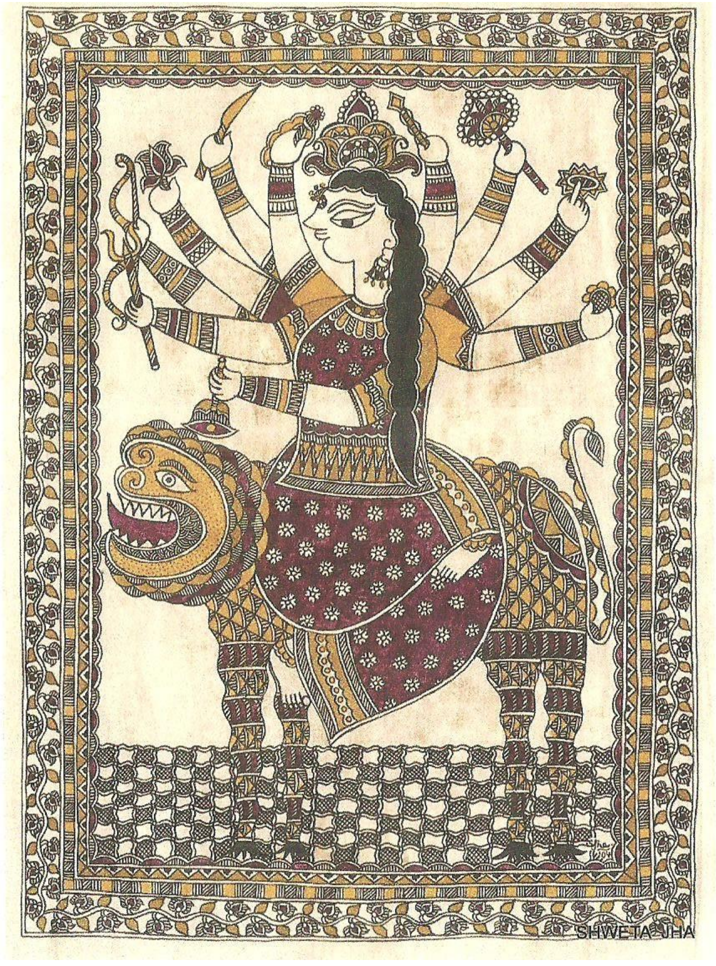
## साधूवावा

## साधूवावाक चित्रण मिथिला चित्रकलामे आधूनिक नूयँ कनवाक प्रयास...



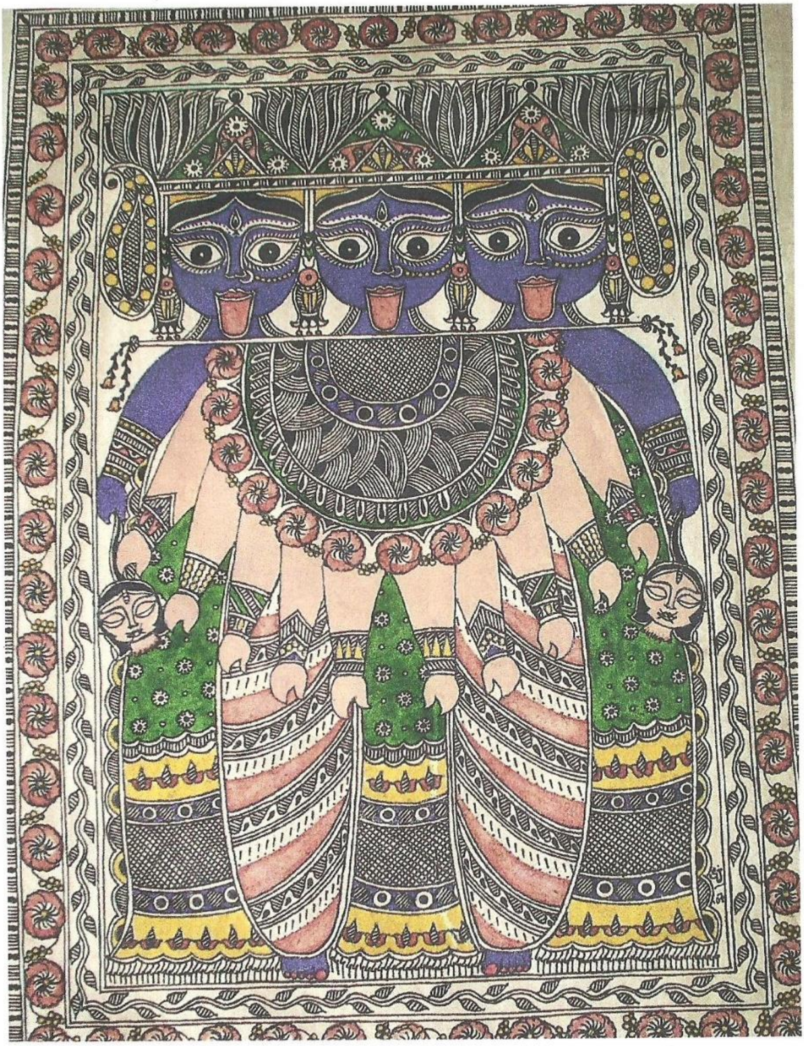
१

# दुर्गापूजा



८

# काली माँ



६

# यनिरन्नी




१०



११



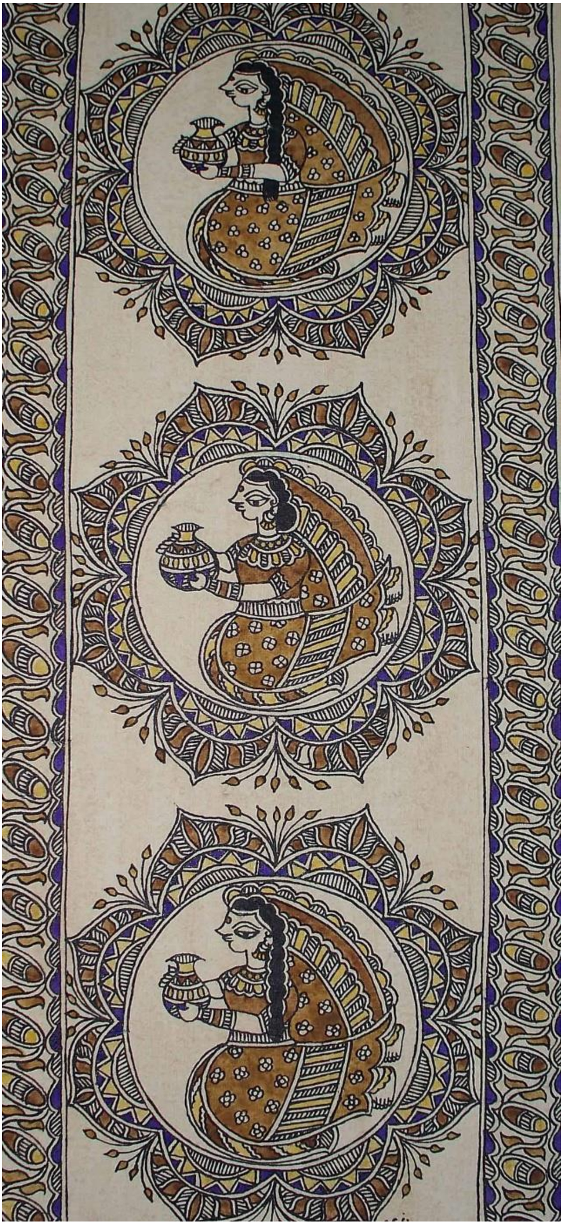
१२

चित्रक विषयमः सूर्य आशाक आ संकल्पसिद्धिक प्रतीक अछि, अज्ञानक वारक प्रकाशक प्रतीक अछि। मोर पृथ्वीक जीवनक गति अछि, दैवत्वक आशीर्वादक प्रतीक अछि। ई विश्वक सभ संस्कृतिमे मोर पूजित अछि, खास कऽ मैथिल संस्कृतिमे (छठि आ मकर संक्रान्ति)। मोर चित्र ओ सभकेँ चित्रित करबाक प्रयास अछि।

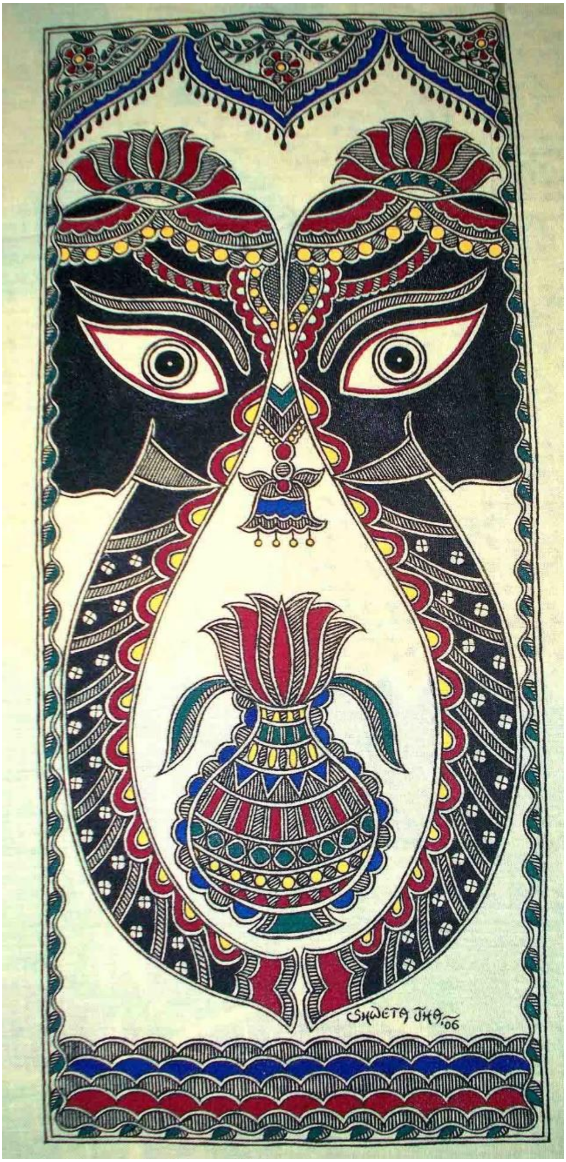


१३

चित्रक विषयमः सूर्य आशाक आ संकल्पसिद्धिक प्रतीक अछि, अज्ञानक बाधक प्रकाशक प्रतीक अछि। ई पृथ्वीक जीवनक ज्योति अछि, दैवत्वक आशीर्वादक प्रतीक अछि। ई विश्वक सभ संस्कृतिमे पूजित अछि, खास कऽ मैथिल संस्कृतिमे (छठि आ मकर संक्रान्ति)। ई चित्र ओ सभकेँ चित्रित करबाक प्रयास अछि।



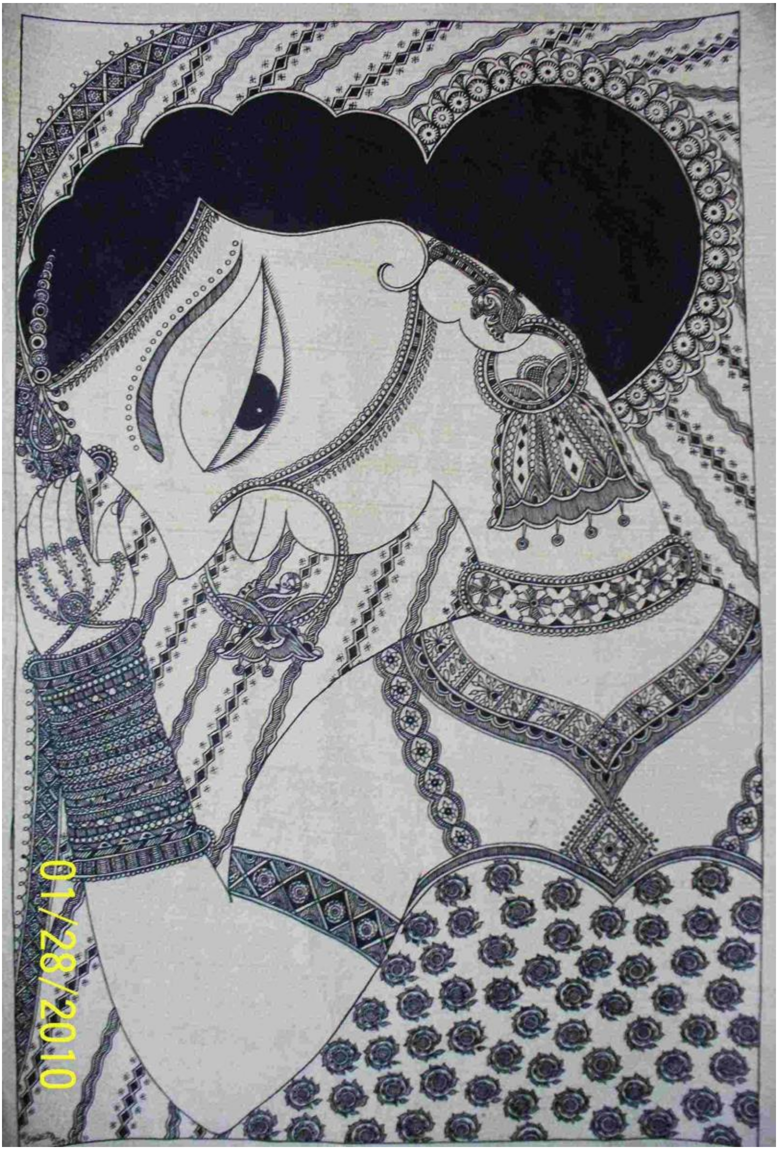
१४




१३


'04
PIYUSH

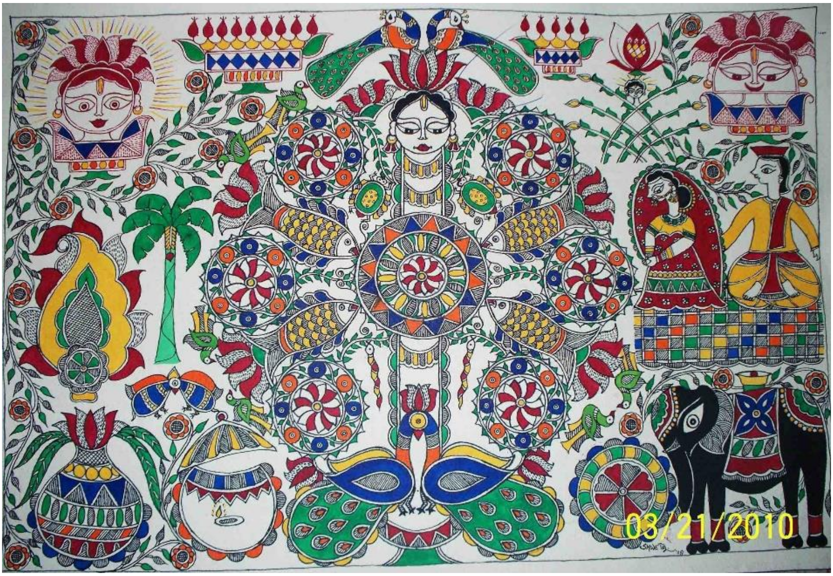
१६



११



१६



१९



२०



२१



(𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒮𑒞𑓂𑒩 𑓓𑓗)

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com 𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।

# ३ अंकक अन्यान्य रचना

## ३.गद्य खण्ड

३.१.डॉ. उदयनाथ झा 'अशोक'-गामक नामकरण: एक परिशीलन

३.२.संतोष कुमार राय 'बटोही'-मंगनौना (एगारहम खेप)

३.३.संतोष कुमार राय 'बटोही'-समीक्षा- जिनगी रहल बनि खेल

३.४.नवीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- २५ म खेप

३.५.कुमार मनोज कश्यप-डा दधीचि

३.६.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खेप-११)

३.७.प्रदीप झा- करमनरु

३.८.आचार्य रामानन्द मण्डल-मिथिला के लाल: उपन्यास सम्राट फणीश्वरनाथ रेणु आ यात्री

३.९.डॉ. किशन कारीगर-लांगी उँस(हास्य कटाक्ष)

३.१०.लाल देव कामत-मिथिलाम मांगेन खनाश छैऽ! (आगाँ)/ वर्गिण नस/ चारु याखणा'क अर्थ जानि गेलहुँ (लघुकथा)/ लघुकथा-यनचाक निर्हिणार्थ/ चलला मुनानी छकवय (लघु कथा)/ लघु कथा-हलहोन/ मैथिली विहेन कथा- -सायनयिह्रा/ राग जागल- निहेन कथा/ सुनैना वटी - मैथिली सामाजिक उपन्यास/ लिख यटायेट मानय दयरु (लघुकथा)/ लघुकथा- ऽी गु७ खनै कान छदैन/ अम्बारि यानि ३0ल-लघुकथा (मैथिली)/ नाज सरुत लिबी (लघुकथा)/ लघुकथा -नानी कँ नँय छै नाजा

## ३.१.डॉ. उदयनाथ झा 'अशोक'-नामक नामकरण: एक परिशीलन



**डॉ. उदयनाथ झा 'अशोक'**

## गामक नामकरण: एक परिशीलन

जहिना हमरा लोकनि जनैत छी, आइकाल्हि अनेकानेक ग्राम देखा रहल, मुदा पहिने गामक संख्या एक दिनक ज-ज पाछू जाएब, गाम काश्या वृद्धि लगाम वा नगर भेल। मुदा गामक नामकरण कोना भेलैक, तकर कि निदान एत हम कर चाह।

प्राचीनकालमे जहिया राजा-महाराज लोकनिक युग छल महाभारत काल क परवर्ती कालहुँमे हुनक राज्यमे अपन-अपन सैन्य व्यवस्था लक ऐतिहासिक अछि जे प्रत्येक १०० हाथी १०० रथ, ७१०० घोड़ा आ २१० पदाति (पैदल चलए अवश्य छोट सामन्त होइत छलाह तनिक लग कि--किछु सेना अवश्य रहैत छलनि। महाभारत कमानीमं पदाति सेनामे क्रमश: 'पत्ति', 'गुल्म' आ 'गण' होइत छलैक। जे ११ व्यक्ति 'पत्ति' होइत छल ओहि तीन पत्ति मिलाकेँ एक 'गुल्म' बनैत छल तथा तीन गुल्म लए एक 'गण' होइत छल आन नियम एक्के रहै अछि, मुदा शुक्रनीति पत्ति क लक्षण किछु भिन्न देने छथि। एकर अनुसार २१४०) पाँच-छ सैनिकक टुकड़ी 'पत्ति' कहबैत अछि। आजुक गाम पहिनहुँ छावनी छलैक, किन्तु अलग-अलग, कतहुँ पत्तिं कतहुँ गुल्म आओर कतहुँ गण गण, जेना कहल अछि नव पत्तिक अर्थात् तीन गुल्मक होइत छल आ से गणक संख्या कम होइत रहैक। जाहि-जाहि स्थानमे पत्ति वा गुल्म रहैत छल, तकरा बादमे ओही आधारपर नाम देल जाइत छलैक। अर्थात् पत्तिक स्थानक पत्ति वा पट्टी ओ गुल्मक

स्थानकँ गुल्म। पछाति ओहुना पश्ची 'यष्टी' मे परिवर्तित भऽ गेल अथवा एही शब्द व्यवहृत होमय लागल। ओहुना सन किछु आइयो शुभायष्टी, कलायष्टी, जयदत्तयष्टी, लालायष्टी, किसनीयष्टी, अललयष्टी, बनी यष्टी, लालमणियष्टी, मनहरनयष्टी, कामयष्टी, सीतायष्टी आदि। यष्टीक संख्या बेसी नहुन उदाहरणमे बेसी रहल छ। एहिना जगह-जगह 'गुल्म' छल, से आइयो गुल्मा, गुल्मनिया, गुलमन्डी, गुलमिया आदिक नामसँ जानल जाइत अछि।

सुनल थिक जे एक गुल्मक प्रधान रहथि बल्लामा किन्तु हुनक असावधानीवश अथवा आन कोनो कारणे ओहि गुल्मसँ चोरी भऽ गेल। संयोगसँ चोर पकड़ायल आ ओकरा राजाक सम्मुख आनल गेल। राजा निर्णय देलनि जे 'गुल्म-चोर बल्लामाक कपार'। अभिप्राय ई जे एकर निर्णय हम नहि बल्लामा करताह। अस्तु।

पृथक राष्ट्र आ राजाक लेल सेनाक सामर्थ्य नितान्त आवश्यक मानल गेल अछि, ई सभ जनैत छी, तँ राजाकेँ 'चोरबन्धुषाः' कहल गेल अछि। 'चोर' मात्र चाकर नहि थिक, आइयो CID, CBI एवं सैन्यकेँ सेहो कहल जाइत छैक, अस्तु। मुदा ई बड़ कम लोक जनैत हेताह जे पहिने सेना कतेक प्रकारक होइत छल। जेना आइयो सेनाक जल-थल वायु सेनाम पहिने तीन रूप देखल जाइत अछि पुनः पर BSF, CISF. कमाण्डो आदि उपरूपं कतेक रूप देखबामे अबैछ। तहिना प्राचीन कालमे सेनाकेँ कतेक चारि से कतेक छः रूपक स्वीकार करैत छथि। महाभारतक अनुसार

(महाभारत, शान्तिपर्व-१९/४१/४१) एकर आठ अंग कहल गेल अछि हस्ती, अश्व, रथी, पदाति, विष्टि, नाव, चर एवं दैशिक । आब दैशिक राति मिथिलहुँक राजाकेँ एहि सभ प्रकारक सैन्य छलनि, जकर रहबाक स्थानक सैन्य-सन्दर्भिक नामपर नामकरण कएल गेल छल । यथा

हथौड़ी, हाटगढ़ा, असनौया, रथनाहा, साधान, रथौटाल, रथवाड़ा (रानवाड़ा), दाति (दाती), विष्णुपुर, विष्टगौल, नवल, नवस्थ, चरमा, चरमपट्टी (घरमापट्टी), दिशौल, दशका आदि । ई सभ आधुनिक ग्राम ओहि प्राचीन इतिहासक दशा कहैत अछि । स्मरणीय थिक जे जखन पहिने सनाम पथप्रदर्शककेँ 'दैशिक' कहल जाइत छलैक, तहिना विशेष आयुध-सञ्चालन- दक्षताकेँ 'विष्टि' कहल जाइत छलैक से इतिहाससिद्ध प्रसिद्ध कथा थिक ।

गामक नामकरण मात्र सैन्य छावनियेक नामपर नहि, अपितु आयुधहुँक नामपर अस्त्र-शस्त्रहुक नामपर राखल जाइत छल । नीतिप्रकाशिकामे बहुत रास आयुधक वर्णन भेल अछि (अध्याय दूस पाँच धनि), जकरा चारि श्रेणी ओ ... विभाजित कएल गेल छैक मुक्त, अमुक्त, मुक्तामुक्त आ मन्त्रमुक्त । एहि सभ आयुधक की परिचय वा लक्षण से स्वनिष्ठाएव हमर प्रबन्धक उद्देश्य नहि थिक आओर से जँ करय लागब तँ प्रबन्ध विस्तारक भय, तँ तकरा छाड़ि देल अछि । किन्तु ई कहब आवश्यक जे उपर्युक्त चारू कोटिक आयुध एक ठाम नहि रहैत छल । आयुधक सञ्चालक अपन

अपन आयुध-उग्रहिं रहैत छलाह । आवश्यकता पड़लापर ओ लोकनि अपन-अपन अस्त्र-शस्त्र

हाथ लऽनिर्धारित स्थानपर जाइत छलाह ओ से, मुदा स्मरणीय थिक ई, जे आयुध जीवि रहैत छल, तकरा अर्थात् ओहि स्थानक, ओहि आयुधक आधारपर नामकरण होइत रहैक। जेना कि 'मुक्तायुधपुर' जाहिमे 'युध पद' आइयो लुप्त भऽ आकार मुक्तपदक संग मालि (सन्धि संयोग) 'मुक्तापुर' भऽ गेल अछि हमरा जनैत 'मुक्ताम' (मोताम) वा "मुक्तामा" क सम्बन्ध सेहो रही मुक्तायुध रहल होएत ।

धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र ओ शिलालेख सभ सँ यौगिक 'कर' क उल्लेख भेटैत अछि। जाहि 'कर' लैनिहार, देनिहारक पृथक-पृथक स्थान छलैक। किछु गाम एहना छल, जाहिपर राजाद्वारा विशेष कर लगाओल गेल रहैक । कि ग्राम करमुक्त छ कोनो-न-कोनो कारणे ओहि गामक लोक राजा कर नहि दैत रहथि। एही प्रकारक गाममे अकरिया, अकौर, अकड़ी, अकरमपुर (मकरमपुर) आदि थिक। मुदा जाहि गामपर कर लागल जल अथवा जाहि गामक वासी कर दैत छलाह अथवा जाहि गाममे कर असुलनिहार राजाक प्रतिनिधि रहैत छलाह, ताहि गामक संख्या आपेक्षिक अधिक छ एहि कोटिक गाममे पुराना गामसभ अबैत छल, जकर नामकरण 'कर'क आधारपर नहि भेल. रहैक। परन्तु नव नव गाम स बसल वा बसल छल, तकर नामकरण एही 'कर क आधारपर भेल। यथा-करतिया, करहना, करिहन, करभेनि, करैया, करमा

आदि। राजाकेँ देय 'कर' मे एक प्रकारक कर छल 'बलि'। मृच्छकटिकमे एही कारणे साधारण व्यक्तिक लेल 'बलिहर' शब्दक प्रयोग भेल अछि./६/१०/११३६) जकर अर्थ राजाक लेल बलि अननिहार। पाणिनीय ब्राह्मणहुँमे 'हरन्त्यस्मै विशो बलिम्' (-२/१/१८/३) मे प्रयोग देखल जाइत अछि। ऐतरेय ब्राह्मणक अनुसार (ऐ.ब्रा.३/३) 'बलिकृत' वैश्यमात्र होइत छलाह, जे बलि दैत छलाह। बलि, सामान्यतः व्यापार किंवा आयात-निर्यातहिपर लगैत छल। ब्राह्मण वा क्षत्रिय विशेष परिस्थितिमे छोड़ि कर मुक्त होइत रहथि। अपना जाति ग्रामक वासी बलि देबय होइत छलनि, तकर नामकरण एही बलिक कारण भेल होएत। यथा बलिगाँव, बाला, बलाल, बलिया, बलियाही, बलिनगर, बल्लीपुर आदि किन्तु किछु एहनो लोक सभ रहथि जे राज- दरबारमे अथवा प्रतिनिधि लग जाए स्वयं बलि जमा नहि करैत रहथि। ओहि लोकनि 'हस्तबलि' क माध्यम अपन बलि (कर) राजकोशमे जमा करैत छलाह। एहि हस्तबलिक नियुक्ति स्वयं राजा करैत छलाह। सम्भव थिक जे ओहि ''हस्तबलि' जाति ग्राममे रहैत छलाह, तकरा हुनक नाम वा पदनामपर जानल जाय लागल। जेना आइयो 'हथबलिया' आ 'हथीवाली' आदिक आभास दिया रहल अछि।

नगर, पुर, पुरी, पत्तनक अर्थमे 'हट्ट' शब्दहुँक प्रयोग देखल जाइत अछि। राजनीतिप्रकाशमे देवीपुराणक वाक्य उद्धृत भेल अछि, जे एकर प्रमाण थिक। श्रीधर अपन भागवत व्याख्यानमे करैत छथि 'ग्रामा हट्टादिशून्याः, पुरा हट्टादिमयः, ता एव महत्यः पत्तनानि.... (भाग भाष्य- ४ / १८/३१)। कदाचित् एही हट्टक

𑒏𑒰𑒩𑒝𑒹𑓀 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒯𑒳𑒿𑒧 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧𑒏 𑒢𑒰𑒧𑒏𑒩𑒝 𑒏𑒋𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒯𑒰 । 𑒨𑒟𑒰 𑒯𑒙𑒢𑒲, 𑒯𑒙𑒢𑒱𑒨𑒰, 𑒯𑒰𑒙𑒲, 𑒮𑒱𑒢𑒨𑒴𑒢 𑒯𑒰𑒙𑒲, 𑒫𑒑𑒋𑒯𑒙𑓂𑒙𑒲 𑒂𑒠𑒱 ।

𑒇𑒑𑓂𑒫𑒹𑒠𑒧 '𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑 𑒥𑒯𑒳𑒬𑓁 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒨𑒟𑒰 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧𑒖𑒱𑒞𑒼 𑒢𑒩𑓁' (𑒇. 𑓕/𑓕𑓔/𑓘), '𑒨𑒟𑒰 𑒬𑒧𑒮𑒠𑓂 𑒠𑓂𑒫𑒱𑒣𑒠𑒹 𑒔𑒞𑒳𑒭𑓂𑒣𑒠𑒹 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑓀 𑒣𑒳𑒭𑓂𑒙𑓀 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧 𑒁𑒮𑓂𑒧𑒱𑒢𑓂𑒢𑒢𑒰𑒞𑒳𑒩𑒧𑓂' (𑒏. 𑓑/𑓑𑓗𑓔/𑓑) 𑒂𑒠𑒱 (𑒇. 𑓑𑓐/𑓖𑓒/𑓑𑓑. 𑓑𑓐/𑓑𑓐𑓗/𑓕)। 𑒞𑒻𑒞𑓂𑒞𑒱𑒩𑒲𑒨 𑒮𑓀𑒯𑒱𑒞𑒰𑒯𑒳𑒿𑒧 "𑒫𑒱𑒠𑓂𑒫𑒰𑒢𑓂 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧𑒝𑒲' (𑒞𑒻.𑒮𑓀.-𑓒/𑓕/𑓔/𑓔) 𑒂𑒠𑒱 𑒏𑒯𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒞𑒋 𑒮𑓂𑒧𑒩𑓂𑒞𑒫𑓂𑒨 𑒟𑒱𑒏 𑒖𑒹 '𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧' 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒏 𑒁𑒩𑓂𑒟 𑒑𑒰𑒧 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒪, 𑒁𑒣𑒱𑒞𑒳 𑒢𑒑𑒩 𑒮𑒢 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒪। 𑒍𑒢𑒰 𑒞𑒿 𑒢𑒑𑒩, 𑒣𑒴𑒩, 𑒣𑒴𑒩𑒰, 𑒣𑒞𑓂𑒞𑒢, 𑒑𑒰𑒿𑒫 𑒂𑒠𑒱 𑒬𑒥𑓂𑒠 𑒏𑒰𑒢𑒰 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒢𑒰𑒧𑒧 𑒢𑒯𑒱𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒏𑒱𑒢𑓂𑒞𑒳 𑒋𑒞𑒋 𑒣𑒩𑓂𑒨𑒰𑒨𑒫𑒰𑒔𑒲 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒢𑒑𑒩𑒏 𑒁𑒩𑓂𑒟 𑒬𑒯𑒩 𑒫𑒰 𑒕𑒼𑒙 𑒧𑒼𑒙 𑒬𑒯𑒩 𑒥𑒳𑒗𑒥𑒰𑒏 𑒟𑒱𑒏 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧 𑒣𑓂𑒩𑒧𑒴𑒐𑒏𑒹𑒿 '𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧𑒝𑒲' 𑒫𑒰 '𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧𑒱𑒏' (𑓑/𑓑𑓑𑓕-𑓑𑓖), 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧𑒰𑒡𑒱𑒣𑒞𑒱 (𑒏𑒾𑒙𑒱𑒪𑓂𑒨 𑓓/𑓓𑓐), 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧𑒏𑒳𑒙 (𑒋𑒣𑒱𑒑𑓂𑒩𑒰𑒤𑒱𑒏𑒰, 𑒖𑒱𑒪𑓂𑒠-𑓑, 𑓕.𑓓𑓗. 𑓑𑓘𑓓. 𑓑𑓘𑓘𑓐. 𑓑𑓗 𑒣𑒵.𑓓𑓐𑓔. 𑓓𑓑𑓐) 𑒂𑓐 𑒣𑒙𑓂𑒙𑒏𑒱𑒪 (𑒃𑒧𑒱𑒞 𑒋𑒭𑓂𑒙𑒲𑒏𑓂𑒫𑒰𑒢𑒲, 𑒖𑒱𑒪𑓂𑒠-𑓖, 𑒣𑒵. 𑓕𑓑, 𑓕𑓓: 𑒖𑒱𑒪𑓂𑒠 -𑓑𑓘, 𑒣𑒵.𑓓𑓒𑓒) 𑒏𑒯𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒪𑒻𑒏। 𑒃𑒋𑒯 𑒬𑒥𑓂𑒠 𑒂𑒃𑒲 𑒧𑒴𑒐𑒱𑒨𑒰 𑒂𑓄 𑒧𑒨𑒢 𑒠𑒴𑒩𑓂 𑒏𑒯𑒫𑒻𑒕 । 𑒣𑒙𑓂𑒙𑒏𑒱𑒪𑒏 𑒮𑒢𑓂𑒞𑒰𑒢 𑒖𑒰𑒯𑒱-𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒑𑒰𑒧𑒧 𑒥𑒮𑒻𑒞 𑒢𑒯𑒟𑒱, 𑒞𑒰𑒯𑒴 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒮𑓀𑒑 '𑒣𑒙𑓂𑒙𑒲' 𑒖𑒳𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒕𑒪 । 𑒞𑓀 𑒮𑓂𑒧𑒩𑒝𑒲𑒨 𑒟𑒱𑒏 𑒖𑒹 𑒣𑒙𑓂𑒙𑒲𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒢𑒰𑒧𑒏𑒩𑒝 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒣𑒞𑓂𑒞𑒱, 𑒣𑒞𑓂𑒞𑒲𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒯𑒱𑓀 𑒢𑒯𑒱, 𑒣𑓂𑒩𑒞𑓂𑒨𑒳𑒞 𑒣𑒙𑓂𑒙𑒏𑒱𑒪𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳𑒋 𑒮𑒯𑒰 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 ।

𑒬𑒳𑒏𑓂𑒩𑒢𑒲𑒞𑒱𑒏 𑒁𑒢𑒴𑒮𑒰𑒩 𑒋𑒏 '𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧' 𑒫𑒱𑒮𑓂𑒞𑒰𑒩𑒧 𑒋𑒏 𑒏𑒰𑒬𑒏 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒪 (𑒬𑒳.𑒢𑒲. - 𑓑 / 𑓑𑓒𑓓) । 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒂𑒡𑒰 𑒦𑒰𑒑 '𑒣𑒪𑓂𑒪𑒲' 𑒏𑒯𑒫𑒻𑒞 𑒕𑒪, 𑒖𑒏𑒩 𑒅𑒠𑒰𑒯𑒩𑒝𑒧 '𑒮𑒢𑒱𑒮𑒫' 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒂𑒩𑓂𑒠𑓂𑒫𑒦𑒰𑒑 '𑒣𑒰𑒯𑒲 𑒏 𑒪𑒪 𑒖𑒰

सर्वोष्ठ, ई किछु लोकक मतमे पल्लीक अपभ्रंश थिक। परन्तु एक अन्य अनुसन्धानकर्ता ना प्राकृत वैयाकरणक अनुसार गामक अर्थबोधक 'पल्ली' क उदाहरण जगदलपल्ली, मलकानपल्ली, नुआली, पाली आदि मे एहि सर्वोष्ठ, परन्तु 'पाही' नहि।

हमाद्रि अपन दानखण्डमे मार्कण्डेयपुराणक उद्धृत कएने पुर, खेट, खर्वट एवं ग्रामक परिभाषा प्रस्तुत कयने थि। जखनि कि हिनकहुँस पूर्व महर्षि याज्ञवल्क्यक अनुसार चाणाक्यक निष्कर्षक स्थानमे नाखि ग्राम, खर्वट, नगर सरल एक्के अर्थ स्थापित कएने अछि, मात्र एकर जनसंख्या आ नागरिकक स्तरमे हेर फेर पाओल जाइत अछि। एहीसभक

कारणेँ प्रायः संस्कृतक अलङ्कारशास्त्री लोकनि 'पाम्य दोष देखबैत हएताह हमरा जनैत एही सभमे काना 'खर्वट' पछाति 'खनंख' (खओनख) एहि भेल हएत। हमरा एक मित्र एक समय कहने न ई यहिना एकाय खओक बाट छल अकरा कटि लोक बसल त 'खनख' आ0 कालान्तरमे 'खन' एहि भेल जना सर्वथा सभसबक कल्पना गहिना खदखदनक, ई हो हमरा एहिमे कि हाथ उपहासक पूट बुझना जाइत ई गाम ना भूमि खओकं नखलक स एल खनख आवादमे खहनख।

एहिना बान-बयाटीसं नआ कनव, बान-ताकु समा दिअव 'बौनाह्वनधिक' ना 'कायाल (काल) कार्य होइत ११३७.१ ३.४) जखनि कि कौटिल्य मत कार्य 'धीनजाक' कएने छलाह (३)। अधिकारी वानीक उपियुर्गिया कनवो नहिथि। सम्मन उग्र

विशेषक 'चौननङ्गक' गयनग लाद स कालान्तरमे नजीक, नङ्गका (नङ्गका), नङ्गआदी, वा७जवा आदि ए७ गेल हो।

किन्तु गाम जातिक नामपर सेहो वसल वा वसाओल गेल, जाहिमे वनियाम, सिंहवाम, गलियाना, गलिया गलगामा, दीन, नौआ-वाखनि, कैथवाम, कोचिनियाँ, एकम्मा, वनदी, नाजयाम, उगमाना, कर्णपुर, सिसवानि आदिकेँ लल जा सकैछ 'घन' जातिक अप्रियवहुल गाम 'रान' छल, ज वादमे खण्डवला कुलक नाजा लोकनिक गाम एल 'नाजयाम' सेहो कहओलक सिसवा अप्रिय, जकर शाखा सिसादिया थिक, गकरा एगाए, जाय गाम वा नरकी वसल, सैह एल सिसवानि (सिसवा अनि)। एही गनहेँ व्यक्तिक नामपर सेहो कतोक गामक नामकरण एल अछि, जना सीताजीक नामपर सीतामढी, सीतापट्टी: गौतीक नामपर गौनिया: उमाक नामपर उमगाँव, मधूसिंहक नामपर मधूवनी धर्मनाथ ठाकुरक नामपर धर्मपुर: कल्याण साक नामपर कल्याणपुर: माखनसिंहक नामपर माखनपुरा, नाजा कंसनारायणक नामपर कंसी (सिमरी); एक अस्थान शुक्लाक नामपर शुक्लानाही आदि।

एगाय ऽऽहो स्मर्तव्य थिक ज' एक नामक अनेको गाम अनेको ठाम छैक, गाहि सभक नामकरणक याछ काना एक कारण वा ऽऽतिहास नहि नहलैक अछि जना लोहनारोडक सनिकट धर्मपुर मात्र धर्मनाथ ठाकुर वसओलन्हि, जखनि कि आना ठाम धर्मपुर याओल जाऽऽग अछि एहिना सनिसव-पाहीक निकटक 'कल्याणपुर' मात्र

कल्याण माक द्वारा बसाओल गाम अछि, आन नहि बक्सर जिलामे स्थित 'अहरौली'क अहल्याक नामपर स्थापित कएल जाइत अछि, जखनि कि इएह कारण 'अहियारी'क संग सेहो देल जाइत रहल अछि।

मिथिलाक किछु एहना गाम अछि, जकर नामकरणक पाछू एक इतिहास रहलैक अछि, स्थानीय राजनीतिक वा सांस्कृतिक इतिहास। जेना बिराटपुर, बिराटनगर, बराटपुर, बैराटीक नामकरणक पाछाँ मिथिलहिक एक राजक अर्थात् मत्स्यदेशक राजा बिराटक सम्बन्ध जुड़ल छनि, जनिक दरबारमे पाण्डव लोकनि अपन अज्ञातवासक अवधि बिताओने रहथि। मिथिलाक तत्कालीन जनपद सभमे विदेह, वैशाली, मत्स्य आदि देश प्रमुख छल। जखनि कि पाण्डवहिक बसाओल वर्तमान 'पण्डौल' अछि, जे पाण्डवालयक अपभ्रंश थिक। परम्परया इहो श्रुत थिक जे अज्ञात वास हेतु जएबाकाल पाण्डव लोकनि एतहुँ रात्रि विश्राम कएने रहथि बेनीपट्टी थानामध्य जे बराटपुर गाम अछि, तकर सुनैत छी प्राचीन नाम बिराटपुर रहैक। एकर निकटहि अछि 'उत्तरा' नामक गाम, जे बिराटराजक पुत्री ओ अभिमन्युक पत्नीक नामपर बसल अछि। उत्तरासँ किछु हटि 'कीचकवाहा' नामक स्थान अछि, जतए बिराटक सार कीचककेँ घिसिया-घिसिया मारल गेल छल। ओना ओकर वासस्थान छलैक किछु हटिकेँ, जे आइयो 'कछवा' कहबैत अछि। कीचकसँ किचवा, पुनः कचवा आ अन्तमे कछवा भेल हएत, जे सभ मत्स्यदेशमे अबैत छल। एकर लगपासमे अछि बिष्णुपुर आ माधवपुर, जतए माधव (श्रीकृष्ण) अपन विष्णुरूप देखओने रहथि।

स्मरणीय अछि जे ई सट गाम 'हाला' प्रगन्नामे पड़ैत अछि। एही विष्णुपुर लग अर्जुन अपन अज्ञातवासक समय गाण्डीव आऽ बाण नुकउने रहथि जाहि स्थानपर आई 'गाण्डीवेश्वर महादेव' एवं 'बाणेश्वर महादेव'क मन्दिर अवस्थित अछि। एहिना नेपालक मोरंग जिलामे वर्त्तमान विराटनगर ओ चम्पारणक बैराटी गामक सम्बन्ध सेहो विराटराजहिसँ जोड़ल अछि, जे ऊपर कहि आएल छी।

राजा सीरध्वज जनकक पुष्पोद्यान आजुक फुलहर गाम थिक, जतए गिरिजामन्दिर 'गिरिजास्थान'सँ प्रसिद्ध अछि आओर एतहि जगज्जननी सीताक भेंट श्रीरामसँ भेल रहन्हि। एही ठाम हरलाखी थानामे विश्वामित्रक शिविर छल, जे आई 'विसौल' कहबैत अछि। सौराठ ओ रहिकाक सन्निकट विद्यमान 'कपिलेश्वरस्थान' भगवान् कपिलक आश्रम स्मरण करा रहल अछि, संगहि ईहो परम्परया श्रुत अछि जे एहि शिवक स्थापना स्वयं कपिल मुनि कएने रहथि। गौतमऋषिक जतए आश्रम छल, से ब्रह्मपुर आई विकृत भएकेँ 'बरमपुर' भए गेल अछि, जखनि कि कमतौलक एही परिसरमे अहल्यापुरीसँ प्रसिद्ध प्राचीन नगरीक नाम अपभ्रंश भए 'अहियारी' भए गेल अछि।

सीतामढ़ी जनपद सीताजीक उद्भवस्थान लक्ष्मणानदीक तटपर अवस्थित तत्कालीन 'पुण्य उर्वी' आई विकृत भए 'पुनौरा' नामे प्रसिद्ध अछि। एही ठाम पुण्डरीक ऋषिक आश्रम सेहो छल, जनिका नामपर पुनरी-सनातन (पुण्डरीक सनातन) प्रख्यात अछि। एकर बगलमे

स्थित गिरिहिमानी नामक गाममे छथि पुनः प्रसिद्ध 'हलेश्वरनाथ महादेव', जनिक अनतिदूरमे प्राचीन कालक 'उर्विजा वाटिका', उर्विजा वाटिका नाम प्रसिद्ध अछि। सुनसंग ओ जनकपुर राजपथ आओर ओ 'पन्थ-पाकड़ि' पड़ाओल जाइत, सुनैत छी एहि स्थान धरि, जाहि पाकड़िक गाछतर सीताजीक अयोध्या लए जयबाक क्रममे कहार सभ सुस्तेबाक हेतु रखने रहथि।

नेपालक महोत्तरी जिलामे जलेश्वर महादेवस्थानक बगलहिमे एकटा गाम अछि सुग्गा। एहि राजर्षि जनकक द्वारा व्यासपुत्र शुकदेवजीक आवास व्यवस्था कराओल गेल छल। बादमे एही शुकाश्रम शुकासँ 'शुक्का' होइत 'सुग्गा' भए गेल अछि। शुकदेवजी मिथिला अएबाकाल रास्तामे चम्पारणक बगिया लग सेहो रुकल रहथि ओ स्थान आइयो 'सुगाओ' सँ जानल जाइत अछि। जनकपुरसँ दश मील दूर हटि 'धनुषा' नामक स्थान जतए रामचन्द्रजीक द्वारा कएल गेल धनुषभंगक कथा स्मरण दियबैत अछि, ओतहि मुजफ्फरपुरक 'नागा' ओ नारी (मृगौनि), सीतामढ़ीक 'अथरी', "यजुआर आर मधुबनीक समौल क्रमशः ऋग्वेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद ओ सामवेदक तत्कालीन अध्ययन- अध्यापनक स्थानक स्मृति दिअबैत अछि। धनुषा जिलामे अवस्थित 'कुसुमा' ग्राम यद्यपि किछु लोक याज्ञवल्क्य ऋषिक आश्रमस्थल मानैत छथि, मुदा ओहि गाममे राजश्रवा ऋषिक आश्रम छलनि से बहुत प्रमाणसँ प्रमाणित अछि, हिनक पुत्र रहथिन नचिकेता। याज्ञवल्क्यक आश्रम तँ योगिवनमे छल, जे आइयो हीनाजोड़ी- जगवन कहबैत अछि। ई गाम अछि मधुबनी जिलाक बेनीपट्टी थानामे।

मधेपुरा जिलाक सिंहेश्वरस्थानक सम्बन्ध रामायणकालीन ऋषि श्रृंगीसँ रहल अछि, जनिक आश्रम एतए छलन्हि आ जनिका द्वारा स्थापित 'श्रृंगीश्वरनाथ महादेव' आइयो सिंहेश्वरसँ प्रसिद्ध छथि । भागलपुरक कहलगाँवमे एकटा पहाड़पर दुर्वासाऋषिक आश्रम छल आओर सुल्तानगञ्जमे गङ्गानदीक पार्श्वमे एकटा पहाड़पर जह्नुऋषिक आश्रम रहन्हि, जे आइयो जह्नुगिरिक अपभ्रंश रूप 'जहाँगिरा' कहबैत अछि । विद्वान् अन्वेषकक इहो मानब रहलन्हि अछि जे पालवंशीय सुप्रसिद्ध विक्रमशिला विश्वविद्यालय, एही जह्नु-आश्रमक निकटमे छलैक ।

दरभंगाक नाम कोना पड़ल से विवाद एखनो हल नहि भऽ पाओल अछि, कारण 'मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना'। तथापि अनेक किंवदन्तीमेसँ किछुक एतए उद्धृत करैत छी । जेना किछु लोक द्वारबंग (बंगालक द्वार) सँ दरभंगाक कल्पना करैत छथि त कतो दरभंगीखाँ नामक कोनो पैघ व्यक्तिकेँ आनि बैसाओल आओर कहल जे ओएह दरभंगाक निर्माण कएलन्हि । जँ १६म शतकक सुबेदार दरभंगीखाँक नामपर दरभंगाक स्थापना मानि ली तँ ओहिसँ पूर्व 'दरभंगा'क चर्चा कोना भेटैत अछि ? तहिना यदि बंगालक द्वारसँ 'द्वारबंग'क कल्पना करी तँ 'बंगद्वार' शब्दवाक चाही, न कि द्वारबंग, संगहि दरभंगाक कोन स्थानसँ बंगालमे प्रवेश कएल जा सकैछ, सेहो एक प्रश्न अछि । किनको- किनको अनुसार इहो श्रुत अछि जे राजा शिवसिंहक दल (सेना) के मुस्लिम आक्रान्ता जखनि भंग (नाश) कएलक, तकर बाद एकर नाम 'दलभंगा' भेल आ संस्कृतक 'रलयानभेद' के मानि इहो दरभंगा कहओलक अथवा

उच्चारण- सौविध्यक कारणेँ दरभंगा भेल । शिवसिंहक ओतुका तत्कालीन पड़ाव स्थलकेँ आइयो लोकसब 'शिवधारा'सँ जनैत अछि । परन्तु एहि शहरक नामकरणमे उपर्युक्त कोनोटा कारण समुपयुक्त प्रतीत नहि होइछ । हमरा जनैत आठम-नम शदीमे ओ चौरासी गोट सिद्धलोकनि भेलाह, ताहिमध्य मिथिलहुँक कतोक सिद्ध प्रसिद्ध रहथि। हुनक सभक नामपर हुनक स्थान- विशेषकेँ परवर्ती कालमे नामकरण कएल गेल होएत, जेना 'दरिकपाद' (दरिपा) सँ दरभंगा ओ 'हरि पाद' सँ हरिभंगा, 'भर: पाद' सँ भरभंगा (आजुक नाम भरंगा), 'शंकरपाद' सँ शकरी वा सकरी, एहिना शबरपा स सबौर आदि।

विभाण्डकमुनिक आश्रम रहनि कालान्तरमे, ओ पछाति करियन कहउलक आ आई ई समस्तीपुर जिलामे 'करियन- बलहा 'सँ प्रसिद्ध अछि। स्मरणीय थिक जे एही गाममे परवर्ती कालमे उदयनाचार्य, गोवर्धनाचार्य आदि मिथिला-विभूति भेल रहथि। एही कालखण्डमे, मुदा किछु पूर्व भेल छथि 'रत्नकीर्ति' नामक प्रसिद्ध आऽ विशिष्ट बौद्धविद्वान्, जे धर्मपालक शिष्य ओ विक्रमशिला विश्वविद्यालयक आचार्य रहथि । हिनक पराउ भेलापर हिनकासँ प्रभावित समाज हिनक गामक नाम राखि देलक 'रत्नपुर', जे आई बिगड़िकेँ 'रतनपुर' भए गेल अछि । ओकर अनति दूरपर स्थित अछि 'किरतिनिया', जे हिनकहिं नामार्धक लए बसाओल गेल प्रतीत होइछ आऽ 'रतनपुर-किरतिनियाँ' कहबैत अछि ।

मिथिलाञ्चलक किछु गामक नामकरण उपर्युक्त राजा वा जमीनदारक कारणेँ सेहो भेल अछि, एहन गाम वा

स्थानसभमे सुप्रसिद्ध अछि राजर्षि जनकक 'जनकपुर', राजा बलिक राजधानी- स्थान 'बलिराजपुर' (बाबूबरही लग), अलर्कक सम्बन्धि राजा वनविहार कर्णाटवंशीय राजा नान्यदेवक नामपर सीतामढ़ीक 'नानपुर' राजा कंशनारायणक नामपर 'कसी' (कसी-सिमरी) आदि । एहिना ओइनिवार मूलक राजा कामेश्वर ठाकुरक पूर्वज ओएनठाकुरक स्थापित 'ओइनी' (ओएनी) गाम आइ-कालि समस्तीपुरक ताजपुर थानाक पूसा रोड स्टेशनलग ओइनी-बैनीस प्रसिद्ध अछि। एही वंशक राजा शिवसिंहक पिता देवसिंह अपन नामपर 'देवकुली' गाम स्थापित कएल, जे आइ लहेरियासराय लग 'दकुली' स जानल जाइत अछि । शिवसिंह, पद्मसिंह सभक बाद भेल राजा धीरनारायणक पौत्र कुमार लक्ष्मीनारायण सेहो अपन नामपर एक ग्राम बसाओल, जे दकुलिये लग 'लक्ष्मीनारायणपुर' स प्रसिद्ध अछि । धीरनारायणक बाद राजा हरिनारायण रामभद्रनारायण ओ कंसनारायण दुनू भाए अपन-अपन नामपर गाम वा राजधानी बनाओल जे थिक 'रामभद्रपुर' आ 'कंसरौनी' किंवा 'कंसी-सिमरी', जकर चर्चा पहिने कए चुकल छी । एहिना 'महेशपट्टी', 'शुभंकरपुर' ओ 'सुन्दरपुर' क सम्बन्ध क्रमशः महेशठाकुर, शुभङ्करठाकुर ओ सुन्दरठाकुरक संग रहल अछि । बगुसराय जिलामे राजा जयसिंह अपन ओ पत्नी मङ्गलादेवीक नामपर जाय 'जय मङ्गलागढ़' क स्थापना कएल, ओहिना नौलागढ़ (बगुसराय), अलौलीगढ़ (खगड़िया), कटरागढ़

(मुजफ्फरपुर) आदिक सम्बन्ध सेहो ओतुका राजा लोकनिक संग रहल अछि विदेहक मिथिलाञ्चल, मगध ओ हाजीपुरअञ्चल अथवा विदेहक बाहर राजस्थान प्रदेशमे स्थित 'पाली', 'पाल' वा 'पाल' शब्दयुक्त गामसभक सम्बन्ध कदाचित् प्राचीनकालक पालवंशीय राजासभक संग रहल होइछ, तेँ सम्भावनाकेँ नकारल नहि जा सकैछ एहीमे अछि मिथिलाक 'पाली', 'जगदलपाली', 'घनश्यामपुर पाली', 'रानीपाल' आदि गाम ।

'सुगौना' पहिने सुगौनमूलक ब्राह्मण जमीन्दार लोकनिक गाम छल, जाहि बादमे ओइनिवारमूलक एक ब्राह्मण शाखा सेहो आबि बसल । ई ग्राम मधुबनी जिलामे कपिलेश्वरस्थान लग अवस्थित अछि । एकर पूबमे रामपतीकार वृद्धावस्थामे मिश्रक आश्रयदाता नवम शताब्दीक राजा नृगक राजधानी 'नगवार सँ प्रसिद्ध अछि, जे ओहि समय नृगपट्टी आदि नामक रहल होएत। एही कालिक गामसभमे अबैत अछि जगतसिंह, शक्तिसिंह, लखिमारानी, गंगदत्त, राघवसिंह, माधवसिंह, दूलारसिंह, मल्लिनाथ ठाकुर आदिद्वारा संस्थापित जगतपुर, शक्तिपुर (शकतपुर), रानीपुर, गंगद्वार (गंगदुआरि), गंगोली (गरोली-पट्टन), राघवपुर (राघोपुर), माधवपुर (माधोपुर), दूलारपुर, मल्लिनाथपुर आदि

मिथिला ओ मिथिलाक बाहरक किछु गाम वा स्थान एहना अछि, जकर नामकरण सनातनधर्मक साम्प्रदायपर राखल गेल अछि । यथा-

विष्णुपुर, हरिपुर, हरिनगर, हरिदासपुर, हरियाहरि, नारायणपुर, गोविन्दपुर, मोहनपुर, चक्रधरपुर, माधवपुर मधवापुर, श्यामपुर (माठा), दामोदरपुर, रामपुर, रामचन्द्रपुर, रामनगर, रामभद्रपुर, राम दयालपुर, रामदयाल, राघवपुर, जयदेवपट्टी, बलमोहन, घनश्यामपुर, ब कनिया (भगवान्क बच्चपन राखल गेल नाम), लक्ष्मणपुर, भरतपुर आदि जाय वैष्णवनाम थिक, ओतहिं शैवनामम प्रमुख अछि शिवपुर, शिवनगर, शङ्करपुर, शङ्करसराय, शम्भुआर, महादेवनगर, म हादेवपुर, महेशवा, रुद्रपुर, ईशानचक, ईशपुर आदि अछि तहिं शिवपुत्रक नामपर राखल गेल नाम थिक कुमारपुरा (कार्तिकेयक नामपर ), गणपतिया (गणेशक नामपर ), वरदण्डा (वसहा वरद ना नहीक नामपर ), गंगजला (गंगाजल पर) आदि। तहिना शाक्त-साम्प्रदायिक गामम परिगणनीय थिक भवानीपुर, भगवतीपुर, लक्ष्मीपुर, शारदापुर, शक्तिपुर, दुर्गापुर, दुर्गागञ्ज, गंगापुर, कमलापुर (कमलपुर-विQआर रहित अछि), उमगाँव (उमागाँव), अपर्णा (अपरना), पार्गाँव (ई पार्वतीगाँवक अपभ्रंश बुझाइत अछि), कालीपुर, कालिकापुर, सीतापट्टी, शिवपुर आदि सौरग्रामम सूर्यगढ़ा, रविपुरा, सूर्यनगर, रवियाही आदि जाय उल्लेखनीय अछि ओतहि 'वहिनपुरा' नामक गामकें 'वह्निपुर'क अपभ्रंश मानि सकैत छी। जखनि कि हनुमाननगर, मदना, मदनपुरा, ब्रह्मपुर, ब्रह्मपुरा, ब्रह्मानन्दा, चानपुर, चानपुरा, चनौर आदि सहो जाय हनुमानजी, कामदेव, ब्रह्मा ओ चन्द्रमाक नामपर बसल ग्राम प्रतीत होइछ, ओतहि देवहार, भगवानपुर आदि सामान्य देवतापर आधारित गाम कहल जा सकैछ।

किछु गामक नाम गाँ अस्त्र-शस्त्र अथवा धातुपर आधारित कारण विशेष कारणेँ राखल गेल छैक, जेना कि हालपट्टी (हाला), करौंच (किरीच), पलवारि (पतुआरि), कुरहनिया (कुरहरि), लोहा (सोना0), लोहार (रुपानीपुर), सोनाली (सोना), रूपौली (रूपा), रजतपुर (चाँदी), रजतपुरा (चाँदी), सोनपुर (स्वर्ण) आदि ।

**-डॉ. उदयनाथ झा 'अशोक'-** वरीय आचार्य, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, श्रीसदाशिव परिसर
पुरी (उड़ीसा) ७५२००१ (मो.- ८८९५१२२३१२)

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.२.संतोष कुमार राय 'बटोही'-मंगरौना (भगानदम खय)



## संतोष कुमार राय 'बटोही'
## मंगरौना (अगानरूम राय)

झुकझुकिया लाइट जेना रहल छै मंदिर पर। रस्ता मे बाँस पर मरकरी लागल छै। मंदिर पर लाइटिंग एतेक नीक लागि रहल छै एकर ठिकाना नहि। मोन हर्षित भ' गेल देखि क' । माँ दुर्गा मंदिर मे आयल छथि। मंदिर केर रचना बढ़ार छै। अइ बेर मेला जमतै। सरियहुँ माँ आयल छथि।

अइ बेर माँ केँ मारि-मंगल मे देर भ' गेलन्हि। राम हृदय बाबा केँ मृत्यु सँ मारि-मंगल केँ तिथि मे हेरफेर करs पड़लै। कलश स्थापन सँ किछु दिन पहिने मारि-मंगल केर काज कएल गेल । मंदिर तँ बनि गेल छैन्ह माय केँ , परञ्च पलस्तर बाकी छन्हि। टाकाक कमी केर कारण मंदिर मे पलस्तर रहु-रहु गति सँ भs रहल छै। माँ सेवादारी अपन काज करबा केँ छाड़िन्हि। देर होए , परञ्च पलस्तर पूरा भs क रहतै।

मेला लेल जगह केँ कमी भs रहल छै। मंदिर केँ समीप वाला खेत मे खेत वाला सभ प्याज, गहूँ, खरही बाग कs देने छथिन्ह। जनसंख्या बढ़ला सँ खेतक कमी भs रहल छै। तँ जिनकर खेत छियैन्ह ओ अपन खेत मे फसल बो करब करथिन्ह चाहे दुर्गा पूजा समिति केँ नीक लगैन्ह वा नहि।

अखनो धरि कोनो खास नहि भेलै। सगाइस लोकनि केँ कोस मे नाम

छन्हि। आइ नहि काल्हि जरूल जाय पडतन्हि। ननदुर्गा पूजा समिति केँ यऊ कमजान रs नहल छन्हि। शासन यऊ खला कs नहल छथि। ज किया हिनका दिस सँ छिटकि गेल छलाह, हुनका कम्बल दsक मनौल जा नहल छन्हि। इ नीक गय छियैय ज किछु लाकनि कंवल याबि कs हुन मालिक-मालिक करअ् लगलाह।

इ छथि जिला पार्षद 'नामानंद नाय' । इ कयम साल सँ करैत छथिन्ह मला नहि लगौ, यनञ हिनकन गयक कानहु रलुञन नहि छन्हि। आन गाम म जिला पार्षद कन आगा-पाँछा दस लाकनि नहैत छन्हि , यनञ हिनका आगा-पाँछा शून्या छन्हि। नाजनीति ककना करैत छै स सर किया अखना धनि ग्राम म छथि। चूनानक वाद जनता केँ काज कनिहान जीत जाइह स संरव नहि नहि गेल छै ।

अइ वन संताष यचयन हजान टाका मूनति खनच लल दलथिन्ह। सर किछु लल लाक अलग-अलग चंदा दैत छै। माटि-मंगल लल अलग , कलश यात्रा पूना हला यन कलश हनिहानीन सर क शनवत पीअवै लल अलग । हन दिन आचार्यजी, दुर्गासप्तशती पाठ कनिहान पण्डित, पुजगनी, नगेनह लल हलाहानक खनच लल अलगे चंदा लाक दैत छै। सर किछु लल चंदा दनिहान लाक अयन-अयन वनख वूक कs लन छथि आजान वूक कs नहल छथि। माँ दुर्गा किनका निनाश नहि करैत छथिन्ह। माँ कन शक्ति अयनमयान छन्हि।

"श्रद्धालुगण , ध्यान देबै ! मन्दिरमा मे पुरुष कँ प्रवेश वर्जित छै। नवदुर्गा पूजा समिति कँ आग्रह करैत छी, सब किया अपन-अपन पाँती मे लागि जाउ । मेला मे भीड़ बढि गेल छै। इ दाता छथि - सुरेश राम पिता कालीदास घांघरनिया निवासी, माँ शेरावाली कँ चरण मे एक सौअ् टाका अर्पित कएलखिन्ह ,माँ दुर्गा हुनका सब परिवार कँ खुश करथिन्ह दुर्गा पूजा समिति मंगरौना इएह कामना करैत अछि।" एक साँस मे किशनदेव जी बजलाह।

मंगरौना गामक मेला नामी छै । मेला मे भीड़ देखबा करत। किछु लड़ुआ छौड़ा लड़की सब कँ छेड़
देत छै। अइ लेल ठाकना भरपटा भीड़ लगैत छै। ठाम-ठाम कँ गाड़ल जाइत छै। मेला मे गाड़ल स्थान बनौल जाइत छै। अइ बन गाड़ल स्थान मे पोस्टर लागल छलै जाहि मे नवदुर्गा पूजा समिति लिखल छलै। इ 'नवदुर्गा' शब्दकोश पीछा किछु बात छूपल छै , वहि गँ पहिने सँ इ शब्द बहिरौक । अइ पोस्टर मे तीन गोटेक हाथा छै - दुर्गापूजा समिति कँ अध्यक्ष साहेब कँ , सचिव साहेब कँ आओर कोषाध्यक्ष साहेब कँ। आब दुर्गा पूजा मे 'आइडेंटिटी' कते लड़ाइ भऽ गेल छै। 'मूँहपूरखी' कते लेल गाम मे शीतयुद्ध छिड़ल छै।

शान्ति कलश कँ जल लेल भीड़ भऽ सकैत । श्रद्धा-भक्ति सबहक ताक न जान मानऽ लगलैक स 'अहिंसा परमो धर्मः' सब किया भूलि गेल छथिन्ह। मानवता मे लोक कँ विश्वास बढि गेल छै।

-संतोष कुमार राय 'बटोही', ग्राम - मंगरौना

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.३.संतोष कुमार राय 'बटोही'-समीक्षा- जिनगी हान बनि गेल



**संतोष कुमार राय 'बटोही'**

**समीक्षा- जिनगी हान बनि गेल**

कथा :- जिनगी भार बनि गेल-कथाकार :- जगदीश प्रसाद मंडल
समीक्षक :- संतोष कुमार राय 'बटोही'

जगदीश प्रसाद मंडल जीक कथा 'जिनगी भार बनि गेल' एकटा मार्मिक कथा अछि। सेवा-निवृत्तिक बाद हेमंत कुमार आओर हुनकर पत्नीक चिंता कि बुढ़ाड़ी मे कोना जाय, ई सही छन्हि। भूमंडलीकरणक एहि दौर मे टाका सब किछु भऽ गेल छै। लोक टाका केँ चिन्है छथिन्ह। मनुक्खक पहचान बदलि गेल छै। वृद्ध लोकक बाद किनको किया देखनिहार नहि रहि जायत छै। ई पैघ सामाजिक समस्या बनि गेल अछि। ई चिंता हिनकर जायज छन्हि। एकटा माय-बाप केँ देखनिहार किया नहि आओर एकटा माय-बाप अपन सब संतान कर हगरी-मुतरी सँ लऽकऽ सब किछु करैत छथि। 'जिबैत जी गुँहा-सेवा आओर मुइला पर दूधा सेवा' कहबी सतियहुँ सच भऽ गेल अछि।

हेमंत कुमार आओर रश्मि बाँझ नहि छथि। हिनका दूटा बेटी छन्हि जिनकर ब्याह भऽ गेल छन्हि। परञ्च ओ दुनू परानी चिंतित छथि जे बुढ़ाड़ी मे हम कोना जाऊ। आन देसक नहि बूझल , लेकिन मिथिला मे आओर भारत मे ई बड़ पैघ समस्या बनि गेल अछि जे माय-बाप संतान लेल बोझ बनि रहल अछि। अबै वाला समय मे ई समस्या आओर विकराल रूप धारण करत। ई समस्या सब वर्ण, जाति आओर उम्र मे नहु-नहु गति सँ बढ़ि रहल अछि।

टाकाक कमौ कर आपाधापी मे माय-बाप के भुलि जनाय कतौ उचित

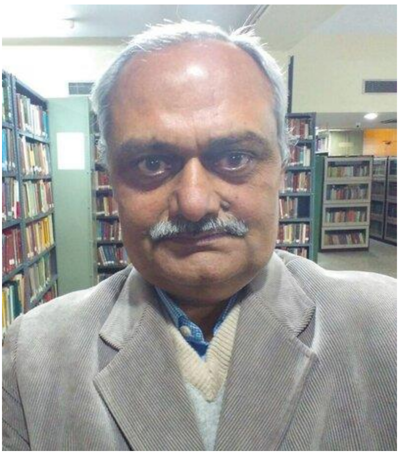
नहि कएल जा सकए। मनुक्खक मूल्य बदलि रहल अछि। टाकाक आगाँ ए लोक परिवार आओर समाज केँ भुलि रहल छै। समाज ए एतेक बिख घुलल छै जे किया किनका गलती पर किछु कहनिहार नहि। सगरो कर सगर केँ मोल ला। बेटा माय-बाप केँ मारि रहल छै आओर समाज ओकर नितिआ बना रहल अछि।

अगर संपत्ति मे संतानक अधिकार होइत छै, तँ बूढ़ापा मे माय-बापक सेवा-टहल करबै, अंतिम साँस धरि देखभाल करबै संतान कर कर्तव्य टा नहि छइ, बल्कि ई कानूनन होमक चाही जे माय-बापक सेवा करबै अनिवार्य हुअए। संविधान मे नैतिक कर्तव्य कर रूप मे ई जोड़ल जेबाक चाही आओर माय-बापक सेवा नहि करनिहार केँ लिखित वा मौखिक शिकायत पर कम-स-कम दू-चारि सालक सजा हेबाक चाही।

-संतोष कुमार राय 'बटोही', ग्राम - मंगरौना

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

## ३.४.नवीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- २७ म खण्ड



**नवीन्द्र नारायण मिश्र**

**मातृभूमि (उपन्यास)- धारावाहिक**

**२७**

जानकीधाम पहुँचलाक बाद जयन्त नागबाबाक संग रहए लगलाह। शान्ताकुंजमे आचार्यजीकेँ ई बात पता लगलनि। ओ प्रतीक्षामे रहथि जे जयन्त अपने अएताह। मुदा कैक दिन बीति गेलाक बाद जखन आचार्यजीसँ भेंट करए नहि गेलाह तँ हुनका रहल नहि गेलनि। ओ स्वयं शिष्यसभक संग जयन्तसँ भेंट करबाक हेतु नागबाबाक स्थानपर पहुँचलाह। नागबाबा ओहि समय ओतहि

रहथि। जयन्त अपन शोधग्रंथकेँ विमोचन हेतु प्रस्तुत करबामे व्यस्त छलाह।

आचार्यजीकेँ सामनेसँ अबैत देखि हुनकर हर्षक सीमा नहि छल। ओ तुरंत उठि हुनका दण्डवत कए प्रणाम केलनि।

"क्षमा करब आचार्यवर! हम अपनेसँ अखन धरि भेंट नहि कए सकलहुँ। सोचैत रही जे पुस्तकक विमोचन करबाक अवसरपर अपनेसँ भेंट होएत।"

"कहिआ छैक विमोचन?"

"अपनेक सुविधानुसार तिथि तय कएल जाएत।"

"बढ़िआँ होएत जे कालीकान्तोसँ पूछि लेल जाए। अहाँक गेलाक बाद ओ कए बेर पुछारी करैत छलाह।"

"आचार्यवर! सत्य पूछल जाय तँ हम संकोचवश ने अपनेसँ भेंट कए सकलहुँ ने कालीकान्तक सामने जएबाक साहस भेल?"

"से की?"

"हम तँ जानकीधाम छोड़ि कए गाम चलि गेल रही। मुदा परिस्थिति एहन भेल जे हमरा नागबाबाक बात मानि एतए आबए पड़ल।"

"जे भेलै, से भेलै। जानकीधाम अएबाक हेतु ककरोसँ पूछबाक काज नहि होइत छैक। ई तँ सबहक स्थान अछि।"

"आचार्यजीक पुस्तकक विमोचनक समय सेहो अपनहि अछि। अपने जखन उपयुक्त बुझी तखन एहि कार्यकँ संपन्न कएल जाएत।"

" एहि शुभकाज कँ जतेक जल्दी कएल जाए ततेक नीक। "

"तँ अपने कालीकान्तसँ विमर्श कए आगुक कार्यक्रमक आदेश देल जाए।"

"ठीक छैक। हम आइए भेंट करबनि। "

तकरबाद आचार्यजी कालीकान्तसँ भेंट कए सभबात कहलखिन। कालीकान्त एहि बातसँ बहुत प्रसन्न रहथि ओ जयन्त जानकीधाम लौटि गेलाह।

"मुदा जयन्त अपने किएक नहि अएलाह? "

"ओ अपना आबए चाहैत रहथि। मुदा..."

"मुदा की? एहिठाम अएबामे हुनका कोन अपराध?"

"से सभ की रहैनि। ओ पुस्तकक विमोचनमे व्यस्त रहि गेलाह। हमरासँ भेंट नहि कए सकल रहथि।"

"ओ! आब बुझलिऐक ई असली बात। चलू हम अखन अहीं संग चलैत छी।"

कालीकान्त चन्द्रिकाकँ बजौलनि आ तीनूगोटे जयन्तसँ भेंट

करबाक हेतु नागबाबाक स्थान पर पहुँचि गेलाह । संयोगसँ नागबाबा कतहु गेल रहथि ।

कालीकान्त संगे चंद्रिकाकेँ देखि जयन्तकेँ तँ जेना करेंट लागि गेलनि । ओ अध्ययन छोड़ि ठाढ़ भऽ गेलाह । कालीकान्तकेँ अभिवादन करैत छलाह कि चंद्रिका टोकि देलखिन-

"अहाँ तँ हमरा साफ बिसरि गेलहुँ ।"

जयन्त किछु नहि बाजि सकलाह ।

चंद्रिकाक सौंदर्य देखैत बनैत छल । जयन्तक इच्छा भेलनि जे हुनका कनी नीकसँ देखी । एक दिनपर भेंट भेल रहनि। मुदा संकोचवश मूड़ी नहि उठा सकलाह ।

हुनका दूनूकेँ गप्प करैत देखि कालीकान्त आ आचार्यवर सहटि गेलाह ।

"अपनेक आस्था होअए तँ काल्हि अपनेक सभा मंडपमे एहि पुस्तकक विमोचन संपन्न कएल जाए । "- आचार्यवर बजलाह ।

"अवश्य कएल जाए । "- कालीकान्त सहमति दैत बजलाह ।

*-रवीन्द्र नारायण मिश्र, पिताक नाम: स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र, माताक नाम: स्वर्गीया दयाकाशी देवी, वयस: ६९ वर्ष, पैतृक ग्राम:*

अपन डीह, मातृक: सिम्रिआ ग्राठी, वृत्ति: भारत सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त), स्थगल मद्रायालिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त), शिक्षा: वहुधानी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक, प्रकाशित कृति: मैथिलीमे: प्रकाशन वर्ष:२०११ १.भोरसँ साँझ धरि (आत्म कथा),२. प्रसंगवश (निबंध), ३.स्वर्ग एतहि अछि (यात्रा प्रसंग); प्रकाशन वर्ष:२०१८ ४. हसाद (कथा संग्रह) ५. नमस्ते (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निबंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकाटन(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०१९ ९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निबंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२० १३.शंखनाद(उपन्यास) १४.एहने थिक जीवन(संस्मरण)१५.ढहैत देवाल(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२१ १६.पाथेय(संस्मरण) १७.हम आबि रहल छी(उपन्यास) १८.प्रलयक परात(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२२ १९.बीति गेल समय(उपन्यास) २०.प्रतिबिम्ब(उपन्यास) २१.बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास) २२.राष्ट्र मंदिर(उपन्यास) २३.संयोग(कथा संग्रह) २४.नाचि रहल छलि वसुधा(उपन्यास) २५.दीप जरैत रहए (उपन्यास)।

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

## ३.७.कुमार मनोज कश्यप-डा दधीचि



**कुमार मनोज कश्यप**

**१ टा लघुकथा**

## डा दधीचि

वसीयत करब कोना आम बात भऽ छै नहिं; ताहू मे अपन मुहल्ला क बाद ओकरा पंचायतक बीच पूरा परिवार क उपस्थिति मे खालि सार्वजनिक करबाक बात लोकक कौतुहल संगे जिज्ञासा बढ़ा देने छलै। आ सैह कारण छलै जे कर्ती-माछ-मासु क प्रात लाल-कका क दलान पर लोक सह-सह करय लागल। ज्ञाते शास्त्री आ हुनक कनियाँ क कोना उन्ना-पून्ना क सहज स्थान दऽ गेल छलनि से मान खड़छायल-हुन-हुन करैत! हुनल सभ बीच लिफाफ खोलल गेल आ सरपंच वसीयत पढ़ि सभक सुनबऽ लगलाह- "हम अपन सम्पूर्ण होशोहवास मे वसीयत करैत छी जे हमर सम्पूर्ण संपत्ति मे

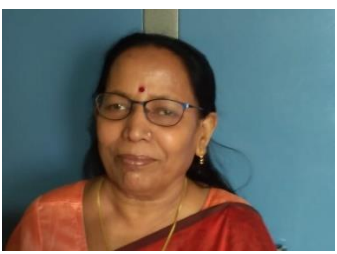
हमन वटा-वटी क वनावनि क रागीदानी हौ.......। " सुनिण किछु लाक थयठी वजलक, कया कनहूसकी शुनु कलक। ज्ञाग राञ्ची हक्का यठि (गलाह; मुदा कनियाँ सs आवग सम्हानल नहिं रलनि - "हम गs जनिण छलियै ज वूठहा दु-चालि छैथ.....गुँह-मुण कनै लै वटा-यूणहु आ...... " अयन मानक रठास उा आउान निकालणथि उाहि सs यहिन उर्मि अयन हाथ सs हूनक मुँह वन्न कs दलक - " वस्सssss ... रौजी आव नहिं! ". वावू न हमना अयन संयण्टि म हिस्सा दलनि; मुदा हम रनल यंवायण म अयन सर हिस्सा आहाँ क दै क घाषणा कनैण छी..। हमना काना संयण्टि क लार नहिं.... लार अछि ज्ञाव ज हमन नहिना वनल नहै। " उा हवाठकान हिचुकि-हिचुकि कनैण नहलीह ।

(थायठी क गठगठाहट.. किछु काल चूयी..... हन कनहूसकी। रनि गाम म चर्चा छलै गs वस ज्ञकना।

**-कूमान मनाज कथय, सम्प्राण:** रानण सनकान क उय-सचिव, **संयर्क:** सी-11, टावन-4, टाञ्चय-5, किदवञ्ची नगन यूर्व (दिल्ली हाट क सामन), नञ्ची दिल्ली-110023 मा. 9810811850 / 8178216239 ञ्ची-मल : writetokmanoj@gmail.com

अयन मंगव्य editorial.staff.videha@gmail.com यन यठाउ।

## ३.६.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खण्ड-११)



निर्मला कर्ण (१९६०- ), शिक्षा - एम् ए, नैहर - खराजपुर,दरभङ्गा, सासुर - गोढियारी (बलहा), वर्तमान निवास - राँची,झारखण्ड, झारखंड सरकार महिला एवं बाल विकास सामाजिक सुरक्षा विभाग मे बाल विकास परियोजना पदाधिकारी पद सँऽ सेवानिवृत्ति उपरान्त स्वतंत्र लेखन।

मूल हिन्दी- स्वर्गीय जितेन्द्र कुमार कर्ण, मैथिली अनुवाद- निर्मला कर्ण

# अग्नि शिखा (भाग - ११)

**पूर्व कथा:**

राजा पुरुरवा क विलक्षण वीरताक कारण देवताक विजय दानव राज केशि पर भेल। एहि कारण सम्पूर्ण ऋषि क सम्मति एवं भगवान विष्णु क आकाशवाणी सङ्कत कारण राजा पुरुरवा क स्वर्गक अर्द्धासन प्राप्त भेलनि। मुदा पुरुरवाक आकांक्षा तऽ उर्वशी छलीह।

**आब आगू:**

अमरावती क विशाल मनोरंजन कक्ष, एहि समय सद्य:परिणीता सन अलंकृत छल। देवताक दानव पर भारी विजय क उपलक्ष मे आइ एहि प्रेक्षागृह मे लक्ष्मी-स्वयंवर नाटिका क प्रदर्शन होनाइ निर्धारित छल। अप्सरा वर्ग क नृत्य सँग आन बहुत रास मनोरंजक कार्यक्रम हेबाक छैक। भरत मुनि विचार कएला उपरांत एहि नाटिका क चयन कयलनि। चयन उपरांत अपन परिश्रम सँ पात्र क चयन कएने हुनका सभ सँ अभ्यास करौलथि ओ। नाटिका क प्रदर्शन त्रुटि हीन होअए ताहि पर विशेष ध्यान रहनि भरत मुनि क। ओ स्वयं लक्ष्मी-स्वयंवर नाटिकाक सभ पात्र क चयन एहि अवसर हेतु कएने रहथि। संगहि ओ स्वयं एकर निर्देशन क दायित्व सम्हारलथि। एक-एक पात्र क चयन ओ योग्यता अनुरूप कएने रहथि।

"लक्ष्मी" क अभिनय हेतु उर्वशी क चयन कएने रहथि। ओना तऽ एहि कार्यक्रम मे ओ भाग लेबए नहि चाहैत रहथि, किएक तऽ ओ अपन एखनका स्थिति मे अभिनय करबा लेल समर्थ नहि रहथि।

मुदा भरतमुनि क द्वारा हुनक चयन कएल गेल छल उपयुक्त पात्र मानि ,आ इन्द्रक पूर्ण सहमति छलनि एहि मे। एहि परिस्थिति मे ओ विरोध नहि कऽ सकलीह। ओ अनिच्छा पूर्वक एहि कार्य हेतु प्रस्तुत भेल छलीह ।

सभ देवतागण क बैसबा हेतु उचित आसनक व्यवस्था कएल गेल छल । भरतमुनि क वास्ते विशेष सिंहासन राखल गेल छल । अभिनय मंच क निर्माण हेतु स्वयं विश्वकर्मा उपस्थित भेल छलाह । संपूर्ण दिन एकर व्यवस्था मे व्यतीत भेल । सभ देवतागण एवं ऋषिगण निश्चित समय पर मनोरंजन कक्ष मे उपस्थित भऽ गेल छलाह । अपन-अपन निर्धारितआसन पर सभ देवतागण क बैसलाक उपरान्त कार्यक्रम क प्रारंभ कएल गेल ।

कार्यक्रम क प्रारंभ मे देवतागणक विजय-गाथा क ओजपूर्ण वर्णन राजा पुरूरवा अपन वक्तव्य मे कलथि । तत्पश्चात इन्द्र अपन वक्तव्य देलखिन। वक्तव्य क उपरांत दुनू गोटे एकहि सिंहासन पर विराजमान भऽ गेलाह । देवर्षि नारद अपन वक्तव्य मे पुरूरवा क संपूर्ण जीवन गाथा कहि देलन्हि । एकर उपरांत भरतमुनि अपन लक्ष्मी-स्वयंवर नाटक क विषय वस्तु क मे प्रारंभिक किछु शब्द कहलन्हि | नाटिका क पात्रक परिचय देलन्हि ,तत्पश्चात ओ अपन आसन पर बैस गेलाह । नाटक क पूर्व रंग क मंगल नृत्य भेल । नेपथ्य मे बैसल सौंदर्यवती उर्वशी राजा पुरूरवा क देखबा हेतु आकुल-व्याकुल भऽ रहल छलीह । मुदा ओ नेपथ्य मे रहबा लेल विवश छलीह । अभिनय प्रदर्शन क पूर्व हुनका बाहर निकलऽ क अनुमति नहि छलन्हि,एहि कारण ओ अपन मोन मसोसने बैसल रहलीह।

मंगल नृत्य क बाद देव विजय कर भावोत्पादक गान नृत्य शैली मे

मेनका प्रस्तुत कएलन्हि । उपस्थित सभ दर्शक एहि नृत्य क माध्यम सँ युवक मांझी मुग्ध भs देखs लगलथि । कारण वास्तविक नृत्य सँ युवक दृश्य प्रस्तुत भेल छल - मेनकाक नृत्य शैली मे! सब दर्शक "वाह-वाह" कs उठलथि । मुदा राजा पुरुरवा क मुख पर कोनो विशेष भाव परिवर्तन नहि भेलैन्हि । ओ बहुत गंभीर दृष्टिगत भs रहल छलाह ।

इन्द्र नृत्य पर विमुग्ध हर्षित जोरदार ताली बजा उठलथि । ओ अपन दृष्टि घुमा पुरुरवा क देखलथि,मुदा हुनका अत्यंत गंभीर देखि आश्चर्यचकित भाव सँ पूछs लगलाह - "कहां गुमि गेलहुँ हे-मंडलाधिप! आहाँ तs अति गंभीर प्रतीत भs रहल छी! की कोनो विशेष बात अछि ? अथवा पृथ्वीवासीक चिंता समय लागल अपन क ?"

"नहि देवाधिप ! हमरा पृथ्वी वासी क प्रति कोनो चिंता नहि अछि हम ओकरा शासन व्यवस्था सँ पूर्णतया संतुष्ट छी । एहना स्थिति मे हमरा प्रजाक चिंता किएक हायत ? बस मोन नहि लागि रहल अछि,एहि कार्यक्रम मे" - पुन:दुनू क मध्य मौन घनीभूत भs उठल ।

आब लक्ष्मी-स्वयंवर नाटकक प्रारंभ समय आ रहल छल । एहि नाटिका मे भाग लेब वाली मुख्य अभिनेत्री उर्वशीक सर्वप्रथम रंगमंच पर प्रवेश भेल। ओ इन्द्र एवं राजा पुरुरवा क बेर-बेर देखलथि। पुन: हुनक दृष्टि पुरुरवा पर केन्द्रित भs गेल । पुरुरवा एवं उर्वशीक दृष्टि आपस मे एक-दुसर सँ एक बेर किछु क्षण लेल एहन मिलल कि दुनू गोटे एक-दुसर क देखैत रहि गेलाह । पुरुरवा क लागल जेना ओ अपना क बिसरायल जा रहल छथि । भाव

निश्चल भऽ गेलाह ओ। उर्वशी क हृदय मे प्रेमक प्रसून खिलाबी भऽकि उठल। ओ अपना क अभिनय करबा मे असमर्थ अनुभव करऽ लगलथि। ओ लक्ष्मी चरित्र एवं अपन संवाद पूर्ण रूप सऽ बिसरि गेलथि। पुरुरवा क अतिरिक्त हुनका किछु याद नहि रहलनि। अपन सुधि-बुधि बिसारि ओ असहाय सन एम्हर-ओम्हर दृष्टि घुमा देखलथि, पुनः टकटकी लगा पुरुरवा क देखऽ लगलीह। भरत मुनि नेपथ्य मे जा हुनका संवाद क स्मरण संकेत द्वारा कराओल। उर्वशी अपना क आब संभारि ललथि।

तत्पश्चात मेनका एवं रम्भाक प्रवेश मंच पर भेल। आब तीनू कलाकार क सम्मिलित रूप सऽ नृत्य क विभिन्न भाव भंगिमा द्वारा अपन-अपन भाव क दर्शक वृंद तक प्रेषित करबाक छलन्हि। सब कुशल एवं भाव प्रवण अभिनेत्री छलीह। तहि सऽ अत्यंत कुशलता पूर्वक अपन-अपन अभिनय करैत रहलथि। उर्वशी क कनिको असुविधा होइतन अथवा अन्यमनस्क देखि रम्भा हुनका अपन भ्रू-भंगिमा क द्वारा अभिनय क स्मरण करबा देथिन।

आब मेनका एवं रम्भा नेपथ्य मे गेली। मंच पर उर्वशी एकसर रहलथि। आब लक्ष्मी-रूप धारण कएल उर्वशी क एकसर लक्ष्मी क चरित्र क अनुरूप लय पूर्वक नृत्य करबाक छलन्हि। मुदा ई कथि भऽ गेल! एहन अनर्थ! अपन सुधि-बुधि बिसारल उर्वशी! लक्ष्मी-रूप धारण कएल उर्वशी! ओ तऽ अपन नेत्र मे अनुराग भरि अपलक पुरुरवा क निहारि रहल छलीह। भरत मुनि द्वारा बताओल अभिनय व संवाद ओ प्रायः विस्मृत कऽ चुकल छलीह। ई देखि नाटक क आविष्कर्ता मुनि भरत क मन खिन्न भऽ गेलन्हि।

पुरुरवा एवं उर्वशीक आंतरिक भावना क हुनक अनुभवी दृष्टि ऊण

मात्र मे परखि लेलका। अपन अंतर्दृष्टि द्वारा ओ सब स्पष्ट कs लेलथि। उर्वशीक एहि असामयिक धृष्टता सँ ओ क्रोधान्वित भs गेलथि। क्रोधक वशीभूत भs ओ ई श्राप दs देलन्हि -

"उर्वशी अहाँ क पचपन वर्ष तक स्वर्ग सँ च्युत रहय पड़त एवं ओकरा पश्चात मे विदर्भ नरेश जकर छवि एखनि अहाँ क नेत्र एवं हृदय मे अंकित अछि! अहाँक ओ प्रिय मानव स्वयं अहाँ क निकट मे संपर्क करत!"

'हा दैव! ई की भेल! एहन अनर्थ! आब की होयत! हमरा कारण राजा पुरुरवा क अपमानित होमय पड़ल "' - भरत मुनि क श्राप सुनितहि उर्वशी दु:ख सँ विह्वल भs गेली | उर्वशी अत्यन्त दु:खी भs गेली। ओ साथ रहल छलथि,हुनक गलती क कारण निर्दोष पुरुरवा क संग-संग श्राप क भागी बनs पड़लन्हि। हुनक मान बकल भs कानि उठल। मूर्छित भय मंच पर धराशायी भs गेली। देवता गण मे कोनो-कोनो ई घटना क बुझलथि,अधिकांश नहि बुझि पड़लथि। अनेक दर्शक एहि घटना क तs नाटकक एक अंश बुझलथि। इन्द्र पर्यन्त एहि घटना क नहि बुझि पड़लथि। राजा पुरुरवा पर्यन्त किछु बुझलथि किछु नहि। हुनका ई अवश्य बुझना मे आएल जे भरतमुनि स्वयं राजा एवं उर्वशी पर क्रोधित छलाह। मुदा पूर्ण जानकारी हुनका नहि भेट सकल। नाटक मे श्रापक ई अंश संभवत: लक्ष्मी आ भगवान विष्णु क नाम छल - जेना इन्द्र एवं अन्य अधिकांश देवतागण क बुझि पड़लन्हि। उर्वशी शब्द हुनका सभ क कर्ण गोचर नहि भेल रहन्हि। हठात् स्थिति क सम्हारि लेलथि भरता। किनका एहि बातक अनुमान नहि भs सकलन्हि कि नाटक क मध्य कोना पैघ दुर्घटना उर्वशी आ पुरुरवा

क जीवनक सँग रs गेल ।

...

नंदनकानन मे आज्ञी एकसर यनुनना आवि गेल छलाह । हुनक ह्रदय अर्थात दु:खी छलैहि,अथ किनका ओ अपन सँग नहि आवs दलखिन । ॐ हुनका सँग आवs चाहलखिन,मुदा एकसर मे अपन ह्रदय कन स्थिति यन निवान कननाक छलहि,ताहि कानध ओ ॐ क आवs लल वनजि दलखिन । संतान वृओ क नीवाँ सुंदन हनिताह गृध यन ओ मूक वैसल छलाह, शून्य मे अपलक दृष्टि सँs देखैत ।

क्रमशः

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

## ३.१.𑒣𑓂𑒩𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒗𑒰- 𑒏𑒩𑒧𑒩𑒯



**𑒣𑓂𑒩𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒗𑒰**

**𑒏𑒩𑒧𑒩𑒯**

𑒮𑒠𑒩 𑒁𑒮𑓂𑒣𑒞𑒰𑒪 𑒥𑒑𑒳𑒮𑒩𑒰𑒨 𑒏 𑒠𑒵𑒬𑓂𑒨 𑒢𑒱𑒞 𑒠𑒱𑒢 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒮𑒾𑓀𑒮 𑒑𑒯𑒧𑒰 𑒑𑒯𑒧𑒲 𑒣𑒮𑒩𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒣𑒲𑒛𑒲 𑒧 𑒪𑓀𑒥𑒰 𑒪𑒰𑒃𑒢 𑒪𑒰𑒑𑒪, 𑒋𑒣𑒲𑒛𑒲 𑒏𑒏𑓂𑒭 𑒧 𑒛𑒼𑒏𑓂𑒙𑒩 𑒮𑒥 𑒖𑒪𑓂𑒠𑒲 𑒖𑒪𑓂𑒠𑒲 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒩𑒲𑒖 𑒢𑒱𑒣𑒙𑒰𑒥' 𑒧 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒛𑒼𑒏𑓂𑒙𑒩 𑒏𑒏𑓂𑒭 𑒏 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒪𑒰𑒃𑒢 𑒧 𑒡𑒏𑓂𑒏𑒧-𑒧𑒳𑒏𑓂𑒏𑒲 𑒔𑒪𑒲 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒪𑒼𑒏 𑒖𑒼𑒑𑒰𑒩 𑒮 𑒪𑒰𑒃𑒢 𑒣𑒰𑒥𑒱 𑒏 𑒛𑒰𑒏𑓂𑒙𑒩𑒏 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒩𑒲𑒖 𑒏 𑒠𑒹𑒐𑒰𑒥𑒨 𑒧 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒧 𑒧𑒩𑒲𑒖 𑒮𑒥 𑒮 𑒮𑒹𑓀𑒙 𑒏𑒩𑒨 𑒥𑒪𑒰 𑒮𑓀𑒥𑓀𑒡𑒲 𑒮𑒥 𑒏 𑒦𑒲𑒛𑓃 𑒖𑒧𑒰𑒨 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒞𑒼 𑒏𑒰𑒢𑒰 𑒧𑒩𑒲𑒖 𑒏 𑒢𑒩𑓂𑒮 … 𑒪𑒑𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒲𑒢 𑒏𑒞𑒼 𑒏𑒰𑒢𑒰 𑒧𑒩𑒲𑒖 𑒏𑒩𑒰𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱।

ओहिना ओकरा डायीती करु म डॉ० प्रदीप अपन प्रनी संग अपन मनोज सब क निवटा नहल छलाह। डॉ० प्रदीप यानकं साल सदन अस्पताल म सीनियन कंसल्टंट कम यीजी टीचन क नुप म ज्वाइन कन छलाह। डॉ० प्रदीप शुनुए स कुशाग्र बुद्धि आ महनती छलाह। चंडीगढ़ यीजीआइ स एमडी कलाक बाद हनीदाबाद क ओकरा हाइन स्यान कॉर्पोनेट अस्पताल म कंसल्टंट क नुप म कार्यनत छलाह। एसना साल डॉ० प्रदीप छइ0 म गाम आयल छलाह। हानका यहन जखन टहलs लल गाछी दिस विदा हल छलाह त नस्ता म यान कक्का हंट भेलखिन। "गोन लगइ छी यान कक्का की समाचान नीक छी की न" प्रदीप यान कक्का क यैन छू प्रणाम कनैत वजलाह।

"खुश नहू बौआ नहू आवाद...... गाम नहू कि हनीदावाद" यान कक्का आशीर्वाद दैत वजलाह। यान कक्का विद्वान सनकान स निटायन हल यूर्व कार्मिक छलाह आ आव सामाजिक कार्य सब म लागल नहइ छइथ। यढवा-लिखवाक सह्व वस शौख छैन आ वाग वाग यन छंद मिलनाइ म निशिष्टा नाखइ छइथ।

आगा प्रदीप स कुशल छम यूछइथ यान कक्का वजलाह "की हौ हान हान कागिक मास क शीगल वसाग क आनंद लव' लल निकलल छह की?"

"हाँ कक्का गाछी-बृछि क शीगल वसाग क आनंद त गाम म न हंटग" प्रदीप वजलाह

- हौ प्रवीण एना नु ई बात उठलहु हम तोरा स एहि मैदान म किछु बात कर चाहई नही। देखह तों जे एकरा प्रस्ताव पर विचार करए त ई गाछी वला पीपल बसात क आनंद बारहो महीना छतीसो दिन ल सकई छह। देखहक एमबीबीएस छात्र सरकार सबक जिला अस्पताल म डीएनबी आ पीजी मेडिकल शिक्षा कोर्स चलबाक प्रोग्राम आनल अछि जे स कि देश क जिला जिला म सस्ता आ निक गुणवत्ता वला मेडिकल केयर आ पीजी मेडिकल प्रशिक्षण उपलब्ध कराओल जा सकई। एहि क्रम म हमरा सन किछु जागरूक सामाजिक कार्यकर्ता सब बिहार सरकार क कहि-सुनि क बेगूसराय सदर अस्पताल म सेहो ई प्रोग्राम चलाब' लेल राजी कएलहु। आवेदन प्रक्रिया म ठीक मुदा अस्पताल म पाथ पीजी टीचर क कमी क चलते किछु विभाग क आवेदन अटकल छैक। तों शिशुरोग विशेषज्ञ छहक त आ तोरा अनुरूप सेहो रहि गेल छौ। तैं हमर प्रस्ताव छल जे यदि तों ओ पद क ग्रहण कर लेल स्वीकार करए त हम सरकार स बात करी आ कम स कम शिशुरोग विभाग म डीएनबी शुरू करबाक एकरा बड़का बाधा खतम होइक।

- प्रवीण क ई प्रस्ताव पर किछु थकमकाइत देख पान कक्का पुनः बजलाह "हौ हम बूझई छी स ई डीसीजन तोरा लेल आसान नई होइत' किए कि आदर्शवादी बात कहनाई आ कर'म अंतर होइत छैक। तहि लेल हम तोहर निर्णय लेब'क प्रक्रिया क प्रक्रियाकेँ किछु आसान क देत छियह। देखह बिहार सरकार स

गाना उाहन दनमहा ग नञ्ञि रंटगह ञ हनीदावाद क वठका अस्पताल म रंट नहल छ। मुदा ७ाय गा सदन अस्पताल म काज क संगे अयन क्लीनिक या अस्पताल सहा चला सकञ्ञि छहक। गाना सन याथ ऑक्टन क क्लीनिक खुव निक चलग गे म काना शक नञ्ञि। सञम लाक क गाहन चिकित्सा लाए प्राञ्ञवट प्रक्टिस स आ गनीव लाक सव क सदन अस्पताल क माध्यम स रंटञ्ञि ञे स निक आन की वाग हगञ्ञि। आ सव मिला क गाना आर्थिक नुय स काना नाकसान नञ्ञि हगी स हमन गानंटी छैक। गकना वाग गाना मान म हाञ्ञग हग' लाञ्ञह स्पाञ्ञल क ल क ग दखह आव सव गनहक दाकान दौनी , मॉल-सिनमा शॉपिंग, नस्टानन्ट आदि सवटा अयना शहन कम्रा म सहा उयलब्ध अछि। वाल-वञ्चा लल निक गुणवत्ता वला प्राञ्ञवट स्कूल सव सहा उयलब्ध छैक आ दसमा क वाद ग उाहना वञ्चा सव आव घन स वाहन काना काचिंग क लल जाञ्ञग छैक। वदला म गाना आ वाल-वञ्चा क रनि साल गामक हवा, गाम-घनक आनंद, नाँव , ञ्ञज्ञा, प्रगिष्ठा सव रंटगी।

- कक्का अहांक वाग काट' वला नै अछि, हम निश्चिग ञे प्रस्थान यन गंरीन छी। मुदा हमना ञे माद निर्णय गक यहुँच लल किछ समय चाही, घनक लाक स सहा विमर्श कनय यडग। आ ञ ञना हायग हम शीघ्र अहाँ क सुचिग कनव

ञ्ञि कहि प्रवीण कक्का स विदा ललखिन।

~साना शटक्लुनिया ह्ा दीनानाथ ह्ु घुमय ङ संसान........ लाउतस्यीकन यन शानदा सिह्रा क आनाज म वजञ्ञीन ञ्ञी गीन क स्नन ङ0 घाट यन 0।८ ड़ॉ० प्रवीध क कान म यहुँव नहल ङल आ मान म यान कक्षा क प्रस्ताव यन नीव्रना स निवान चलि नहल ङलञ्ञह।

कनीव ७क महिना वाद यान कक्षा लग प्रवीध क हान आयल ङल, ञ्ञी वनाव'लल ञ ह्ुनका यान कक्षा क प्रस्ताव स्नीकान ङैन। वस हुन की नानानन्ध म साकानात्मकना आ उत्साह क वयान वहि निकलल। आनन हानन म सवटा प्रक्रिया शुनु रल, ड़ॉ० प्रवीध आव सदन अस्पनाल वगुसनाय क शिशुनाग निरोग म यीजी टीचन क नुप म ज्ञाञ्ञन क नन ङलाह आ डहि साल स अस्पनाल म ञीजनवी यीतियाद्रिक्ष कार्स सह्ा शुनु र (गल ङल।

चलु आव वर्तमान यन आवी। ड़ॉ० प्रवीध क सामन ७कटा अ(धन उमनि क आदमी वैसल ङल आ ड़ॉक्नन साहव क ७कटा ञीजनवी झ्नी डाकन यानी क दख नहल ङल। डा वैसल ङल मुदा सामन नाखल स्नूल यन नञ्ञी अयिनु जमीन यन उकडू वैसल ङल। श्याम वर्णीय आ घननन माङ नाखन, ललाट यन ललका टिक्का लगौन डाकन चहना यन (गौटैक वन वान कन क क्राम म मुस्कान आवि जाय ङल। खास क क जखन डा अयन यानी क वान कनय ङल। डाकन चहना आ आँखि यन यनल स्नूर्नी डाकन जीवन संघर्ष क

गाथा कहि नहुल छला। मूदा शनीन स वलिष्ठ आ स्हिटस्हाट छल उ आदमी। ऑफ्तन साहुव क वूमना गेल नहैन ज प्रनी क मर्ज समम म न्हूी आवि नहुल अछि गाहि स उ उाकना स पूछन छलखिन ज

"न्हूी वचिया अहांक क य?"

"यागी हुहू साहुव "

"की स्लन्हूी य ज्कना?"

महिना-दू महिना स यट हहान्हूग नहन्हूी हुहू साहुव दनद स छटयटा जाय हुहू।

"की कनय छि? कग' नहुय छी?"

"वनिया वनियानपून गाँव है साहुव, ज्गन्हूी स्हगन लगा वाह-यकौउी क खायवा लगवन्हूी छी।"

"यहिन अहाँ कूर्सी यन वैस जाउ प्रनीक्ष खाली कूर्सी दिस न्हूगाना कनैग वजलाह

"न्हूी साहुव हम ठीक छी जमीन यन उकडू वैसल उ वाजल

"नै यहिल कूर्सी यन वैसू ज्ञ वन प्रनीक्ष कनी गज आवाज म वजलाह आ उ सकूवान्हूीग कूर्सी यन वैस नहुल छला।

तदुपरांत अपन ओही डॉक्टर क काम क विषय म किछ समस्या क बाद प्रदीप पुनः ओकरा दिस ताकैत बजलाह चनिया बनियानपुर बहुत दूर ठीक ओत स त हुन ओतक दूर बेगुसराय काज करए आवै छी? ओतहि कोनो काज कतउ नै करई छी।

साइकिल स आबय छी साहेब। रमन बाबू ई खामचा खालन रहई। बचपन स हुनका जखन साइकिल पर आबईत देखि, हुनक स ई काज सिखल आ तहिया स येह काम ई काज करई छियई।

ई सब करईत ओकरा चेहरा पर कोनो दुख या पछतावा क रेख नै छल अपितु अपन पिता क संग बीतल अपन बचपन क अनुभूति, पिता क वात्सल्य क स्वाभाविक गौरव अनुभूति ओकरा चेहरा पर ओकर आँखि क चमक म पढल जा सकई छल।

डॉ० प्रदीप हुन पूछलखिन ओनाई-जनाई लगा क लगभग 45-50 किलोमीटर त भ जाय हुए, त गाम दिस किएक न किछ करय छह।

ओमहर दिस आइब मशीनी नै रहई छई साहेब। ओत बाबू क जमायल काज छै 500-600 क दिन दिहाडी बनि जाय छै।

वच्चा सव की कनय य "वटी सव वियाहि दलियऽ् साहेव वटा सव दिल्ली म कमाय है।" डॉ० प्रवीण क प्रश्न क जवाव म ओ वाजल छल।

"कुन क्लास म पढय छहक नून्" एवनी डॉ प्रवीण ओय वचिया स पूछन छलाह

"पंचमा म" ओ छोटी गमऽ्क क वाजल छल

ऽ्ी सुनि ओ आदमी अपन माछ पर गाऊ दैग वाजल, वड़ चंट हय साहेव, सवटा हिसाव किताव हेटाहेट क लऽ्ी है।

अच्छा एकटा वात वताव' नाती-पोता सव क पढवहक की नै" डॉ० प्रवीण क साऽ्ग ओकना स वात कन' म निक लागि नहल छल। संजोग स नाती क रीत सहा कम छलय।

"हाँ साहेव पढवऽ्ी किए नै"

"अपन वच्चा सव क किए नै पढलहक" पोता सव क ग आनऊ्ध सहा हेटऽ्ी हग'। दसमा गक पढन हय वच्चा सव साहेव, सनकानी ऽ्सकूल म पढाऽ्ीए करहन हाय छय, दुग्गा-चानग्गा हानम सहा

एखन रहय लेकिन कुछ एहन नय त दिल्ली कमाय लेल गेलय। हमर आन हरिजन म नै आबय दियइ।"

"तैयो ओबीसी म आबय हेबहक नै त ईडब्लूएस कोटा म त एबे करबहक। तोहर धिया पुता सब निक स रहतय नै एखन हए'। तोरा कोना न कोना आरक्षण क लाभ एहन' तोरा पता छह तोहर ई पोती बहुत कम पाइ म सरकारी कॉलेज स पढ़ि-लिखि क हमरा सन डॉक्टर सेहो बनि सकइ छह।"

"हाँ साहेब एकरा ओन क खूब पढ़बै हम"

किछु आर गप सप करा क बाद आ पोती क विषय म दबाय आ सलाह लेला क बाद ओ अपन पोती क ल क गेट पर अपन आ पोती क उतारल चप्पल पहिरि गेट स बाहर गेल।

ओकरा गेला क बाद डॉ० प्रवीण अपन पीजी स्टूडेंट स पूछलखिन "बताउ ई कुर्सी खाली रहितो ओ निच्चा किए बैसल छल"

स्टूडेंट क थकमकाइत देख ओ कहलाह ई हम बस पुछि रहल छी।

द्रनी क किछ उग्दन सूभला हाय गथायि ऊा बूथ नहला।

"अष्ठा ङ्ी वगाउ ज ७ाक नास सनकानी याजना सव क वानझद ङ्ी अयन वष्ठा सव क यढनाङ्ी- नौकनी दि७नाङ्ी कि७ नै क यल"

"सन आलस...वृद्धि... कनमनढ सव छै"

"अहाँ क लागे य ज 45-50 किलामीटन नाज साङ्किल चलाव'वाला लाक कनमनढ हगय! ककना टांग टूटल हाय आ ऊाकन शानदान ङ्केक यन कहि दल जाय ज दौनु ग कि ऊा दौग यगय? चलू यहिल सवाल यन घूनङ्ी छी। कि७ काना शर्ट-यंट वला निष्ठा नै वैसङ्ी छै, कि७ खाली गनीव-गुनव टा निष्ठा म वैसय छै? कि७कि ऊाकना सव क वनसा-वनस यैह समभायल गेल छै ज नाहन यहिनन-ऊाढन, नहन-सहन यैह लाङ्क छौ ज कुर्सी यन नै वैस सकय छहि। ऊाकना ञे वाग क उन वनल नह छै ज कुर्सी यन वैसन कहीं ऊाकना दुकानल नै जाय ञे स ऊाकन आत्मसम्मान क ठेस लागगङ्ी। गै ऊा यहिनन निष्ठा म वैस नहल छला। हम ऊाकना स ७न्भी काल गय्य क नहल छलहु ञेस अहाँ सव क वगा सकि ज ञे मनीज सव क डॅक्टन सव मशीन क जका दख छय कनिक काल ऊाकना स गय्य कला यन काक नास वाग वूसना म आवय छय। ऊाकना खायवा म चाह यीवङ्ीग काक लाक क मान

म ॐी आवॐीत हाय ज ॐी गाज 50 किलामीटन साॐकिल चला क डा वाद दुकान चला गेल छी। एकन मनोज क एकटा व्यर्थ जांच लिख दनाॐ मानलव रल ज एक दिन डाकन जांच क व्यर्थ वक्कान म वर्वाद कनाॐ आ डाकन दिहाउी मननाॐी। डॉक्टन क सदिखन एकटा कायनगिनन वनि क मनोज क ॐलाज कनवा क चाहिए। यदि अहाँ कुर्सी पन वैसल छी आ कियो आहाँ क सामन अछॐीत कुर्सी निच्चा म वैसल अछि त ॐी वात अहाँ क कचाटवा क चाहिए। ज री मनोज हाय डाकना यहिन अपना समानता क रून पन महसूस कनवीयो रून डाकन ॐलाज कनियो आ अन्ना अंदन समानता क राव नाखियो नै छाट नै पॐघ। वाद कलक्टन-नना हाय कि आम गनीव लाक सवक एक राव स ॐलाज कनवा क चाहिए। अहाँ आ डाकना म काना विशेष रूकै नै थिक। अहाँ ॐलाज ठ्ठाना ककना कयन द गेल छी डा वाद पिया क। वसी डॉक्टन सव साहित्य, संवदना, दर्शन आदि क हालनु आ चिकित्सा प्रैक्टिस क लल हास्यास्पद मानय छैथ मुदा ॐी वात क गां0 वाॐह लिय ज साहित्य, संवदना, दर्शन क सवस वसी आवश्यकता विज्ञान क काना शाखा क सवस वसी छैक त डा चिकित्साशास्त्र छैक। किएकि चिकित्सा खाली शनिन टा क ठीक कनव क नाम नै थिक अपितु मन आ आत्मा क री आनाग्य क दवाक नाम थिक। "

संजाग स डॉ0 प्रवीण जाखन अपन पीजी ड्रनी क ॐी सव वृसा गेल छलाह गखन यान कक्का सहा काना लाथ प्रवीण क कविन म

यहूंवल ङलाह। जॅ० प्रवीम ड्वाना अयन ड्वनी क दल सलाह सुनि यान कक्का क प्रवीम सन आयुर्विस्लान यीजी टीवन यन वहूग गर्व क अनूसुगि स्लक्कन आ अयन समाज क जॅ० प्रवीम सन विकिसक आ मिजक दवाक अयन कृगिन्न क लल अयना म घान संगाष आ गृक्कि प्राक्क स्लक्कना। क्कगि।

**उनवनायन** **अयन**
**मंगव** editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

## ३.६.आचार्य रामानन्द मण्डल-मिथिला क लाल: उपन्यास सम्राट फणीश्वरनाथ रेणु आ यात्रा



**आचार्य रामानंद मंडल**

**मिथिला क लाल: उपन्यास सम्राट फणीश्वरनाथ रेणु आ यात्रा**

१

**मिथिला क लाल: उपन्यास सम्राट फणीश्वरनाथ रेणु**

विश्व प्रसिद्ध आंचलिक उपन्यास मैला आंचल क शिल्पकार फणीश्वरनाथ रेणु क जन्म बिहार राज्य क मिथिलांचल स्थित अररिया जिला क औराही हिंगना गांव मं शिलानाथ मंडल आ पाना देवी क पुत्र रुप मं ०४ मार्च १९२१ मं भेल रहे।

विश्व साहित्य क यथार्थ ग्रामीण पीडा क संवदिया, पारिवारिक सत्य, गृहस्थ जीवन क दर्पण आ राजनीतिक यात्रा रुपी एकटा

मिसाल। कहीं का॰॰ी माल यही नै,धन धनी क माद नै,वस,गन आ कय७ा स दख मं ७नश्याक्राट,मन सं कासी क धूसन वंजन आ वांम धनी क अनमाल श्लौ७ा आ रावना सं क्रांगिकानी नध्र् क अ॰॰सन दर्जन निशेषता हेय ज दूनका अमन वनवेग हेय।

मैला आंचल,यनी यनिकथा, ज्ञलुस, किगन वौनाद,दीर्घगया,कंलक मुक्ति,Qमनी, आदिम नाग्रि की महक आ अग्निखान आदि क सृजनकर्ता नध्र् साहित्य जगग मं गहलका १९७४म मव गेल नहि मैला आंचल क उयनांग।

नध्र् जी गीन रा॰॰ नहेग, रुग्नीश्वननाथ,हनिनाथ आ महध्न नाथ। रुग्नीश्वननाथ क गीन शादी रल नह। यहिल यत्नी नखा दनी नह। ७गो लै॰॰की कनिगा क जनम दला क वाद चल वसल नह। नध्र् क दासन निआह यश्मा दनी स रल नह। नध्र् आजादी क ल७ा॰॰ी मं जीनंग हिस्सदानी निरैलन। ज्ञलुस जैसन नचना नाकन स्पष्ट प्रमाण हेय। ल७ा॰॰ी क वीच मं १९४२ मं जहल गेलन। यहिल कटिहान जहल आ वाद मं रागलपुन जहल मं नखल गेल नहि। उंह दूनका यक्ष्मा क शिकायग रल आ चिकिसा क लल यी७मसी७च यटना रज दल गेल। चिकिसा क अनधि मं उंहा क ७कटा नर्स लगिका क समर्पण आ सदारान सं नध्र् आ लगिका मं प्रम र गेलै। हजानीवाग मं जा क दुनु गोग निआह कैं ललन।

यश्मा नध्र् सं साग संगान रल। गीनटा लै॰॰का आ चानटा लै॰॰की। मुख्य: ॰॰ह संगान सद नध्र् क यानिनानिक धुनी हेय। लै॰॰का सद हेय- यश्मयनाग नाय नध्र्,अयनाजिग नाय आ दक्षिणेश्वन

नाम। बेटीक सब छैय- नवनीता, निवेदिता, अन्नपूर्णा आ वहीदा। लतिका रेणु सं कोनो संतान नै छैय।

पिता शिलानाथ मंडल क साहित्यिक रुझान आ राजनीतिक जागरुकता क अमिट छाप रेणु पर पड़लैन। आगा चल क रामदेनी तिवारी हुनका राजनीतिक आ साहित्यिक दिशा देखैलथिन। अइ क कारण रेणु कोनो विद्यालय मं नै टिकला। कहियो फारबिसगंज, कहियो सिमरबनी, कहियो विराटनगर (नेपाल) क चक्कर लगबैत रहलन। नेपाल क कोइराला परिवार क संगति हुनका क्रांतिकारी बनैलक त बंगला क प्रख्यात साहित्यकार क संगति हुनका कहानीकार बना देलथिन। काशी विद्यापी0 क पढ़ाइ क अवधि मं समाजवादी आचार्य नरेन्द्र देव क संगति भेलन। आ अंत मं लोकनायक जयप्रकाश नारायण क कंधे स कंधा मिलाक अइसन साहित्यकार बन लला कि बिहार क ताइ सब बुद्धिजीवी आ साहित्यकार क उद्वेलित कैलक ज मूलतः नपुंसक भ गेल रहै।

राजनीतिक रुझान क चलते १९७२ मं रेणु जी फारबिसगंज विधानसभा सं चुनाव लड़लैन परंच हार गेलन।

१९८१ मं मैला आंचल पर निर्माता किशोर तंग आ निर्देशक अशोक पलवार धारावाहिक बनैलन आ जकर टेलीकास्ट भेल रहै।

रेणु जी क कृति मारे गए गुलफाम पर तीसरी कसम फिल्म बन चुकल छैय। जकर नायक राजकपूर आ नायिका वहीदा रहमान छैय।

नेहरू जी अयन यत्नश्री क उयाधि श्रीमती इन्दिना गांधी क ह्वाना आयातकाल लगेला यन विनाध मं लौटा दलन। आयातकाल क विनूद्ध लडाई मं जल गेलन। अयॉतिक्ष क चिकित्सा क दौनान कोमा मं चल गेलन आ अई संसान स सदा क लल विदा ह्य गेलन।

नाहुल सांकृत्यायन आ प्रमचंद क श्रेणी क लखक आ क्रांतिकानी क निधन ११अप्रैल १९११ क ह गेल।

अईसन वीन साहित्यकान यन मिथिला क गर्व हैय।

२

**याना**

नामू छोट सन कसबा म एगो जलयान क दुकान चलबैत नहय। ना अयन घनवाली लाता संग दुकान क यीछ वाला घन म नहय। सुबह सात वजे स दस वजे आ दु यहन तीन वजे स सात वजे साम तक मूनही,घूघनी आ कचनी -चय वेच स फूर्सत न नहय। नाकन घूघनी आ कचनी चय वडा स्वादिष्ट नहय। लाग मल्लाह क यता क दाना मं सूसूआ सूसूआ क खाय। मान कनूगन आ तयात तयात घूघनी आ कचनी चय। लाग घन सनअ क नूय म मूनही कचनी चय खनीद क ल जाय।

नामू क एगो वटा ही तीन साल क नह। नाकन घनवाली लाता क हून स यांव हानी ह गेल। जौं सात महिना वीत गेल त लाता

ए काज करय मे दिक्कत होय लागल। लाला अइयन धनवाला नामू स बाजल-सुनैय छी।

नामू-बाजू ना।

लाला-आबि हमरा स काज न होयत। हमरा ७०-८० मे बड़ दिक्कत होइछ।

नामू-त कि करू। दुकान करना बंद करू। जीय के त छैह आसरा हय। दुकानो खूब चल रहल हय।

लाला-ठीक। बात करू ना।

नामू-कि।

लाला-हमर छोटकी बहिन याद के बुला लूं ना।

नामू-बात त ठीक करैय छी।

लाला-काल्हिय चल जाउ। काल्हि दुकान बंद रहतैय।

नामू-अच्छा।

ग्राहक-कि हो नामू। आइ दुकान काहे बंद कैला छा हो।

लाला-आइ न छथिन। ना हमर बहिना गेल छथिन।

ग्राहक-कि बात।

लाता -हमना देखैय न छथिन। हमना मदति के लेल हमना छोटकी वहिन के वुलाव ला गेल छथिन।

गाहक -अच्छा। काल्हिय स दुकान चलतैय ना।

लाता -हं।

नामु सवेर दस वजे ससुरार पहुँच गेल। नामु ससुर-सास के गोर छु के प्रनाम केलक। छोटकी सारी पाता अपन वहनोई नामु के गोर छु के प्रनाम केलक। आ गोर धोय ला एक लोटा पानी देलक। नामु अपन गोर धोय लक।

पाल पाता अंगना चौकी पर जाजिम विछा देलक। नामु ओइ पर वैठ गेलक।

ससुर वृन्दावन वाजल -मेहमान । लाता के हाल चाल वताउ।

नामु वाजल -हम लाता के मदति के लेल पाता के वुलाव आयल छी।

वृन्दावन वाजल -कि वात।

नामु -लाता के सातम महीना चल रहल हय। घर आ दुकान के काज करय म दिक्कत हो रहल हय।

नामु के सास वाजल -हं। पाता के ल जाउ। ओइ मदति करतैय।

वृन्दावन वाजल -अच्छा। पाता अपना वहिन पर जाय।

𑒩𑒰𑒧𑒴 𑒥𑒰𑒖𑒪 -𑒯𑒧 𑒂𑒃𑒋 𑒪𑒾𑒙 𑒖𑒰𑒨𑒥।

𑒫𑒵𑒢𑓂𑒠𑒰𑒫𑒢 𑒥𑒰𑒖𑒪 -𑒯𑓀। 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒞 𑒏 𑒪𑒴।

𑒣𑒰𑒩𑒼 -𑒔𑒪𑒴। 𑒖𑒲𑒖𑒰। 𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒪𑒑𑒰 𑒠𑒹𑒪 𑒕𑒲।

𑒩𑒰𑒧𑒴 𑒥𑒰𑒖𑒪 -𑒔𑒪𑒴।

𑒩𑒰𑒧𑒴 𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒏𑒻𑒪𑒏। 𑒂 𑒏𑒳𑒕 𑒠𑒱𑒢 𑒪𑒰𑒙 𑒣𑒰𑒙 𑒏 𑒏 𑒣𑒰𑒩𑒼 𑒏 𑒪𑒏 𑒒𑒩 𑒔𑒪 𑒠𑒹𑒪𑒏। 𑒮𑒰𑓀𑒗 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒥𑒹𑒩 𑒒𑒩 𑒣𑒯𑒳𑓀𑒔 𑒑𑒹𑒪। 𑒣𑒰𑒩𑒼 𑒁𑒣𑒢 𑒥𑒛 𑒥𑒯𑒱𑒢 𑒪𑒞𑒰 𑒮 𑒑𑒪𑒰 𑒪𑒱𑒣𑒙 𑒑𑒹𑒪।

𑒣𑒰𑒩𑒼 𑒁𑒚𑒰𑒩𑒯 𑒥𑒩𑒱𑒮 𑒏 𑒖𑒫𑒰𑒢 𑒨𑒳𑒫𑒞𑒲 𑒩𑒯𑒨। 𑒮𑒳𑒢𑓂𑒠𑒩𑒞𑒰 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒁𑓀𑒑-𑒁𑓀𑒑 𑒮 𑒙𑒣𑒏𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒨। 𑒪𑒞𑒰 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒏𑒰𑒖 𑒧 𑒧𑒑𑒢 𑒩𑒯𑒨। 𑒂𑒥𑒱 𑒪𑒞𑒰 𑒩𑒰𑒯𑒞 𑒏 𑒮𑒰𑓀𑒮 𑒪𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒨। 𑒩𑒰𑒧𑒴𑒍 𑒏𑒰𑒖 𑒧 𑒫𑓂𑒨𑒮𑓂𑒞 𑒩𑒯𑒨।

𑒠𑒳𑒏𑒰𑒢 𑒐𑒴𑒥 𑒔𑒪𑒨। 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒯𑒏 𑒣𑒰𑒩𑒼 𑒏 𑒠𑒹𑒐 𑒏 𑒪𑒪 𑒪𑒪𑒰𑒨𑒱𑒞 𑒩𑒯𑒨। 𑒪𑒹𑒏𑒱𑒢 𑒮𑒦 𑒠𑒹𑒐𑒱𑒨 𑒦𑒩 𑒞𑒏 𑒮𑒲𑒧𑒱𑒞 𑒩𑒯𑒨।

𑒁𑒯𑒱 𑒥𑒲𑒔 𑒮𑒰𑒪 𑒥𑒲𑒞 𑒑𑒹𑒪। 𑒪𑒞𑒰 𑒋𑒑𑒼 𑒮𑒳𑒢𑓂𑒠𑒩 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒏 𑒖𑒢𑒧 𑒠𑒹𑒪𑒏। 𑒣𑒰𑒩𑒼 𑒁𑒣𑒢 𑒥𑒯𑒱𑒢 𑒂 𑒥𑒯𑒱𑓀𑒠𑒲 𑒏 𑒮𑒹𑒫𑒰 𑒮𑒳𑒮𑒳𑒩𑓂𑒭𑒰 𑒧 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒩𑒯𑒨। 𑒋𑒢𑒲 𑒣𑒰𑒩𑒼 𑒧 𑒬𑒰𑒩𑒲𑒩𑒱𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒩𑓂𑒞𑒢 𑒯𑒼𑒨 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒍𑒏𑒩 𑒣𑒹𑒙 𑒧 𑒅𑒦𑒰𑒩 𑒠𑒹𑒐𑒰𑒨 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒏𑒰𑒢𑒰𑒤𑒴𑒮𑒲 𑒯𑒼𑒨 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒪𑒞𑒰 𑒣𑒴𑒕𑒻𑒨 𑒞 𑒣𑒰𑒩𑒼 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒖𑒫𑒰𑒥 𑒢 𑒠𑒨। 𑒥𑒰𑒞 𑒅𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒅𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒣𑒰𑒩𑒼 𑒏 𑒥𑒰𑒣 𑒫𑒵𑒢𑓂𑒠𑒰𑒫𑒢 𑒞𑒏 𑒣𑒯𑒳𑓀𑒔 𑒑𑒹𑒪। 𑒫𑒵𑒢𑓂𑒠𑒰𑒫𑒢 𑒁𑒣𑒢 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒪𑒞𑒰 𑒃𑒿𑒯𑒰 𑒦𑒰𑒑𑒪-𑒦𑒰𑒑𑒪 𑒂𑒨𑒪।

वृमावन वाजल -मह्मान। ॐ कि सुनय छीयै।

नामू वाजल -ह्मना आश्चर्य लगेय ह्य।

लाता वाजल -ह्मना कुछ न वृमाॐ ह्य। याना कुछ न वालय ह्य। खाली गुमकी मानल ह्य।

वृमावन वाजल -मह्मान ।ह्म अंहा यन यंवायनी वै0ायव। अंहा याना क वूला क लयली आ अंहा सुनआ न कै येली। ह्म आवि मुंह कना दखायव। आ याना स विआह क कनेय।

वाग ह्ना मं ह्ॐल गेल। कालिय रान यंवेनी वै0ल।

सनयंच वाजल -याना वटी। ताना ना। साह साह वाला।

गाना साथ ॐ काम कान कैलन ह्य।

याना निवा मुंह मुंह कैल नह। कुछ न वाला। कुछ दन क वाद याना वाजल -कि कहू सनयंच काका। ॐ जीजा क काम ह्य।

नामू वाजल -याना ॐ गु कथी वालय छा। कैला ह्मना वदनाम कनेय छा।

याना वाजल -जीजा ह्म मु0 न वालय छी। अंहू मु0 न वालू। ह्नी क नाग अंहा ह्मन सलनान क छाती न खाल दल नही। ह्म ह्ाथ म ग नही। लकिन निनाध कनेय क गाका न नह्य। अंहा ह्नी क वहान रांगनाला यता खिला दल नही। वहिना क खिला दल नही। अयना खेले नही। ह्मना कुछ ज्यादा खिला दल नही।

नामु कुछ न वाजल। अयन मुँह निचा क ल ललक।

सनयंच वाजल-एकन एकटा ॐसारु हुय। नामु क याना स निआह कन क यठौया। सानी स वहनाॐ क विआह कन यन सामाजिक वंधन न हुय। ॐ अच्छा नी हौया।

लाठा वाजल-जौ हुमन साॐ ॐ गलनी क ललन हुय। ए हिनका याना स विआह कन क यठौया। कि कनवा। निधना क ॐह मंजुन हुय गा। हुमना मंजुन हुय। हुम दुनु सौगिन न,वहिन लखा नहुव।

नामु वाजल-सनयंच काका क ॐसारु हुमना मंजुन हुय।

वृमावन वाजल-सनयंच साहुव क फैसला हुमना मंजुन हुय।

सनयंच वाजल-ए चलु गांव क महादव स्थान म।

सए लाग महादव स्थान म गलन।

अयन साॐ स लाठा वाजल-लुं सनुन आ महादव वावा क साऔ मानेग याना क मांग हुन दिऔ।

नामु महादव वावा क साऔ मानेग याना क मांग म सनुन हुन दलक।

हुन हुन महादव क आवाज स महादव स्थान गुंजायमान हा गल।

नौ महीना वाद याना एगा सुन्नन लठिका क जनम दलक।

आऔ दुनू पत्नी लाता आ पाना क संग नामू खुश आ खुशहाल रहय।

-आचार्य नामानंद मंतल सामाजिक चिंतक सीतामढी, *सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, माता-चन्द्र देवी, पिता-स्व०नाजधन मंतल, पत्नी-प्रमिला देवी, जन्म तिथि-01 जनवनी १९६० पाथना- ७म-७ससी (नसायन शास्त्र), ७म ७ (हिन्दी)। नुचि- साहित्यिक, मैथिली-हिन्दी कविता - कहानी लेखन आ आलेख। प्रकाशित पोथी - मैथिली कविता संग्रह नासा क न वांटिया। २०२२ प्रकाशित नचना - समिया कविता संग्रह पोथी - जनक नंदिनी जानकी आ शौर्य गाथा। २०२२ पत्रिका -मिथिला समाज, घन -बाहन आ अपूर्वा (मैसाम)। अखवान -दैनिक मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश। सामाजिक-सामाजिक चिंतन, दायित्व- पूर्व जिला प्रतिनिधि, प्राथमिक शिक्षक संघ, रुन्नी, सीतामढी। स्थायी पता-ग्राम-पिपना निशनपुन थाना-पनिहान जिला-सीतामढी। वर्तमान पता-पिपना सदन,मुनलियाचक वार्ड-04 सीतामढी पोस्ट-चकमहिला जिला-सीतामढी नाज्य-बिहान पिन-843302*

**ऐ नचनापन अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पन पठाउ।**

३.९.डॉ. किशन कानीगन-लांगी ऊँस(हास्य कटाक्ष)



## जाॅ. किश्न कानीगन

## लांगी तेंस (हास्य कटाऊ)

वावा व७व७ाॢ्न वजो नहि ज ७हना कहु तेंस एलै७? कह७ग् ग जकना दखियौ सैह कहैयै ज यौ वावा लांगी तेंस लांगी तेंस. ओाॢ रिंसन स वसहा वनद गाल मात्रा खलाॢ७? कहि छियै ज वल वाध वान दिस वैन लिहं वलु हमहुँ खग यथान दखन आ७व. वसहा वनद यन वैस विदा हैव की काव ॢहा नमैक जाॢ७ लांगी तेंस. छौं७ा मान्न सव रींसन स लाउतिय्यीकन यन घनघनैन छै आ ॢ वसहा वनद नवे७ ग ७कना दु सटकन दै छियै ७कना मन सैाम एs जगे की.

गाव हम वावा लक यहुँवली हिनका स यूछली ज वावा की समाचान हि क? वावा वजलै हौ कानीगन समाचान की कहियै दखै छहक न वसहा वनद यन स धनहना क खैस यनलहुँ? हम यूछली ज वावा स कना हा (गल? वावा वाललकै ७ह की कहियग् वसहा वनद यन वैसल विदा हाॢ्न नहो की गाव लाउतिय्यीकन यन अनाज ७लै ज लांगी तेंस लांगी तेंस की वसहा वनद नमैक नमैक तांस कनग् लगलै आ हम धनहना क धांॢी एटका खसलौं की.

रा(गसना यंता क ह्ला कालियै ज दोगञ् हो ग उहा र(गसना वाजल यो वावा लांगी तांस? करुञ् गs हमन जान ञनग्रह रल नहे ञा गाना सव क ञलगे गाल छरु. ञह्वा यहिन ञक ङ्गम गमाकुल खुञावरु ग रून कनि गय सय कनै छी.

गाव वावा क रुम खेनी चूना क दली वावा खेनी खाळ्गा दनी वाललकै ज ञंळ्ळी हो कानीगन ळ्ळ करुञ् गs ज यमनीया नाव, घाना नाव, नटूञा नाव, ञल्ला नुदल नाव स सव ग सूनवा दखवा कालियै? ञा ळ्ळी लांगी तेंस स करुन हाळ्ळ छै? रुमना ग काना रांज नै लगेञ? हो कानीगन गाना काना रांज वूसरुल छरु? रुम वाललियै ज रुमना कहां ळ्ळ तांस हांस वूसरुल यै क? वावा हां हां क हँसेग वाललकै हो कानीगन गाना मीतिया नला सव क गs सवटा वूसरुल नहे छरु की ज रूलां दिनाळ्ळीन क ववी वंय दिखा, ग रूलां दहीना किसींग सीन कना किया ग चिलां दीना क वटा ङ्गगस कांत म जल स नीहा ग रूलां दीनाळ्ळन क विकनी ङ्गस यन रैंस दिदा. ञा लांगी तेंस दिया नै वूसरुल छरु? कनि रुमना जल्दी करुञ?

वावा क वूसवग रुम गाव लगली माछ क मध्मनी दिस घूमा रव? लहान म ञाँखि क ञयनशन कना रव? यामन वला चशमा यहिना रव? यो वावा रुम छी ञहाँ क रैंस मिस न कनु तिल्ली वम्रळ्ळी कमाळ्ळी क वेंस? लांगी तेंस लांगी तेंस. वावा गीग सून मूम लगलै ञा वजलै सवटा गय ग वूसवा म ञाञल ञा ळ्ळ माछ क मध्मनी दीस किञ घूमा रववरुक. रुम कहलियै यो वावा मैथिली यूनस्थान

ऊंका मनमाना नला गय छै. वावा वाललकै रुं रुो कानीगन रुमना रांज लागल ज सवटा मैथिली यूनष्कान मनमान यन सन कूटमान क दनरुंग मधमनी नला क दै छै? कासिकह्रा वला क सव आनदक क सव ग्रूनी आ क सव यूनुष्कूण आ किजक? सै ककना काना रांज नै लागज दै जाळ्ळ छै? आ लाथ करुन कनारु ज मैथिली म जरुना रुाळ्ळण जलैज? जरुन साहित्यिक दलाली स नीक ण लांगी ऊँस ज लाक सव स्यष्ट नुय कानगा वूसरुै छै की. ण आळ्ळी सव मिल कनरु लांगी ऊँस लांगी ऊँस.

**अयन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

३.१०.लाल दन कामण-मिथिलाम मांगेन खनाश छळ्ळ! (आगाँ)/ नर्धिण नस/ चारु याखना'क अर्थ जानि गेलहुँ (लघुकथा)/ लघुकथा-यनवाक निरुणार्थ/ चलला मूनानी छकवय (लघु कथा)/ लघु कथा-रुलरुोन/ मैथिली विरुैन कथा- -सायनयिड्ढा/ राग जागल- निरुैन कथा/ सूनैना वटी - मैथिली सामाजिक उयन्यास/ लिख यटायैट मानय दयरु (लघुकथा)/ लघुकथा- ळ्ळी गुउ खनै कान छदौन/ अम्ब्राहि यानि उ0ल-लघुकथा (मैथिली)/ नाज सरुत लिखी (लघुकथा)/ लघुकथा -नानी कँ नँय छै नाजा



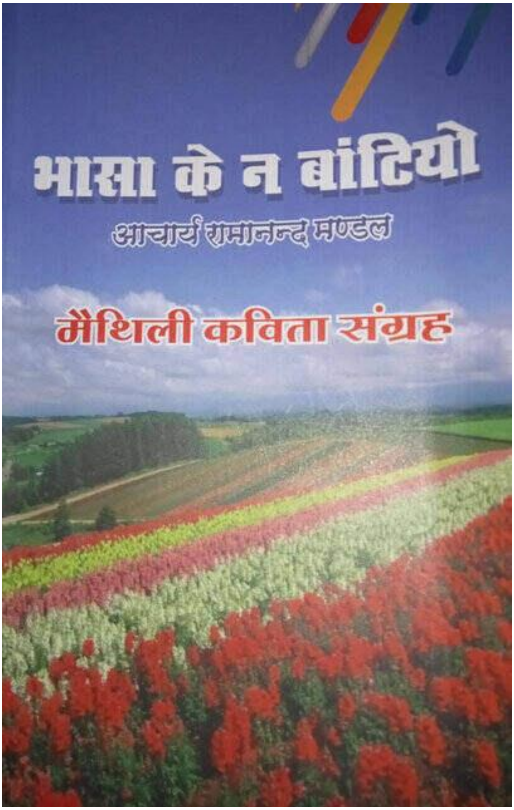
## लाल देव कामत

मिथिलामे मांगैन खनाश छौ! (आगाँ)/ बर्खोग नस/ चारु पाखणा'क अर्थ जानि गेलहुँ (लघुकथा)/ लघुकथा- यनचाक निर्हिणार्थ/ चलला मूनानी छकवय (लघु कथा)/ लघु कथा- रुलहोन/ मैथिली विहैन कथा--सायनयिद्दा/ राग जागल- निहैन कथा/ सूनैना वटी - मैथिली सामाजिक उपन्यास/ लिख पटायेट मानय दयरु (लघुकथा)/ लघुकथा- छौ गुउ खनै कान छदौन/ अम्बाद्रि यानि उ0ल लघुकथा (मैथिली)/ नाज सहत लिवी (लघुकथा)/ लघुकथा -नानी कँ नँय छै नाजा

१

**मिथिलामे मांगैन खनाश छौ!**

**(आगाँ)**




नामा अर्हाँ क सुनर्ऽली , दम्मन सुनु। उ गनहँ सर उत्र मं वाँकियोगा वाऽकलाग कदियाधनि यूना दायग। अयन याग दखवाक ञखना नस्फा दल जा नदल य,यनंव जम्मा ढनी किया नहिँ ढादग! उदानवादी दायन वउ कठीध वृसाछ। गँ कनिजीक याँगि समाजक अह्नाना म ऽजागक वाट दखय ल नाध्न कनेॊ छेक। दूनक ञक कनिगा यदु :-

मिथिला नाग्र लल,वियाकूल मान जीयना ।
मिथिला नाज लल, यियासल मान ह्रियाना ।
मिथिला नाग्र लल ,गुखल मान मननां ।

मैथिल भाषा सँ,अघायल मान जीयना ।
मैथिली सनमान सँ, अघायल मान हियना।
मैथिली याग मा ,समायल मान मनवां।
वज्जिका भाषा सँ उनाय मान जीयना।
अंगिका भाषा सँ घवनायल मान हियना।
वाली मान म हूलसाय मान मनवां..............

सदनिकाल सँ आवाधनि हम गुलाम छी,हमना वर्तमान व्यवस्था एखनो गुलामीक जींजिर सँ कसिकय जकड़ने अछि। मुदा खुब जाड़गन मटका धीन सँ अकान्ह करैत या जेना कि आचार्य जी याँति गढलैन हन् :-

हम कऽऽस गुलाम छी!
कहिया हम मुगल क गुलाम छी।
कहिया हम अँग्रेज क गुलाम छी।
कहिया हम राजा क गुलाम छी।
हम कऽऽस गुलाम छी।
आऽऽया हम नेता क गुलाम छी।
आऽऽया हम पार्टी क गुलाम छी।
आऽऽया हम राजनीतिक क गुलाम छी।
हम कऽऽस गुलाम छी।
आऽऽया हम जाति क गुलाम छी।
आऽऽया हम समाज क गुलाम छी।
आऽऽया हम अर्थ क गुलाम छी।
हम कऽऽस गुलाम छी।
आऽऽया हम धनम क गुलाम छी।

आइयो हम राजवंशी भगवान क गुलाम छी।
आइयो सारा हम राजा क गुलाम छी । ओकरा परिस्थिति म लोक अपन मन आजादी केर एहसास करा पाबए। ग हर पाप-पाप पर गुलिस्ता ग बैसल छैक किये? ऊँच नीच क भावना समाजम विद्यमान छैक, संविधान म अस्पृश्यता - घृणा कर विरुद्ध कानगर कायदा कानून बनल रहलाक बादो लोक कर्मक सुनबैत छैक! ई हमरा एकटा पैघ प्रश्न ठाढ़, सुनसाक मुँह बोर रहैछ बुझाइछ। एखन ग एक लखकीय समाज गुटबंदी कय पचमनियां लिखल क आँय-बाँए मानि रद्दीक टाकनीक फोटो बढ़बय वाला हमरहीन रचना करिकय, सासल मीडिया म छिनयबैत छै। मनोवैज्ञानिक आयमि ठीक ज ज्ञानक ई पैघ कटानी अपनहिटा लग बुझैत मानैत, संघर्षरत एकरा कँ हतोत्साहित कय अधविटियाम लटकौने बहु गनहुँ साधक रूपैं देखार होइछ। कवि महोदय जनमानस म ऊर्जा भरैत उपजैत बाँचि कँ अपन हक - अधिकार लेल सतत् सजग आ जागरूक रहय ल कहैत अपील धनि कविता विधा माध्यम सँ कयल छथि-:

आइ कि काइ रहल हैय ।
असहमति क अधिकार
छीनल जा रहल हैय।
आइ कि हाय रहल हैय।
बालई क अधिकार
छीनल जा रहल हैय।
आइ कि हा रहल हैय।
असहमति क अधिकार

दस ब्राह वन नहल हैय।
आऽऽ कि हा नहल हैय।
अमीरी गरीबी क खाऽऽ
वढल जा नहल हैय।...,... आचार्य रामानंद जीक स्पष्ट कथन छैन,याँनि दासता दखल जाउ :-
राधा क
सनद्द म न वांटिया।
मैथिली क,
वज्जिका अंगिका म न वांटियौ।
मैथिली क,
संस्कृत - असंस्कृत म न वांटिया।
मैथिली क ,
नाउ मानक म न नाटिया।
मैथिली क,
ऊँच - नीच म न वांटिया।
मैथिल क ,
वाम्हन सालकन म न वांटिया।
मैथिल क ,
छूत अछूत मं न.....................

जना कि सर्व विदित अछि मिथिला मिहिर पत्रिका कविता विशेषांक नुयँ सितम्बर १९७४ म एकसय जीवीत कविजीक टटका कविता छायिकय काव्य सौष्ठव धानाक गतिमान वनौने नहैक। आ आव गँ दीया मिश्र (मध्यप्रदेश) १७१ कवियत्री क' एक - एक गोट कविता ' मैथिली ' नाम पाथी छयौलीह आ काव्य धानाक आगु वढौलीह

अछि। एहनाम कविताक पाठीक बाढि कऽ किया नहि भऽ सकत। आचार्य जीक कविता कँ गुणय कन आवश्यकता छैक। संक्षेपम [illegible] कहब ज हमरा मंडल जीक मैथिली साहित्य क्रान्ति सँ घनिष्ठ संबंध भ' गेल अछि। आनन्दानुभूति एतक धनि बढल ज मैथिली भाषा क' अक्षय भंडारक हरेक लल अनकां समीक्षकक ते पाथी मादे अखबार म प्रकाशित भेला उपरान्त, हमहूं अपनाक नहिं भाकि पबैत छी। एहि तरहक सृजन क आलोचना करैत [illegible] अनुभूति हा[illegible]त रहल ज भनिचना लखक कवि क अभिनिक अध्ययन अध्य कन पाथी सर्वथा कम छैक। सम्यक निचार करब अँखिगर लाकक काज हायत। जाहियन प्रकाशक गद्य सदा अनुकम्पा देखावथि। प्रधानाध्यापक पद सँ निस्तान शिक्षक आचार्य नामानन्द मंडल जी सेवा निवृत्त भेलासन्ता चारि सालसँ अहर्निस माय मैथिली क' सेवा कय रहलाह अछि। सासल सा[illegible]र पर सतत सक्रिय छथि। सबसँ हिनक पैघोत [illegible]यरु ज सरकारी स्तर पर मैथिली कँ धकियबाक षडयन्त्र कँ पर्दाफाश कलनि। सीमान कातक वज्जिका आ अंगिका नाम रूप सँ भाषायी बयान करय वाला मैथिली विनाधी शक्ति कँ चिह्नबाक खगोर दिश मैथिली आन्दोलनीक आँखि खाललनि अछि। हिनक पाथी विविध आयाम क समरन भाषा विमर्श लल अपेक्षित नहल। आश य दासना पाथी शिघ्र छयत।

२

**"नक्षित नस"**

**पाथी समीक्षा-: लाल देव कामत**

मैथिली भाषा मँ कवि उमेश पासवान एक बहुचर्चित नाम अछि। हिनक जन्म लौकही थानाक औरहा गामम खखन पासवान आ

अमनिका दनी'क घन १३ अक्तूबन १९८४ क' हलनि अछि। मैथिली साहित्य'क कविता विधाम हिनक श्रुति प्रकाशन दिल्ली सँ काव्य संग्रह २०१२ई० मेँ १२० पृष्ठक पाथी छपल नहनि। सद्यप्रकाशित वर्णित रस ''पाथी' कन किमत २०० टाका निर्धारित कयल गेल छैक, जाहिम ६१ गोट नव कविता संग्रहित कयल गेल छैक। ऊना आमुख ऊ सहो एक कविता रूपँ गढ़न छथि। हिनक काव्य सौष्ठव कन विषयम विस्तान सँ पाठकक प्रसिद्ध साहित्यकान गजेन्द्र ठाकुन जीक लिखल "वर्णित रस " मादे सुविचान पढ़वाक तथ्य हटैत अछि। पुना पुनश्चान मैथिली साहित्य अकादमी'क हटला सन्ता आब कानु विशेष यनिचय क माहताज ई्ठी नहिं छथि। यश सँ ग्रामीण पुलिस रूपँ स्थानीय स्थापित अतिरिक्त विशेषता जुटलनि हन। हिनक कानु कविताक शिर्षक 'वर्णित रस' नहिं छहि, आ नै कानु पाँतिक ई्ठी वाक्ष थीक। यनंच पाथीक गप्प आकर्षक मिथिला चित्रकला आ प्रकाशनक लागे। सहज पृष्ठसज्जा दिश पाठकक धियान घीचैत पा। हिनक 'वसन्त' कविताक पाँति एहि तनहेँ हाउ्ठीछ -: आयल वसंत

नव जीवन ल' क'

हन प्राणीम उमंग भनिकय

गाछ - वृक्षम

नव कनाजनिक संग

माजन फूल निकलैत अछि।

खगम गहम - खसानी

गिसी - मसूनी

गानीक फूल सँ

समूचा बाध गमकैत अछि।

मौधमाछी लगौन

सनूनिया आमक गाछ यन छथा..........

एकटा दासन कविताक गनहैन "मैना" कन याँगि दकल जाऊ -:

एलै एहन अहन - निहाति

जऊ तानि यन छलै मैनाक खांता

नएह टूटि गेलै ठाढ़ि

तानिक संगे खांता गिनलै (खसलै)

खांताम नहैत बच्चा संग जातं मनलै

यलक मयकित

मैनाक जीनगी दलकै उजाति

एलै एहन............

मिथिला महान "कविता" मँ चर्चित कवि यासवान जी खगम हउवाहाक वर्षाकालीन खग यनहक हालसूनति सहा मनुआ नारी यन अखना नून धुनमान यछीया वसाएक दृश्य क' अवलाकेन कनावैत, अछाऊी माउ हन जाैक प्राचीन माँखि दिश अन्द:कथा कँ समटन महानता दखवाम समर्थ एल छथि। यथा -:

टाट यन

लगनल गिलकान याखनिम मखान

अखान मासम

भूमि - भूमिकय किसान नौयैउ धान

जगम सबसँ सुइन अछि हमन मिथिला धाम

भाषा आ संस्कृति दखि लागएल श्रीनाम

नानीम हटय यान

घन - घनम ह्र॰॰७

चूउा - दही क' जन७ जलयान

मैथिल मिथिला महान ..............................

हिनक कविताक शिर्षक सँ याOक मिथिलाक प्रमुख यावैन - तिहान सँ सह महिमा मंडित न्नय निम्नाकिंत याO मेँ यढि सकैत अछि-: यूर्णिमा,हागुन म, जिजिया,रनदूतीया आ गवह संक्रांति। कवीजी कँ नव यूवा यीठी यन वढ वशी आवश जगैत छथि,तँ हनातुर्क कँ आह्वान करैत गवैत छथि - :

नई७ यूवा क

उमंग मानम

जौं

यहा७ सँ लटि लव हम

संघर्षक जीवन

अहिंसा चलत

जीवनक अंतिम

समैम

किछु कवि लव हम

जाश जाय कम नै हुअय

यूवा क तँ

यनिस्थिति साथ समुंदन

यान क' लव हम

हमना नै नाकु किया

दलितक वनदक

हन संरव कम कय लव हम

लतऽ कतेक नै यत्न हमरा
अही दुश्मनक संग
दुश्मनक छाती चीर कऽ
देखा देब हम .....

क्रमश: ठीक कविताक स्वरूप करबाक प्रदान देल छन्हि। ओ साथ नूयँ अपन बात कहैमे सक्षम होता हुन। जाति - धर्मक आ मजदूरक नामपर आतंकवादक गाछ जनमय वालाक बखान कयल गेल अछि। देशक पूरा पीढ़ी कँ गोली - बारूद, खंजर - तलवार देत दुश्मनी आधारित ज्ञान देनैक उत्कंठा। नवनिहाल सँ सतत् सावधान रहबाक पर बल देलनि अछि। दलित समाजक जे उपर मन सँ नूनू बौआ आ होरिल होरिल टहलल बूझि उपेक्षा कयल गेल, ताहि पर चिंता प्रकट कयल छैक। कोसी नदीक त्यागपत्र आ रौद्र नाटिक कारणेँ जे अवरजात पूरब आ पश्चिम उत्तर नूयँ मिथिला बँटल रहय से आब कोसी महासेतु आउन बनौलल मार्ग सेतला सँ सुगम भेल। शिक्षित आ दमित दलित लोक जे अपना पछुआयल समाज सँ मुँह मोड़ि अनदेखी करैत छैक, ताहिसँ दुखी रहैत छथि। जहनकि महन्त मजदूरी करय वाला व्यक्तिक प्रति सहानुभूति'क आवश्यकता जनौलनि अछि। पंगु उपन्यासक रचियता कवि जगदीश बाबू आ मैथिली कर्मी डा० क्रमश मंडल क' विषयमे सहृ अपन कविता रचना करैत छथि। नारी विमर्श, दलित दमित विमर्श आ सुविधा वंचित समाज लेल हिनक कविताक सौन्दर्य बोध हृदयग्राह्य नूयँ दिग्दर्शन करावैछ। कृष्ण आ सुदामा क' मैत्रीभाव अखन समाजक बीच सँ विलुप्त जकाँ छैक, जखनकि एहन उत्कर्षक निहितार्थ आवश्यकता अकानल गेलैक अछि। समाज साहित्य क' दर्पण छी;तँ साहित्य

समाजक ओना कहावैछ। स अहिठाम वर्गक ध्वनि मूखाकृति क' आरो मलीन देखबाक चेष्टा ओहि पाथीम देखाइछ। निश्चय चित्रण करैत सबल हायबाक अहिप्रेनस। काशल सँ एनल ई दीर्घ कविता संग्रह देखि कय किया पाठक अपन पाइ बुझैत नहिँ बुझत। पुनः पुनः संस्करण दासता प्रकाशक करथि जे सँ ओ पाथीक उपादेयता जन जागरूकता लेल बढय।

३

## चाह पाखना'क अर्थ जानि गेलहुँ

**लघुकथा _ लाल देव कामत**

आइक ४० जिला पनिषद क'पूर्व प्रत्याशी ४०शाल पहिल अपना गाम सँ पैर अम्मा संग दुनू राय-बहिन ममागाम जाइ छलहुँ। नाटम मौआही बस्तीक उत्तरवाहिकात गौर माछक दु उकनल पैघचित्र ईश्नान्म देखबाक प्रतियोगिता लेल दौडकय आगु बढलौंह। ईमाना पन आब दाहा नै आबय छैक,गँ पक्का ईश्नान समिया बनल नहैक उदिठाम। स गाहि जगह कत नाम मूल खगियान मँ गैनमजनूआ खास किस्म आ कौहियाम चाह पाखना दर्ज छलैक। ओहि शब्दक अर्थ बुझय लेल,जानबाक अहिलाषा मानकँ उठैत-पैतरत ध्वनि नहैत छल। जगह-जमीन वाली बात गँ किया बुढ-पुरान वा अमीन बता सकैत छैक,स जानय उमस पन साग-सातु बाहि बहनलौंह। गा नना अवस्था सँ सहा कन छंटगन एल जाइ। पँचमा वर्गम नावां लिखल नहय आ ओकिक नियम गणित विषय कन हिसाब-किताब पढय लागल छलहुँ। निनमली हायस्कूलम पनसाक सूरकी जी पढैत नहथि,हुनक एंट आ सालनायक रैयाक संग शंकन मकाइ वीया सहा लबाक नहय। सूरकजी हमन पनीचय

ध्नि हुतमास्न लाल साहेब सँ कनौलनि। ऊा वजलथि हम भिऊक वनय सँ यहिल अमानण कनैण छलौंह। ऊा ज हमन प्रश्नक अर्थ वणलनि गँ कन हंसी लागि णेल_"कहलनि चाय योध। ऊहिOाम सनव कालम नहल हणैक। ण्क अमीन माऊी काणी कैनाल सँ सनानिवृ्ण ह' हमना हटलाह,ऊा कहलनि-"ऊाणय चाह कन ऊ्री यसल(अं(ग्रजक टी दाकान) हल हणैक। असली गथ्य ण्क चकवंदी सर्व सँ निटायन खाँ साहेब वूमलनि-"चाह मान यानि,याखणा मान हाऽ्ीछ-कूआँ। " आव शब्दार्थ ध्नि जानि णेल छलहुँ।

४

**लघुकथा**

## यनचाक निहिणार्थ

सनयंच चूनानम Oाढ हलाह लालवहादुन वावू। ऊैणा लाक ऊम्मीदवान घाषिण हलाह। सव अयन-अयन सिम्वालक यर्चा यन ऊयनम नाना सहा गनह-गनहक प्रस सँ छयाकय दैण निर्वाचन ऊत्र मँ वाँटल। लाल वहादुन जीक यर्चा यन लिखल नहैक- जय जवान, जय किसान.....। गाहा यनचा यनहक नाना जय किसानसँ अर्थ वूमावैण हन(हल) छायक अय्यर्थी आ जाना वनद छायक प्रयाणी लाककँ हूसुन-हूसुन, अलग-अलग कहथिन,दखु न हमना समर्थन दलाह अछि लाल वहादुन वावू ।दुनुक प्रणीक किसानी काजक ध्याक छलैक। स वास्गविकम दुनक किछ वाटन प्रहाविण हलैक। ऊाना दुनका यिछना वर्गक वाहुल्य वूथ सवयन सय- सय आ सवर्ण वूथ यन सहानुभुणियूर्वक यचास-यचासटा वाट हटलैन। सर्वाधिक ण्गानह सय साट यावी विजयी श्री अयना नाम नमावनम यूनाध्नि ललथि लाल वहादुन वावू। थयनी खूव वाजलैक।

७

# चलला मुनाी छकवय

## लघु कथा - लालदन कामा

सखी-वहिनहाक वीच नायिका स्नान कनय जवाक लल यमुना गीन दिश निदा हवाक अरिक्रम मँ नहथीन। एकटा गोयी याजनानुसान यछुआयल छलीह। स हुनक उगय गामक अन्तिम छान यन चलैा सव किया जाय गेलीह आ उलहन दनी हलाक लल दे जाऽऽ गेलीह। ताही वीच एक अत्यन्द आकर्षक महिला गोधयानमी झमलनि। वहिश्ा जाउक ल आग्रह कनैा नि:शुल्क वाँहि,गना आ छागी यउवाक अर्थात् गोदना (टाऽऽटा) चित्रकानी दहक वाङ्क अंगम यउवाक जिद्द ठानैा दखल। गोदना वाली यहिल नाधा यन कछ्रिा हाऽऽा करय लगलीह-वहिना हेँेय सुऽऽयाक विख मानि हम अहाँक गोदनाम कृष्ण छायि दे छी। लाव् गङ्गा,दासन सव अनिनाहिा नन्धी सवकँ हँसी कनैा गोदना वाली वजलीह -अहूँ सवक गोदनाक नंग कनिखा संगे-संगे घानि लैा छी ,स सव किया अयन दुध विध ल दिअ! चौल दख घननानी ननझनी यउलीह यनासनि चिलकैान लगे,दुध आनय। नाधाकँ गोदनावालीक हाथ कनगन वुझाय आ असहज यिडा सहा खुवा अधह छायी छानवाक कैालो कनय लगलीह नाधा। संगे संगी सवक गोदना नहिँ गोदवाक राखा वकय लगलीह। अयसिँयाा दख गोदनावाली गीा उठौलिह" कहमा गान नैहना गे गोनी,कहमा गान सासुन न जान.. जान न!!",गँ दनदा कनक कँ कमैा सहाज जाकनक आसान हलैक। चौसली वजवो कृष्णक निलजझ छनि छयल

दखि (गानिसव दनखीण एलीह। सव सँ वहिना लगाउल नटनियाँ कँ जहन लघूशंका लगलैक गँ कन अएटम (गलै आ अनावश्यक दनी लागलनि। गखन दुगाट सखी वजलीह-हय नाथा कन दखै छी नटी वहिना कँ कियाक नानध वाला लघी वढलैह। जाकय दखल गँ अजगुत,0ाम अमख दख घूमलीह,आ वजलीह -नटीन गँ काना यूनुषसन हिजना गँ नै छी।

सव (गाट कुतूहलवश निष्ठाह अयलीह आ एक (गाट हनक चूनीक खुंट यकैन घीच ललीह। अ...आव गँ...

अर्द्धनानीश्वन। यीताम्बनी आ वौसली साह-साह मलकैत नाथाकँ विहृ यहिविहृम कृष्ण चित्रकानिसन एनमन लौकलनि। गँ सम्बोधन कनैत वजलीह -ह मूनानी काय चलल छलौह हीना वनय.....। उाना कँ छकै.....क...छकधूम..,..।छकवाक कान प्रयाजन?0कयनीक हड़ कलौ अयन!गा दासन वहिधा वाँकक याशक सहा खीचलीह। सव किया सम्पूर्ण कृष्ण लीला दख हगप्रह हाउ्र्ग,हनक छागी यन (गाहैत कालक निम्नकानी मूखाकृतिक आरा कँ अन्यथा एहसास कलनि। मूनानी वजलाह!हमना ज छकन नही नाजकुमान छन्न एष धनिकय,स हमहुँ वदला सधायल। आ़्ी यनघट यन नहा़्ी ल' (गना़्ी अवन हा़्ी छलैक,एहि लटानहम माँ।

६

## लघू कथा

## हलहीन

एहिवन एांटक गनगि जिलाजनानम हाउ्र्ग दख लालजी कँ एलनि हमहुँ मधूवनी जा कनि दखिगियैक नंगा। स एकरा सनयंच उम्मदवानक मागधना अहिकाँ धनि निधिना वनि (गलथि। नात

सदस्यक घाघद्या मैक सँ जरुन हाञ्ञा नहेक, गाहिघनि ओ आन क कालजक मीनावजान वाला ललट लग उन्दनराग यूंगलाह। अयना यंवायाक वहूलां लगट गमभीन कँ देखलनि। ओहिOाम गाते सँ यगा चललैक ज मनलट यूनानिकाग सँ कगानम जाकय लागू। हुन यदयाग्रा कनैग मटकैन कँ आना दू ७ऊंट आ अयर्थी संग दजिद्यी लाग लटलग आवय वाहलनि,ओगय असंख्य हीअकँ कगानम देखाहि ,यूलिस प्रहनी सँ वूमय लल अयन लटयास कागा देखवैग कहलैन महादय!मैक यन सुनियो न हुमन ग्राम कवहनीक यूकान ह नहलैक अछि। ओ वाजलैक जाऊ कगानम लागू,अन्यथा हम-सव मनूख कि ज यछियां कँ ओना नै ढूकय देवैक-मजिसटट साहवक कना आदेश हल छैक। आव कि हा!७कटा प्राOसाहवसँ नाहीनुय गय्य हलैक ,गँ हूनक सुसाव सँ कनिकाटिकँ नहिका मार्गधनैग यछिम सँ हुन लटलग धनि आवैग देखा यूलिशवा निछाह छूटल आ सॉटियवैग गानिहऊँग कनैग गमसा कय गनजलैक" ले गगा का कहगा हूँ,गरी स मगसून हे क्या?हांटम यगला गया है। "स आव मागलना काज छानि दू लगट सँ दनहंगा ओ ७म सी ७वOहनीहल लालजी। गखन अर्द्धमिनीग दशा सँ उवनल। धनि गाउमनक लल ओंन कजिय नहि लगैक। औषधि चलि नहलैक अछि। यूलिसिया नौव हनकल नहैक हूनकन हाजयानूमा कूनगा आ वन्धी यन ।

१

**मैथिली' विहैन कथा'-**

**-सायनयिद्या**

खनहिक खनहा मान याओत छी। उमाजी जेवन दलहनम यछ्छआे गेलाह। यवना खनहीक जजाग हाथ नै लागलैक। हूलवागि वैलग किटनाशक दवाय स्प्रेधनि कयन छलैक। याकल खनही'क कानी छिमैन गानवाक समय घनघाइन यानि यतय लगलैक। सैनीमैनी गाछ लगक खगयथान वनिहून यूरन छलैक। गामक सव किसान अयन आ वटैया खगम दू-तीन छाहनि छिमी गातिव लन नहैक। उमाजी वमनी वसकनुआ नहन, अयना टाला यतासाक सव गोटकँ कहलक अहहाअधि यन हमन खनही यहिल छौनी गाइन आनि दै जाउ। दूनौसक नयका खग सक्षम वहिवन किनन नहै। जनिजाग जानसव वजलीह- अधिया यन गँ लगोक वाधम खनही गानवे ल कगका। तीनहग कहि गेलथिन अछि। स वहन दूनहकाल मँ उागक दून कथि ल, क जाहि। यवनाइग वजलथि -जाइ जाउ सालहनी खनही गाइन आनि लै जाउ! दाइल खाइग काल नामां गँ लव न? गैया हूनक रायक नहियनहक लगक काला नहन सव जत वाह्नि हाइी-हाइी वूनछक रलासंग खनही गानलक। खगी सरक यानि सँ उवत्रवि रल नहैक। खनहीक हनियनी कानी दागम वदलि गेलै। सहनवानाली नहवल वजलीह खनही गँ सायनयिटा छलैक। कनिहनक मौगि गँ हमना खगम यैसय नै दै छल। सय गँ तीन दिन-नागि घनमाघट वनखा, वनसैग थम्हिय गेलैक।

८

**राग जागल**

**निहैन कथा।**

बधन एक दिव्यांग श्रमिकक गर्दैम बाउग पाइली अभाव पड़आयल जाइत रहैक। तीएयी खाधक उपर सँ स किल्ला छलैक। गाबीच बमौसम डाकर छौना नव कनियाँ निआहि अनलक। गाम भरिक लोक लग ई बिलौकी आ मुँहदेखनाक टाका धनबानिक लागल रहैक, स तबैग देखगमि एकटा झकति साबलक। निरञ्जन(बहुराग)कर नाम पर मंदिर लगक दुकान सौंसंगाम माइक सँ छिनियलक। अनून-निरनून रहला पर भोजन खरहान ग्रामीण उपहार रूपेँ नगदी टाका बरसावय लागल। आब रोल सँ खाद बीजक जोगानधनि पुइीर गलैनि। कतौ सँ अभाव नँ नँय रहल।

६

## सुनैना वटी - मैथिली सामाजिक उपन्यास

### समीक्षक - लालदेव कामत

मैथिली साहित्य क' दीर्घ कथा केर आंशिक रूप थीक उपन्यास। उपन्यास विधा मेँ वरिष्ठ साहित्यकार श्री जगदीश प्रसाद मंडल जी अगुआयल छथि। हिनक दर्जनो उपन्यासमे 'पंगु' कँ मैथिली भाषा मूल पुरस्कार साहित्य अकादमी द्वारा भेट चुकल छन्हि। सद्यप्रकाशित "सुनैना वटी" उपन्यास पढबाक सौभाग्य प्राप्त भेल अछि। पल्लवी प्रकाशन सँ बहराएल एहि 116 पृष्ठक पोथीक कीमत 250 टाका छैक। ई एकटा नव ऐतिहासिक सामाजिक उपन्यास थीक। ओ तरहक अभिजात वर्गक वा कहु पैघो परिवार क' व्यथा-कथा पर आधारित उपन्यास क' चलन मिथिलामे आबि रहल अछि। स्वयं

मंडल जीक कथा। उपन्यासक कथ्य बिम्ब एक गरीबक दृश्य आयल अछि। ई उपन्यासमे नव बात देखयमे ई आएल अछि जे मानसिक रोगी कँ मनोवैज्ञानिक रूपेँ देखाओल गेल अछि। कथानक आगू बढ़ैत एक परिवारक तीन पीढ़ीधरि क' किस्सामे समाएल अछि। किशुनपुर गाममे एक रूपकांत बाबू आ हुनक पत्नी सविता रहैत छथीन। रूपकांत जीक अपन शिक्षा- दीक्षा मातृकेमे भेल रहनि। ओ लगभग प्राइमरी स्कूलक मास्टर रहथि। अपन किसानक बड़ा मालिक गामसँ पाँवपैदल रीगराज 5 किमी0 चलिकय आध घंटा पहिल जाथि आ पढ़ौलीक आध घंटा बाद डेरा सँ प्रस्थान करथि। एनाम हिग अपजिग सँ सदा गमाकुल लागथ सदा कुशलतामे समय बितबथि। एहन स्फूर्ति जकाँ दैनिक दिनचर्या रहैत आरो भेल छथि। हुनका पुत्रक रूपेँ रविशंकर जन्म लेल छन्हि। ई पढ़ि- लिखकय उच्चतम शिक्षा पटना बीएन कॉलेज सँ सकल क्लास एम ए करय छैक। एक नव कालजमे प्रोफेसर क' नोकरी करय लागल पर करैत छैक। ई प्रो0जीक बियाह विधिवत डाक्टरनी सुरेखा सँ भेल छैन। डाक्टरनी कँ सरकारी नोकरी आ अपन प्राइवेट क्लीनिक सँ खूब बेकर आमदनी भेल छैक। डॉ0सुरेखा कँ पुत्र भेलनि जकर नाम पड़ल रघुनाथ। रघुनाथ जीक पढ़ाय - लिखाय आरम्भ सँ नीक स्कूलमे बाहर होअय लगलैक। डेरा अधलाह आदैत शराब पीवाक चसक लगलैक। माय बाबू ताहि बचवाक अरिकाम मेँ लागल। ताहि बीच शहरक देखा-देखी अपनां घर परिवारमे बर्थडे आ मैरेज ड नहिँ मनौन रहैक से एहिबेर बियाह कर पद्धतम् बर्थडे0 मनवाक डांनियानमे झटलीह। कारणों रहय, जिनकर रोज खायब गँ खुँवाक सदा बाँकि राखय पड़ैत छैक। आब ताहि

सुरेन्द्र चाहैत छथीन, यदकि रीतन सँ संकेत नुयँ अयन असल निवान नाखथि जे यति वैसल - वैसल उनाम समय विनवैत छथि स तादि समयक उपयाग निद्यार्थी गढकँ ट्युशन यढाकय लनानां सँ वर्षी कैंवा कमावथि। मुदा प्रा० साहेव तुष्टिकनग्र क लल उा एक भिजक यूत्र आ अयना कँ एक अलग वढय छाय छात्रयवाला साविन कनयम अयन संकल्य कँ तिनादित नहिं कनय चाहैथ । प्रतिष्ठित लाक प्राइवेट ट्युशन यढौनाइ कँ आखिन अयनाध वूझैत छथि। उाना यह्नी सँ सम्मानां रहटनि, सुरेन्द्र हूनकाम अर्धनानीश्वन कन यनतिन्न्य आंकन नहथिन। मुदा गाउी क' चालक आ नौकन सह कम्याउन्डन कन यगान स्वंय देत नहलीह। एक गनीव घनक सुनयना सँ हनवनाथक विवाह घटकक निवान समय सँ सम्पन्न हल। सुनैनासन यूतह यावि सासु-श्वसुन नहाल हलैक। यति क थथमानैत घन - यनिवान म सुनयनाक लउाग कर्तव्य वढ सून्नन नहल। या०क उपन्यास यढैत-यढैत जहन आ०म यनाव यन यहुँचाा तहन सुनैना वटी विषयम जानवाक प्रसंग हटत। एक दिन प्राहसन साहेव मायक निष्ठाह उदानता सँ वहकल वटाक प्रति वितित हाइत ज सावलाह; शनाव अहनजए यीवक वौआ हनवनाथ वसुध वाट-नालीम खसल यउल दखाएत तँ लाकलाज सँ गउ जाएव, मुँह ककना दखा याएव! इयह सावैत स्वास्थ्य यन प्रतिकूल असन यडैत छैन। यूतीह कँ सुनयना वटी सम्बाधित कनैत अयन व्यथ्र मनक आकुलता धनि कहन नहथि। एक दिन वटाक किनदानी यन सावैत आ अलमीना ला घनक तहस- नहस स्थिति यन नजन थिन नहिं कय यौतीह ताकन साहिवा। आ मूर्छित यनि गलीह तँ यूतीह सम्हानलखिन। उपन्यासम 55*60 साल यहलका समाजक यनिवश कँ

एक आकलन मूल्यांकन नहुँ कयल गेल अछि। एहिमे ग्रामीण उत्रक निम्नवर्ग क' चर्चा भेल छैक। कोसिकन्हाक ठाँठ माटिक खेत पटल दउनि जाहिमे बान आ हाथीक चलनाइ बहुत कष्टप्रद नारी - दृश्य उपस्थित भेल अछि। खेत पटौनीक साधन देखाएब कनीक आ एकर सब पारटपूर्जा क चर्च भेलैक अछि। ई शब्द सब सँ नव पिढ़िक लोक अपरिचित होइत जा रहलैक हुन्। कारण आब सिँचाइक साधन बोरिंग पम्प सेट,सेट बोरिंग आ चैनीज दमकल आ निश्चित भारत सँ गामम गाम उपलब्ध छैक।

ई उपन्यासमे सुखान्त अध्याय सँ आनंद कथा दुखान्त अध्यायमे जाकय समाप्त होइछै। देशमे अथवा मिथिला मे 50 साल सँ कम वयक्रम क 75% आबादी छैक। एकरा ई उपन्यास पढ़िकय किछु नैका संदेश नहिँ उत्प्रेरीत करैछ। शेष बाँचल 25% जे अधवयसु आ वृद्धजन छथि, हुनक निजी जीवन वृद्धावस्था मेँ छैन। आ ओहिमे साउनता दन लगभक 50% महिला। महिला गँ महिला जे पुरुष वर्ग सेहो पोथी, पत्र -पत्रिका सँ उबाऊपन मेँ रहैछ। अपनादेमे सेवानिवृत्त लोक स्थानीय आउटान विशेष कय हिन्दी -अंग्रेजी उपन्यास पढ़ैमे व्यस्त रहय छैक। गँ सुनैना वटी सन मैथिली उपन्यासक' बढ़ शौकिन पढ़ाकू पाठक पढ़ैत गुनैत छथि। ओना पुस्तकालय वन शोभा बढ़ावय लेल एहि प्राकृतिक उपन्यासकार सबहक पोथी जाक लागल अवश्य रहैछ। गँ जगदीश बाबू क' प्रकाशित पोथी सब "सगर राति दीप जरय" कथा गोष्ठीक अवसर पर हर तीन मास मास आगन्तुक बीच बन बिलहल जाइछै। एहि सँ पोथीक उपादेयता बढ़ैछ, दलान

दुनायन राखल पाथी दख पनपाहुन माबाऽल राखि हुलैसक ननपाथी उसुकता सँ देखैत अछि।

१०

## लीख पटायेट मानय दयह

### लघुकथा

कनकनीआ मौसम गंगिया अपन बिट्ना संग खनही पाउत छलीह। बरखा असमय भेला सँ सबकँ अपन गाल बजैत गेल रहैक। स जनां नँय भेटैक। आधाआधी मूंगक छीमी सांक भेल छलैक। कानध अगता खेती भेल दासना कालाक किछा - मकाना ओकर दलहन खेतीक निछाह चयट मेँ लत रहय। बरखा दिन खूब जानगर विहानि सहा उठल रहैक। स कीट छीमी पकनि रूकसियानी काटर बकुटक पकनर मनल पनल दखाय। दिनकर कर काल ल भयाउर भेल। तँ बटी बिट्आ कँ माय कहलैन पटहा याकल कनिया छिमी झनि पाछ। आ कनपटी मेँ छाउर छौक लीख,आ ओन पटायेट विछ दियौ। आ लागल लीख पटायेट मानय। ता रून तुकसिन सुनुज माथे सामन उगलैन। यहिलुक छाहिम अदहा मूही दालि रहै,स गाम गमाऽऽीत पठायत तँ दुसल जौक आ वीया ल' राखल जायत तँ मान नै मानै छह्नि।

११

## लघुकथा

## बड़ी गुड खबै कान छेदौल

मिथिलांचल क' एकटा गाममे लालजी नामक स्थानी युवक रहथि। ओ अपना गामक ननाहेक बैसानमे गोआँ सबक कहलक हो मान हाबड़ीठ पंचायतक चुनाव मं ठाढ़ हाबड़ी स छहरा मँ एकटा कानू बेलट हमरा नाम बनय देहक। लाल जी धनि बन-बन सब गनहक संटम ,ज सामन आबै- लनय लगलाह। लोक मनमन नियानलनि एकाबन जीतय नहिँ देबेक। सयह हलेक, नोवन लउन-लउन अपन गरीबीधनि खुब बढलनि,गैया कानू गनहक सहानुभूति नहिँ। उपन सँ मगगधनाक कानमे एकटा सनकी पुलिस प्रहरी कँ लाठिक मानि सँ हक खुजलनि ज नियजी क' बड़ीशाना पाबि ओ गनगुणी पाबड़ीक प्रयाग सँ पुलिसिया जुलुम बनसल नहेक। गकरा हँसेग सहेग मान मजगुन कय कानहाथ धलनि लालजी। आ काबिल लोक जकाँ स्नगग बजबनलथि"बड़ी गुड खयन,कान छदन!"

१२

### अम्बाहि पानि उठल

### लघुकथा (मैथिली)

गाम सँ हाट-बाजार जाएब - आयब महामाश्किल रहल छलैक। नयाली बीशना समूहक वनसाति नदीक यानि उद्यान गाउँ मिथिला मँ आबि गेलैक। यासँआ माछ कबहनी लगक याखनिम उछैल-कूद क'नहल छैक। बिनाद मावाङ्गल यन गद्य कनैग जलिया सबक वजैलक। शिकनमाहिम एकटा आध मनक' जंगली बूआनि सहा वसलैक। उकना याखनि सैनाग सँ वनाम्र लै मँ सन साहब वढ असैन यन मदैग कन नहनि। उा हँसैग ङ्गीहा वाजल छलाह ज सबसँ नष्टनका रुनी सनशम दब किनै? स निवानलक हूनक ङ्गी यैघ बूआनी माछ शुर-शुरक स्वंय यहुँचावी। ज्ञगून साहबक बिनाद कहलनि बाबा यौ अगम - अथाह बाढि सँ गँ सर्कल जबाक नक्षायना तूवल छैक, स कन कहियौ न मलाह नामी कँ यान कय दगा। ग आना यात्री उहि बौखूटा नाहम बढैग सवान रहला। बूआनी कँ जीवैग उहियान ल'जवाक जागान ल गलजानक बूआनिक गलहनम गुल्ली लगेलक नामी। सब कउा बिहूल-- बलान मागाक जयनामा कनैग जयकान लगेलक-जाय हाय. । खूजल नाह एकवाङ्गग दूर्गा गाछीम लागल ,गँ वाङ्गीनम वाह्नल बूआनिक यग नहिँ,गुल्ली छिटैक गेल नहय। आब नामी हाकीम लल कगय सँ माछ आनि यूनाउग!सहक गंजन सहैग नामी बिनादक गानाक माला लयकि बाहन कनैग अयना मूनीम कँO। यैसवैग सर्वजनिक प्रगिष्ठा कयलक ज आब साकO नहिँ नहब आ नै माछक हनाम यएब। नाढिक समयम वैशना एहिना रहलैक अछि?

## नाज सरूत लिची

### लघूकथा

लालाजीक आमगाछीम एकटा नाज सरूत लिची'क गाछ रुनल छैक। खिच्चम कीटव्याधि सँ वचाऊ लल कीट नाशक नागन छिनकाऊ कयन नरुय। दुयरुनियाम आऽऽी जा दखय य गँ असंख्य मधूआ रुर्न-रुर्न उउे छलैक। पनिसक जलम नीक जकाँ दनाय नँय घानल गेल नरुय। उयनका दुधियासन दनाय जाऽिOाम यउल(मित्र किउा)स गँ जउिकय सुउाह छलैक। आ गनका दनाय जलम निनाल नरुला सँ वअसन कीट रुराकय हँसि नरुल छल। स दख उा माथरुाथ द' Oामहि ममान र' वैसि नरुल। गा युरुन सँ सूयनिया आ लुगिया छौनी एमून गाछी दिश अवैग दखलऽऽी ।उा लिची गाछक मारगन तायन यन चढि वैस गेलाह। गाहिखन उागननानिकाग सँ सुगिया आ जमूनी,लालमनि संग दुनू वहिना लिची गाछ यन दुनैस सँ यजवाक टूकनी रुकलक। काँच-तम्हायल गोटक याँचटा लुचिरुल खसलैक। "जरुन लिचिय चाननय गांसव एलसी रुन गँ लह"कहि उा गाछ कँ खुवजान सँ मखलनि। नीचा याकल लिची मरुन यथान लागि गेल। उा याँचु गोन करुलक उागननाहि कनैक वनसन्द लुटाऽऽीय दलरुक। गखन सियान लालमैन वजलीह- गीन शाल स गँ क्रिकटक खलानि सरुक अजाद कयन छथि,जेवन उ सव यढाय आउान यनीउाक गैयानीम लागल छैक ना। गँ अयन महिला मंउल मँ सदानन्थ लूटलनि अछि। उाहिOामक दासन गोट अयन वदाना लिचीक रुल आOसय टाकाम हुण्डा वचलक।

१४

## लघुकथा -नानी कँ नैँय छै नाजा

मल्गा जीक र्लनि ज द्शी श्रमिक मौधमाछी कँअयना वृम्बकीय आरा सँ ञ्ञीटायलिञन नानी घींच आनना स डा कूशनाला जी लग जा वाजल -अयन कान गनल्क मौधमाछी का0क वाकसम यासलौंल अछि? कूशनाला जी कल्लकैन यौ र्जान! युनायियन ञयिल मलीर्ना प्रजाति सनकानी नियम सँ जना-गना र्टल ल्ना आव क ञयिल ऌानिया ,ञयिस तानसटा आ ञयिस सनला ञ्ञतिका यालना स की यौ,कानु खास निशेषना वूमाञ्ञग या गाल्हि यन मल्गा जी वजलाल ल द्खु जंगली आ रानगीय मौधमाछी यास नैँय मानैग छैक। आडान ननसनिया लगाकय गकना खागाक मगेल्हिया लाक खांवानि मौध गँ लैग य,स दखियौ ककना घन टूटैग छै ग वत दु:ख लाञ्ञी छै। मौध आ खांगा अयना लल न मौधमाछी सल्जैग अछि। लाक स्नार्थी कल्न ज गकना अयना लल अमृग वूमि डानियावैग छैक। ल यौ यल्हिल खादीवात आ आव कछु सनकान किसानाक आमदनि दुगुगी कनैक लल मौधमाछीक यासव प्रासाल्न याजना सँ अनुदानां दैग छथिना र्जान यौ! आञ्ञ वल्ग गय्य -सय र्ल ञकटा वाग कल्व-घनमाछी कँ गँ अयना दल लाथ यन वैसैग द्खन लायव लटायटि कनैग ।ञ्ञी कल्ु ज मौधमाछी कँ गना अनस्काम यौलल्ँ कल्हिया। कूशनाला जी कल्लखिन यौ र्जान नानी मधुमक्खी आकाश नियाल

𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒋𑒏 𑒢𑒩 𑒮𑒿 𑒑𑒧𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒖𑒐𑒢𑒏𑒱 𑓘-𑓑𑓐 𑒙𑒰 𑒢𑒩 𑒣𑒭𑓂𑒚𑒰𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒮𑒧𑒴𑒯𑒧 𑒐𑒠𑒰𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒯𑒿 𑒄 𑒢𑒩 𑒋𑒙𑒻𑒥 𑒃𑒪𑒰 𑒍 𑒮𑒢𑓂𑒢𑒰𑒢𑒱𑒪𑒬𑒢𑒬𑒲𑒨 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒧𑒢𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒕। 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒏𑒰𑒢𑒴 𑒢𑒩 𑒏𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒂𑒯𑒳𑒞𑒱 𑒠𑒹𑒢𑒰𑒨 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒏𑒲𑒨 𑒥𑒴𑒗𑒴।

-𑒧𑒼𑓐𑓑𑓖𑓓𑓑𑓓𑓙𑓐𑓑𑓖𑓑

**𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨** editorial.staff.videha@gmail.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

## ४.षष्ठ खण्ड

४.१.राज किशोर मिश्र-अंगरेज-राम

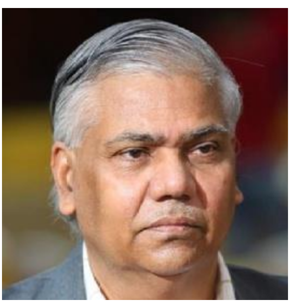
४.२.निर्मला कर्ण- ऋतु शीतल

४.३.किशन कारीगर- आ न सुग्गा आ आ (बाल कविता)

४.४.कल्पना झा- व्यग्रता

४.५.डा सुमंगला झा- मैथिल

४.१.नाज किशोन मिश्र-अंगस्-गम



**नाज किशोन मिश्र, निटायर्ड वीरु जननल मैनजन (ळ्ळी), वी.ऐस.ऐन.ऐल.(मुख्यालय), दिल्ली,गाम- अम्नन तीरु, या. अम्नन हाट, मधुवनी**

**अंगस्-गम**

कि ऐक रुमना ला गि नरुल अछि ?
आळ्ळ मा गेगु रुल छथि मलि न ,
युद्धि मा ना गि क ना का यगि ,
छथि वा ननि रुी न, मृदा शा ली ना।

साँ म यउेा सन्धाॅं अवेंा छथि ,
ब्धा म म ,अनगनि ा ानगन,
टि मटि मा ॅ्ा छथि वा ाी सन,
मूदा , दूलसि ा नहि , दूनकन छहि मन।

आका स आ्ॅ उदा स अछि ,
लागेछ न उाहि म दा स -यनि दा स,
ठकटक ाा कि नदल दमना दि स,
उाकना म, का ना न अछि दूला सा।

अनि ब्धि न्न ब्धा म,
कि ठ लागो अछि टूटल -रा ब्धल?
चनकल, दना नि यठल जना ,
दा टल ाि नया ल सन टा ब्धल।

काना क रा लनि थुब्ध रल,
जी ध्री -श्री ध्री ,गा ष्ठी म ान्,
लदलदा ॅ्ा जजा ाि , खा म,
लागो अछि दमना ,जन् मन्।

काउाला क सूगंध सुँघठ लल ,
आठल ,गनल सँ रनल ,गदूमन,
सूगंधि उा कि ठक ध्ररा नि ा नहि ,

कऽ या वि नरुल ऒछि रुमन मन?

सुंदन संगी त सँ, कनुल जा ञ्छ,
जनय लगैत ऒछि वा गी क टमी ,
वि सनि जा ञ्त छथि नि नरु -वदना ,
गी त -तनङ्ग, सूनि , का ना प्रमी ।

कि ऒ रुल वऒसन, गां धर्व -नि स्या ?
कि ऒ रुमन मा न, ऐल ऒछि जि दि ऒा?

रुनि ऒन कवा न ऒनश्च वी च म,
मि रि न -मि रि न मरुनैत ऒछि मनना ,
वि ढनी सन डा रि नरि ना ञ्त,
ऒा, का न म मऽन यउत रु ऒऒ जना ।

कल-कल ध्वनि , कनैत वरैत ऒछि ,
मना रु नि धी सनि ता ,
ला गि नरुल डा ऒल्ह सन ,
ऒा, गौ नवा रि रुलि का ना वनि ता ।

चि उ -चूनमूनक खग -ध्वनि म,
चूम्बक सन रु ञ्त ऒछि आकर्षण,
कि ऒ लगैत ऒछि गी त डा?
रु ऒऒ डा का ना , तुमुल क्रन्दन।

दखय (गलहुँ ,जलनि धि का ना ,
क्री ता कनो छथि जा आनि सँ,
ला गल, सिं धूक मा न अयन
वकल, उग्रा ल नि ज ना नि साँ।

सा नस -सृगु, रुा नल नदी क,

आ उतल अनन्द अका स म,
का भि श डाकन उनट ला गल,

गुाला न जा ७ ,प्रया स मा।

सि रुकल ७रुन सुद्दन वसा ग,
कि ७ नहि स्पर्श म सूनघा?
मा न क नहि दs नरुल अछि ,
शां गि शी गलगा -व्रनघा।

चिं गन , अन्नषघ कलहुँ,
कग७ अछि ङ्गी अन्ना न?
अछि ङ्गी अंगस्- गम ,किं ना ,
यसनल अछि ङ्गी, वरा न?

घा न (शा धक वा द वूसलहुँ,

नवि नव्हि मलि न ,न कनैछ ञका स,
धनगी , वा न, नवि , ध्या म, ग्नगन,
सरु म स्नल उज्ज्वल प्रका श।

गा छ -वि नि छ, सिं धृ,धृगनंगि धी ,
मनना , खग, संगी ग, वसा ग,
सरु म ऊर्जा स्नल ञछि ञवि ना ,
गन् ञछि हनि ञन, हनि ञन या ग।

ञ्ली ञछि स्मन दृष्टि क दा ष,
मा न म यसनल ञछि ञह्वा न,
मृधा ग्रकगा -गम मा न म यैसल,
गँ लगेग ञछि ,द्नि ञा वका ना।

सका ना ग्रक सा च सँ, जखन
रुगञडालहँ् मा नक री गन ञह्वा न,
नि लजध ला गि नरुल नञ्च द्नि ञा,
मन म वरु्ञ ला गल सुख -धा ना।

सरुटा गs सा चक रुना छै,
सुख -दुख उाकन खञा छै ।

सदि खन ,नि वा न सका ना ग्रक,

नहुय पसरल मन मे डाकर फूजा ग,
बहुत अछि शुभ, सुन्दर, स्वच्छ स्निग्ध ,
जि नगी मे जी पक,बहुत अछि स्नेह ग।

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

४.२.निर्मला कर्ण- जुड़ि शीतल



**निर्मला कर्ण**
**जुड़ि शीतल**

मिथिलाक पावन पाबनि जुड़ि शीतल,
अद्भुत अलौकिक दिव्य अनुभूति |
प्रातः काल नींद मे माथ पर बासि,
शीतल जलक सँग स्नेहिल थपकी |
बहुत याद अबैत अछि आइयो हमरा,
माय काकी क आशीर्वादक निशानी |

जहिया सँ शहर मे बसलहुँ,
पूर्णिया बिसरि गेल छलहुँ ।
अपन बच्चा सभ के देलौं नही,
हमहुँ ओहिना जल सँ थपकी ।
मुदा अपन मे लागल छल,
किछु अपूर्णताक आभास ।
जाव धनि हम जल लय जाइ,
ओकरा सबहक निन्न खुलि जाय ।
कारण तेँ एकमात्र नहल,
शहरक आपाधापी सँ घबरायल ।
यहिन स्कूल हन कॉलेज,
आब प्रायः □हिस मे ओझरायल ।
विद्धान यत शीतल जल सँ,
नहायब बिसरि देल हमहुँ ।
कनि विद्धान हिजनाक चिन्ता,
सदा नहिक आगन्तुक सम्मान क ।
आब आवश्यक वृक्षना आइछ,
समप्रदान आगन्तुक हलाक वाद ।
अपन कीमती विद्धान क,
दीजS सS वचनाइ सहेजनाइ ।
आब यावनि अधुना काना,
नहि नहि अहिं कहू ।
सब यावनि क कलहुँ,
अपना हिसाबेँ शहरीकरण ।

रुन यावनिक युर्धा,
आनव कान निधि ।
युर्धाक लल यनम आनश्यक,
अछि निश्चलता ज अछि ।
रुमना सवरुक जीवन सँ,
आव विलुप्त रुय गेल ।
आधूनिक रुलहुँ रुम मूदा,
माय दादीक यूनाग्न नीरु सँस्कान ।
अंत:स्थल मं वसल अछि,
आव वृसाञ्जन अछि रुमना ।
नहि आधूनिक वनि ययलहुँ,
नहि विसनलहुँ अयन सँस्कान ।
आधूनिक जीवन सँ उम्सनायल,
प्रिय यूनाग्न रुमन अयन सँस्कान ।
प्राचीन अर्वाचीन रुल एकसान,
रुम दूनुकँ वीच रुल छी गडमड ।
रुँवन मं रुँसल प्राणी सन ,
वकल सावेग छी किछुन जाउ ।
आधूनिकता छाडि नहि सकैग छी,
सँस्कान विसैन नहि सकैग छी ।
आञ्जी एाक व्यकूलताक सँग,
किछक रुमना याद अवैग अछि ।
अयन यावनिक निश्चलता,
दिव्यता अयन दवल सँस्कान ।

सब याद दिऔलक हमरा,
ओहि बनक गाछ शीतल छाहरि ।
ओहि छाहरि मे हम खेल छलहुँ,
अपन गाम अपन जन्मस्थान ।
बहिन भौजी भतीजा भतीजी,
सबहक भरल छल घर मे उठान ।
आखिर अवसर छल सामाजिक,
शुरू विवाहक पावन संस्कार ।
गोष्ठी जमल छल बहिनक सँग,
बीत गेल चारिक तीन प्रहर ।
प्रातः कालक मधु मनोरम,
वातावरण मे नदी नीर मे डूबल ।
माथ पर रहल मधुर स्पर्श शीतल,
आँखि खुजल देखैत छी ठाढ़ ।
ठाढ़ छथि हमर बउकी भौजी रन,
अपन एक हाथ मे जल भरल लोटा ।
दोसर हाथक शीतल जल माथ पर,
हमर केश सँग बिछान तकिया भिजबैत ।
आशीर्वादक निर्झरणी सदा बरसैत,
हम निमुग्ध भय हुनका रहलहुँ देखैत ।
याद आबि गेल अपन बाल्यावस्था,
अहिना त माय सदा दैत छल ।
सब साल शीतल आशीष,
रहैत छल सँग मायक हाथ हमर शीश ।

माय क याद कय आँखि नोरा गेल,
रौजी मं माय क दर्शन पाबि ।
हिया मं जागल श्रद्धा हमर हाथ,
मट हुनकर चरण पर पहुँचि गेल ।
मस्तक टा नहि आभा तक,
हमर रय गेल शीतल निर्मल ।
आधुनिकता क आगि हम,
पुनः रखलहुँ अपन मायक संस्कार ।
आब हमर हृद शीतल नहि रहत,
कहिया आधुनिकता रहल अपूर्ण ।
सदिखन होयत मायक मन सँस्कार,
शीतल सरल सौम्य सम्पूर्ण ।

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

४.३.किशन कारीगर- आ रे सुग्गा आ आ (बाल कविता)



**किशन कारीगर**

**आ रे सुग्गा आ आ (बाल कविता)**

आ रे कौआ आ आ
आ रे सुग्गा आ आ

आ रे मैना आ आ
आ रे बगुला तहूँ आबि जा

चिड़ै चुनमुन सब आ आ
दौगा गौरी बौआ संगे खेला जा

हे सुग्गा तूं बौआ क नाटी नै खेलिहेँ
हम जाला लै नाटी नखन छियौ.

हे मैना आइ तूं कागज नेने गेलही
हमर बौआ जाना जकेँ छलौ

आ न बगना जल्दी आबि जा
हमर बुद्धी कहानी स यानि नखन छौ

चिउ चुनमुन सब चूं चूं चीं चीं करै
हमरा बौआ क का नीक लगलै

आ सब मिल क खेलै जाइ जा
ई खेलाइन खेलाइन मगन नै करै जाहियैं

आ न सुग्गा आ आ
बौआ संग खेला जा

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

## ४.४.कल्पना झा- व्यग्रता



**कल्पना झा**

**व्यथा**

अनमन उहिना लगै छल
जना चूल्हि क आगी,
सवनल कश क वीच जना
आंखि क तिम्रा गन सं
किछु मान क खगता !
कहन व्यथा ?
न अपन न आन,
तयो जीवैत नहि मान क प्राण,
टिस टिस करैत नहि
ओ मान क कान,
ककरा कहु काय धनू
वहु ओछाहि अछि
ई समय क यात्र,
न वाट न वटाही रहल ,
गिल गिल क ओ मान क खगता
विलाईत भेल,
शब्द क नवल शृंगार सं
याँति याँति गमकैत छल,
झाहि जाहि सव सजल
तयो मान कटाह वान मं
छिछियैत भेल।

-कल्पना झा, बोकारो

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

# 𑓔.𑓗.𑒛𑒰 𑒮𑒳𑒧𑓀𑒑𑒪𑒰 𑒗𑒰- 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪



**𑒛𑒰 𑒮𑒳𑒧𑓀𑒑𑒪𑒰 𑒗𑒰**
**𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪**

𑒂𑒣𑒢 𑒂𑒿𑒑𑒢 𑒂𑒣𑒢 𑒥𑒰𑒩𑒲,
𑒁𑒣𑒢𑒯𑒱 𑒐𑒹𑒞 𑒏 𑒮𑒰𑒑-𑒐𑒹𑒮𑒰𑒩𑒲।
𑒖𑒲𑒩 𑒧 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒠! 𑒞𑒅𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒁𑒃𑒢,
𑒣𑒰𑒿𑒔𑒰𑓀-𑒮𑒱𑒞𑒰𑒢𑒰 𑒧𑓀, 𑒣𑒰𑒅𑒪 𑒢 𑒣𑒯𑒳𑒢𑒰।

𑒏𑒠𑒲𑒧𑒰-𑒤𑒴𑒪, 𑒞𑒱𑒪𑒏𑒼𑒩𑒏 𑒞𑒩𑒳𑒁𑒰,
𑒥𑒩𑒲-𑒦𑒰𑒞 𑒮𑓀𑒑! 𑒏𑒢𑒻𑒪𑒰 𑒏 𑒩𑒞𑒳𑒁𑒰।
𑒣𑒙𑒳𑒁𑒰-𑒮𑒰𑒑-𑒞𑒱𑒧𑓂𑒧𑒢, 𑒁𑒪𑓂𑒯𑒴 𑒏 𑒮𑒢𑓂𑒢𑒰,
𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒁𑒕𑒱 𑒐𑒲𑒩-𑒧𑒐𑒰𑒢𑒰।

𑒕𑒩𑒣𑒢, 𑒣𑒱𑒨𑒹 𑒕𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒮𑒳𑒢𑒰𑒯𑒲 𑒏 𑒢𑒲𑒩,

हनदमं नहेत छल,दुआरा यन रीत।
वल,पूदीना आडान नवा क शनवा,
कहियो न वूझलां,छाछ क मारल ।

आव जां वसल छौं,कंक्रीट क देश मं,
विसलनी वागल किनु, नहु निदेश मं।
हान स समय लिय, गखन कनू हंट,
विन कौन पहुँचव त वंद हटत गेट।

गय-भय, गीत-नाद, हान-साँस सगत,
वूझे मं न कहिया आतल की छल वखत।
वूढानी मं अलगे स दिन काटू असगन,
नहि नहि वूझि हाँसत, सौसं दह लतवत।

अंतकाल मन यतत, यूननका डा अंढना!
गेतिया-नना, वाती-साती, छनकौत कँढना।
प्रगति विशेष हल, ललना सव निदेश गेल,
मिथिला क धिय-पूत, दूनियाँ मं पसैन गेल।

काधनिचिना, गुटनमॉन, नि हाडा, हैला-हाय!
जायानी, अंग्रेजी, जर्मन-चीनी सीख जाय,
पूजा-या0,कर्मकाण्ड! संस्कृति छूटल गेल,
आन हाषा सीख-यढि, मैथिली विसनि गेल। ऊॅ सूमंगला मा।

(डा सुमंगला झा, PhD, वसन्त महिला कॉलेज बंगलूरू के सेवा निवृत्त हिंदी विभागाध्यक्ष छथि)

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

